RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 मार्च 2025
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 मार्च 2025
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62 अंक : 23
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 84
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

हु शि उ चौ श्री ज ग ना ना ©

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

धन्य होई धोरां री धरती

गुरु चरणरज मैं बनूँ,
गुरु रखें मुझ पद पाद।
अहो, अहो क्या क्षण हो वो,
मैं करूँ भक्ति आह्लाद॥

सुविचार

राम चमकते भानु समाना

भेड़ों के साथ रहने से सिंह शावक भेड़ नहीं हो जाता। वह स्वयं को भूल सकता है, पर कुदरत उसे कभी नहीं भूलती।

तूफान न आए, ऐसा मत सोचो, मन अधीर न बने, वैसा उपाय करो।

फिसलने के लिए थोड़ा-सा कीचड़ ही पर्याप्त है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

आगमवाणी

धम्मा-धम्मा न परप्पसाय-कोपाणुवत्तिओ जम्हा।

- विशेषावश्यक भाष्य (3254)

धर्म और अधर्म का आधार आत्मा की अपनी परिणति ही है।
दूसरों की प्रसन्नता और नाराजगी पर उसकी व्यवस्था नहीं है।

The basis of piety and impiety or morality and immorality is one's own disposition. The others' happiness or unhappiness has nothing to do with it.

अगिलाए धम्ममाइक्खेज्जा, कम्मनिज्जरट्ठाए धम्ममाइक्खेजा।

- सूत्रकृतांग (2/1/15)

साधक बिना किसी भौतिक इच्छा के प्रशांतभाव से एकमात्र कर्मनिर्जरा के लिए धर्म का उपदेश करे।

The spiritual aspirant must calmly preach the faith with the aim of achieving karmic separation from the soul without being carried away by physical desires.

उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
मायमज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे॥

- दशवैकालिक (8/38)

क्रोध को शांति से, मान को मृदुता-नम्रता से,
माया को ऋजुता-सरलता से और
लोभ को संतोष से जीतना चाहिए।

Control the anger with calmness, the pride with humility, the guile with straightforwardness and control the greed by contentment.

न विनयशून्ये गुणावस्थानम्।

- उत्तराध्ययन चूर्णि (1)

विनयहीन व्यक्ति में सद्गुण नहीं ठहरते।

The virtues do not stay with a person who is not humble.

विणयाहीया विज्जा, देंति फलं इह परे य लोगम्मि।
न फलंति विणयहीणा, सस्साणि व तोयहीणाइं॥

- बृहद्भाष्य (5203)

विनयपूर्वक पढ़ी गई विद्या लोक-परलोक में सर्वत्र फलवती होती है।
विनयहीन विद्या उसी प्रकार निष्फल होती है, जिस प्रकार जल के बिना धान्य की खेती।

The learning learnt with humility fructifies everywhere in this world and the next. That learnt without it goes waste just as the paddy-crop without water.

साभार- प्राकृत मुक्तावली

राम चमकते भानु समाना

अनुक्रमणिका

धर्मदेशना

08 नारी जीवन के उच्चतर आदर्श
- आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.

14 नारी भी मोक्ष की...
- आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.

18 भावधारा की निर्मलता...
- आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

संस्कार सौरभ

44 अद्भुत : अलौकिक...
- राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ

52 धर्ममूर्ति आनंद कुमारी
- संकलित

55 गुणों का गुलदस्ता...
- सुरेश बोरदिया

59 रामकृपा के रंग...
- डॉ. नवल सिंह जैन

61 गुरु दर्शन का अलौकिक क्षण
- ईशिता बंब

63 Empowering WOMEN...
- Aarti Navlakha

65 व्यसनमुक्ति संकल्पना...
- निष्ठा चौरड़िया

ज्ञान सार

23 आध्यात्मिक आरोग्यम्
- संकलित

27 श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला
- कंचन कांकरिया

29 श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र
- सरिता बैंगानी

भक्ति रस

33 सुयश कहानी महत्तम की
- प्रतिभा तिलकराज सहलोत

41 शिखर की गूँज
- राष्ट्रीय महामंत्री, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति

विविध

36 महत्तम शिखर के स्वर्णिम क्षण

46 संक्षिप्त भावोद्गार
- संकलित

66 गुरुचरण विहार समाचार
- महेश नाहटा

अपना-पराया तुम में समाया

चिंतन पराग

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

अनेक बार हमें अपने इर्द-गिर्द, पास-पड़ोस वालों से शिकायत होती है कि अमुक ऐसा क्यों करता है, वैसा क्यों करता है। अनेक बार उनके क्रियाकलाप परेशान करने वाले बन जाते हैं। प्रश्न होता है कि ऐसे समय में क्या करें? इनके समाधान के तीन प्रकार हैं - पहला, वे मशीन बन जाएँ, तब हम जैसा चाहेंगे चला पाएँगे। जैसे मोबाइल, कंप्यूटर आदि को चलाते हैं। दूसरा उपाय है- हम उनके अनुकूल बन जाएँ। ऐसा होने से हमारी परेशानी बिलकुल खत्म हो जाएगी। तीसरा प्रकार तटस्थता है, सह-अस्तित्व की भावना है। जैसे मुझे जीने के अधिकार प्राप्त हैं, मैं अपनी मस्ती में जीना चाहता हूँ, वैसे ही उन्हें भी जीने का अधिकार है। मुझे उनके जीने के तरीके में बाधक नहीं बनना चाहिए। यदि वे गलत तरीके से जी रहे हों, ऐसा हमें लगे तो हम उन्हें सचेत कर सकते हैं। इसके बावजूद यदि वे उसी डगर पर आगे बढ़ना चाहें तो हमें बेचैन नहीं होना चाहिए। हमने हमारे कर्तव्य का निर्वाह किया। यदि हमारे पास अन्य उपाय हों तो हम कर्तव्य भावना से उनका उपयोग कर सकते हैं। यदि कोई उपाय न हो तो दुःखी होने के बजाय तटस्थ हो जाना चाहिए। सारी पृथ्वी पर काँटे बिखरे हों तो भला यही है कि हम अपने पैरों में जूते-चप्पल पहन लें। इससे बेहतर दूसरा कोई उपाय नहीं हो सकता। यदि कोई कहे ऐसा संभव नहीं है तो मैं जोर देकर कहूँगा कि यदि कोई सक्षम-समर्थ उपाय है तो यही है। इससे बढ़कर अन्य उपाय कठिन किंवा असंभव है। यदि इस उपाय को हम स्वीकार करने को तत्पर न हों तो हमें काँटों के चुभने से होने वाली पीड़ा के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

जब अपने ही लगने लगे, पराए तुम मत बनना पराया। तुम अपनों को ही नहीं परायों को भी बनाना अपना। पर ध्यान एक रखना, यहाँ कोई न अपना-पराया। अपना-पराया सारा, तुम में है समाया। तुम रहोगे वे रहेंगे। तुम स्वयं को मिटा दोगे, सब मिट जाएँगे।

कार्तिक शुक्ल 2, शुक्रवार, 13-11-2015

साभार- ब्रह्माक्षर

The Distinction Between One's Own And Others' is Immanent in Yourself

Chintan Parag

- Param Pujya Acharya Pravar 1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.

Often times, we nurture grievance against those around us, those in our neighbourhood. Why does so and so behave in this or that manner? Many a time their actions turn out to be bothersome to us. The question arises, what should we do at such a time? There are three ways to resolve this. First, they could turn into a machine so that we might manipulate them, much in the manner we operate mobile, computer etc. The second option is for us to adapt to their ways. This will end our botheration once and for all. The third way is equanimity, the spirit of co-existence.

Just as I have the right to life, and wish to live in my own exciting way, they too have the right to live. It is not my part to put spokes in the wheel of their living. If we feel they are amiss in their living, we may caution them. Despite our urgings, if they would still tread the same path, we need not lose sleep over it. We have done our duty. If we have any other alternative, we may try it out in a spirit of duty. If there is none, we may take a neutral stance rather than feel miserable. If the earth is strewn all over with thorns, it is better that we put on foot wear. There cannot be a better option. If someone says it is not possible, I would emphasize that, if at all there is a strong suitable expedient, it is this. Any expedient that would be more efficacious is difficult, rather impossible. Should we not be disposed to adopt this option, we must be prepared for the pain of thorn-prick.

If your own kith seem to be turning strangers, you should not follow suit. You should not treat kins but strangers too as your own. But remember, there is none who is your own and none who is a stranger. The distinction between one's own and others inheres within. If you exist, they too would. If you obliterate yourself, all would cease to be.

Friday, 13-11-2015

Courtesy- Brahmakshar

समस्या में ही समाधान

सुनहरी कलम से....

जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है जब हमारा चित्त शून्य हो जाता है। उस स्थिति में ऐसा महसूस होता है कि समाधान जैसे तिमिर में कहीं ओझल हो चुका हो, समझ को जंग लग गई हो और धैर्य तो मानो उस परिस्थिति का अंश ही न हो। यथासंभव ऐसी विपरीत परिस्थितियाँ समय-समय पर अलग-अलग रूप में सभी के समक्ष उपस्थित होती रहती हैं। यदि इस तथ्य को दर्शनशास्त्र के हिसाब से कहें तो '**जीवन की गाड़ी है, एक गति से तो नहीं चलेगी**'। वहीं दूसरी ओर धर्म के अनुसार सोचें तो प्रत्येक परिस्थिति चाहे वह अच्छी हो या बुरी हमारे कर्मों का ही फल है। प्रत्येक समस्या जब हमारे समक्ष आती है तब परिस्थिति की धुरी इस बात पर आकर रुक जाती है, जैसे हमारी चित्त दशा शून्य हो और हम किसी दलदल में जा फँसे हों।

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. अपनी देशना में प्रायः एक प्रसंग सुनाया करते हैं - एक बार एक हाथी दलदल में फँस जाता है। गाँव वाले पुरजोर कोशिश करने के पश्चात् भी उसे बाहर नहीं निकाल पाते। सभी चिंतित हो उठते हैं। यह बात वहाँ के राजा तक पहुँची तो उसने सेनापति को आदेश दिया कि हाथी के समक्ष युद्ध की भेरी बजाई जाए। देखते-ही देखते हाथी बिना किसी सहारे स्वयं ही दलदल से बाहर आ गया। सभी आश्चर्यचकित हो उठे। बाद में सेनापति ने सभी के आश्चर्य का समाधान करते हुए बताया कि वह युद्ध में लड़ने वाला हाथी था। युद्ध की भेरी सुनते ही उसके भीतर का योद्धा जाग गया और उसी योद्धा के मनोबल ने उस हाथी को बाहर निकाला।

हम सभी के जीवन में भी हर परिस्थिति में एक भेरी अथवा गूँज अवश्य रहती है। वह है महापुरुषों के वचनों की भेरी। महापुरुषों के वचनों में प्रत्येक परिस्थिति से निकलने का समाधान निहित है। बशर्ते हम उसे सुनें, समझें और अपने भीतर के योद्धा को जगाकर भौतिक संसार के समस्या रूपी दलदल से बाहर निकलें।

महापुरुषों के मुखारविंद से निकला एक-एक शब्द शिक्षा स्वरूप है, जो न हमें कहीं अटकने देता है और न ही भटकने देता है। वर्तमान में यदि कोई इस भौतिकता के दलदल में फँसे हमारे चित्त को सहारा देकर बाहर निकाल सकता है तो वह सिर्फ और सिर्फ महापुरुषों के वचन हैं। महापुरुष निरंतर कृपावर्षण कर रहे हैं। बस आवश्यकता है तो उस हाथी के समान भीतर के योद्धा को जगाने की।

जीवन में कैसी भी परिस्थिति आए, बस शांत मन से अपने आराध्य का ध्यान करें, उनके शुभ वचनों का स्मरण करें और समाधान की गूँज को महसूस करें। इन्हीं शुभभावनाओं के साथ...

- सह-संपादिका

नारी जीवन के उच्चतर आदर्श

धर्मदेशना

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

गांधारी का गंभीर त्याग

शास्त्रों में पत्नी को **'धर्मसहायिका'** कहा है। अगर वह काम-सहायिका ही होती तो उसे धर्मसहायिका कहने की क्या आवश्यकता थी? जैसे दवा रोग मिटाने के लिए ली जाती है, उसी प्रकार विवाह धर्म की सहायता करने और कामवासना को संयत करने के लिए किया जाता है। इसके विपरीत, जो पत्नी को काम-क्रीड़ा की सामग्री समझता है, उसकी गति विचित्रवीर्य के समान होती है। अतिभोग के कारण विचित्रवीर्य की मृत्यु हो गई और राज्य का भार भीष्म के कंधों पर आ पड़ा।

विचित्रवीर्य के पुत्र पांडु का विवाह कुंती के साथ हुआ। धृतराष्ट्र अंधे थे। वे जब युवावस्था में आए तो भीष्म ने जान लिया कि ब्रह्मचर्य पालने में समर्थ नहीं है। यह सोचकर उन्होंने धृतराष्ट्र का विवाह कर देने का विचार किया। उन्हें मालूम था कि गांधार देश के महाराजा सबल की कन्या गांधारी सभी तरह से योग्य है। भीष्म ने सबल के पास दूत भेजकर कहलाया— ''भीष्म ने धृतराष्ट्र के लिए आपकी कन्या गांधारी की मंगनी की है।''

महाराज पशोपेश में पड़ गए। वे सोचने लगे कि क्या करना चाहिए? क्या अंधे को अपनी कन्या दे दूँ? यह नहीं हो सकता। भीष्म कितने ही महान पुरुष हों, मैं अपनी कन्या नहीं दे सकता। साधारण आदमी भी अंधे वर को कन्या नहीं देता तो मैं राजा होकर कैसे दे सकता हूँ?

सबल ने अपने लड़के शकुनि से पूछा— ''थोड़े दिनों बाद राज्य का सारा भार तुम्हारे सिर आने वाला है। इसलिए तुम बतलाओ कि इस विषय में क्या करना उचित है?''

शकुनि ने कहा— ''अपने बलाबल का विचार करते हुए गांधारी का विवाह धृतराष्ट्र के साथ कर देना ही उचित है। अपने देश पर विदेशियों और विधर्मियों के आक्रमण होते रहते हैं। यह संबंध होने से कुरुवंश अपना सहायक बनेगा और कुरुवंश की धाक से बिना युद्ध ही देश की रक्षा हो जाएगी। यह तो कन्या ही देनी पड़ रही है, अवसर आने पर तो देश की रक्षा के लिए पुत्र का भी रक्त देना पड़ता है।''

सबल-संग्राम में पुत्र का रक्त देना दूसरी बात है और कन्या के अधिकार को लूटकर देश की रक्षा चाहना दूसरी बात है। राज्य रक्षा के लोभ में पड़कर कन्या का

अधिकार छीन लेना क्या क्षत्रियों के लिए उचित कहा जा सकता है? स्वेच्छा से शत्रु के साथ युद्ध करके अपना रक्त बहा दे तो हर्ज नहीं है, परंतु कन्या के अधिकार का बलात् अपहरण करके उस पर अन्याय करना उचित नहीं है। गांधारी की इच्छा के बिना उसका विवाह नहीं करूँगा। ऐसा करने पर चाहे राज्य चला ही क्यों न जाए। हाँ, गांधारी स्वेच्छा से अगर अंधे पति की सेवा करना चाहे तो बात दूसरी है। मैं उसे रोकूँगा भी नहीं। लेकिन उसकी इच्छा के विरुद्ध अंधे के साथ उसका विवाह नहीं कर सकता।

सभा में उपस्थित सभी लोगों ने राजा के विचार का समर्थन करते हुए कहा—''आप राजा होकर भी अगर कन्या के अधिकार को लूट लेंगे तो दूसरे लोग आपके चरित्र का न जाने किस प्रकार दुरूपयोग करेंगे।''

गांधारी राजकुमारी थी, युवती थी, सुंदरी थी और गुणवती थी। पांडवचरित के अनुसार वह ऐसी सती थी कि किसी के शरीर को देखकर ही वज्रमय बना सकती थी। ऐसी गांधारी की मंगनी अंधे पुरुष के लिए आई है। इस समय गांधारी का क्या कर्तव्य है? अगर पिता सगाई कर देते तो गांधारी के सामने विचारने के लिए कोई समस्या ही न रहती, मगर पिता ने इस संबंध को स्वीकार करने या न करने का उत्तरदायित्व स्वयं उसी पर छोड़ दिया था। अब गांधारी को ही अपने भविष्य का निर्णय करना था।

राजसभा में पूर्वोक्त निर्णय हो गया तो वहाँ रहने वाली दासी गांधारी के पास दौड़ी आई। उस समय गांधारी अपनी सखियों के साथ महल में एक कमरे में बैठी हास्य-विनोद कर रही थी।

दासी दौड़ती हुई वहाँ आ पहुँची। उसे उदास और घबराई हुई देखकर गांधारी ने कारण पूछा—''क्यों आज क्या समाचार है? उदास क्यों हो?''

दासी—''गजब हुआ राजकुमारी जी।''

गांधारी—''क्या गजब हुआ? पिता और भाई तो सकुशल हैं?''

दासी—''और सबके लिए तो कुशल-मंगल है, आप ही के लिए अनर्थ हुआ है।''

गांधारी ने मुस्कराकर कहा—''देख, मैं तो आनंद में बैठी हूँ। मेरे लिए अनर्थ हुआ फिर भी मैं मजे में हूँ और तू घबरा रही है!''

दासी—''एक ऐसी बात सुनकर आई हूँ कि आपके हितैषी को दु:ख हुए बिना नहीं रह सकता। आप सुनेंगी तो आपको भी दु:ख होगा।''

गांधारी—''मुझे विश्वास नहीं होता कि मैं अपने संबंध में कोई बात सुनकर तेरी तरह घबरा उठूँगी। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि घबराहट किसी भी मुसीबत की दवा नहीं है। वह स्वयं एक मुसीबत है और मुसीबत बढ़ाने वाली है। खैर, बतला तो सही कि बात क्या है?''

दासी—''कुरुवंशी राजा शांतनु के पौत्र और विचित्रवीर्य के अंधे पुत्र धृतराष्ट्र के लिए तुम्हारी याचना करने के लिए भीष्म ने दूत भेजा है। इस विषय में राजसभा में गरमागरम बातचीत हुई है।''

गांधारी—''यह तो साधारण बात है। जिसके यहाँ जो चीज होती है, उसी के माँगने वाले आते ही हैं। अच्छा, आगे क्या हुआ सो बतला।''

दासी—''महाराज ने कहा कि मैं अंधे के साथ गांधारी का विवाह नहीं करूँगा। राजकुमार ने कहा कि अपना बल बढ़ाने के लिए धृतराष्ट्र के साथ गांधारी का विवाह कर देना चाहिए।''

गांधारी—''फिर? विवाह निश्चित हो गया?''

दासी—''नहीं, अभी कोई निश्चय नहीं हुआ है। इसी से मैं आपको सूचना देने आई हूँ। राजकुमारी! चेत जाओ। आपकी रक्षा आपके हाथ में है। महाराज ने आपकी इच्छा पर ही निर्णय छोड़ दिया है। पुरोहित आपकी सम्मति जानने आएँगे। अगर आप जन्मभर के दुखों से बचना चाहें तो किसी के कहने में मत आना। दिल की बात साफ-साफ कह देना। संकोच में पड़ी तो

मुसीबत में पड़ी।''

इसी बीच मदनरेखा नामक सखी ने कहा—''बड़ी सयानी बन रही है तू, जो राजकुमारी को यह उपदेश दे रही है! क्या यह इतना भी नहीं समझती कि अंधा पति जिंदगीभर की मुसीबत है। जब राजकुमारी को स्वयं निर्णय करना है तो फिर घबराहट की बात क्या रही? जो जो बात अबोध कन्या भी समझती है, वह क्या राजकुमारी नहीं समझेंगी?''

चित्रलेखा नामक सखी गौर से राजकुमारी के चेहरे की ओर देख रही थी। चेहरे पर कुछ भी मनोभाव न पाकर वह बोली—''सखी, आप किस विचार में हैं? यह तो नहीं सोच रही हो कि पति अंधा हो तो भले रहे, कुरूवंश की राजरानी बनने का गौरव तो मिलेगा। इस लोभ में मत पड़ जाना। राजरानी बनना तो आपका जन्मसिद्ध अधिकार है ही। जहाँ जाओगी राजरानी ही बनोगी। लेकिन धृतराष्ट्र जन्मांध है, तुम लोभांध हो जाओगी तो जोड़ी अच्छी बनेगी। फिर भी बहन, जान-बूझकर कोई अंधा नहीं बन सकता। पहली बार ही ऐसा दो टूक जवाब देना कि पुरोहित जी पुरोहिताई करना भूल जाएं और उलटे पैरों भाग खड़े हों।''

अपनी सखियों की सम्मति सुनकर और यह समझकर कि इनकी बुद्धि एवं विचारशक्ति इतनी ही उथली है, गांधारी थोड़ा मुस्कुराई। उसने कहा—''सखियो! तुम मेरी भलाई सोचकर ही सम्मति दे रही हो, इसमें कोई संदेह नहीं। पर क्या तुम्हें मालूम है कि मेरा जन्म किस उद्देश्य के लिए हुआ है?''

एक सखी ने उत्तर दिया—''बचपन से साथ रहती है तो जानती क्यों नहीं? आपका जन्म इसलिए हुआ है कि आप किसी सुंदर और शूरवीर राजा की अर्धांगिनी बनें, राजकुमार पुत्र को जन्म दें, राजकीय सुख भोगें और राजमाता का गौरव पाएँ।''

गांधारी—''सखी, यह सब तो जीवन में साधारणतया होता ही है, पर जीवन का उद्देश्य यह नहीं। तुम इतना ही समझती हो, इससे आगे ही नहीं सोचती। मैं सोचती हूँ कि मेरा जन्म जगत् का कोई कल्याणकारी कार्य करने के लिए हुआ है। यह जीवन बिजली की चमक के समान क्षणभंगुर है। कौन जानता है कि कब है और कब नहीं? अतएव इसके सहारे कोई विशिष्ट कार्य कर लेना चाहिए, जिससे दूसरों का कल्याण हो।''

सखी—''तो क्या आप अभी से वैरागिन बनेंगी? संयम ग्रहण करेंगी?''

गांधारी—''संयम और वैराग्य का उपहास मत करो। जिसमें संयम-धारण करने का सामर्थ्य हो और जो संयम ग्रहण कर ले, वह तो सदा वंदनीय है। अभी मुझमें इतनी शक्ति नहीं है। मेरी अंतरात्मा अभी संयम लेने की साक्षी नहीं देती। अभी मुझ में पूर्ण ब्रह्मचर्य पालने की क्षमता नहीं जान पड़ती।''

चित्रलेखा—''जब ब्रह्मचर्य नहीं पालना और विवाह करना ही है तो क्या सूझता पति नहीं मिलेगा? अन्धे पति को वरण करने की क्या आवश्यकता है?''

गांधारी—''मेरा विवाह भोग के लिए ही नहीं, धर्म के लिए होगा। मैं पतिसेवा के मार्ग से परमात्मा के समीप पहुँचना चाहती हूँ।''

मदनरेखा—''पतिव्रत धर्म का पालन करना तो उचित ही है। आप दुराचार नहीं करेंगी, यह भी हमें मालूम है। पर अंधे को पति बनाने से क्या लाभ है? क्या आपका यह सौंदर्य और शृंगार निरर्थक नहीं हो जाएगा?''

गांधारी—''सखी, तुम वास्तविक बात तक नहीं पहुँचती। शृंगार पतिरंजन के लिए होता है, लेकिन मेरी मांग अन्धे पति के लिए आई है। अतएव मेरा शृंगार पति के लिए नहीं, परमेश्वर के लिए होगा। शृंगार का अर्थ शरीर को सजाना ही नहीं है। बाह्य-शृंगार पतिरंजन के लिए किया जाता है, लेकिन मुझे ऐसा शृंगार करने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। असली की कमी होने पर नकली चीज का आश्रय लिया जाता है। सेवा में कमी होने पर शृंगार का सहारा लिया जाता है। लेकिन मेरा

शृंगार पतिसेवा ही होगा। ऐसा करके ही मैं आत्मसंतोष पाऊंगी और पत्नी का कर्तव्य स्त्रियों को समझाऊँगी। अतएव पति अंधा है या दृष्टि वाला, इस बात की मुझे कोई चिंता नहीं। पुरोहित जी के आने पर मैं विवाह की स्वीकृति दे दूँगी। जगत को स्त्री का वास्तविक कर्तव्य बतलाने का सुअवसर मुझे प्राप्त होगा।''

गांधारी का विचार जानकर उसकी सखियाँ चक्कर में पड़ गईं। वे आपस में कहने लगीं—''राजकुमारी को क्या सूझा है। वह अंधे के साथ विवाह करने को तैयार हो रही है, यह बड़ा अनर्थ होगा।''

इसी समय राजपुरोहित आ पहुँचे। गांधारी ने पुरोहित का यथायोग्य सत्कार किया। गांधारी की शिष्टता और विनम्रता देख पुरोहित गहरे विचार में पड़ गया। सोचने लगा—''यह सुकोमल फूल क्या अंधे देवता पर चढ़ने के योग्य है? कैसे इसके सामने प्रस्ताव किया जाए!'' फिर भी हृदय कठिन करके **पुरोहित** ने कहा— ''राजकुमारी! आज एक विशेष कार्य से आया हूँ। तुम्हारी सम्मति लेना आवश्यक है।''

गांधारी—''कहिए न, संकोच क्यों कर रहे हैं?''

पुरोहित जी—''अंधे धृतराष्ट्र के लिए आपकी सगाई आई है। इस संबंध में अन्तिम निर्णय का भार आप पर छोड़ दिया गया है। महाराज ने आपकी सम्मति लेने हेतु मुझे भेजा है।''

पुरोहित जी की बात सुनकर गांधारी हल्की-सी मुस्कुराने लगी, पर बोली नहीं। **चित्रलेखा** ने कहा— ''पुरोहित जी! राजसभा की सब बातें राजकुमारी सुन चुकी हैं। इन्होंने अंधे धृतराष्ट्र को पति बनाना स्वीकार कर लिया है। आप वृद्ध हैं, इसलिए कहना नहीं चाहती।''

पुरोहित को आश्चर्य हुआ। उसने कहा— ''आर्य जाति में विवाह जीवनभर का सौदा माना जाता है। जीवनभर का सुख-दु:ख विवाह के पतले सूत्र पर ही अवलंबित है। विवाह शारीरिक ही नहीं वरन् मानसिक संबंध भी है और मानसिक संबंध की यथार्थता तथा घनिष्ठता में ही विवाह की पवित्रता और उज्ज्वलता है। इस तथ्य पर ध्यान रखते हुए इस विषय में राजकुमारी को मैं पुन: विचार करने के लिए कहता हूँ। तुम भी उन्हें सम्मति दे सकती हो।''

गांधारी भली-भाँति जानती थी कि अंधे के साथ मुझे जीवनभर का संबंध जोड़ना है। उसे अंधे के साथ विवाह करने से इनकार कर देने की स्वाधीनता थी। सखियों ने उसे समझाने का प्रयत्न भी किया। गांधारी युवती थी और सांसारिक आमोद-प्रमोद की भावनाएँ इस उम्र में सहज ही लहराती हैं। लेकिन गांधारी मानो जन्म की योगिनी थी। भोगोपभोग की आकांक्षा उसके मन में उदित ही नहीं हुई। उसने सोचा—''दुष्टों द्वारा पिता सदा सताए जाते हैं और इस कारण पिताजी की शक्ति क्षीण हो रही है। यदि मैं उनके लिए औषध रूप बन सकूँ तो क्या हर्ज है? मुझे इससे अधिक और क्या चाहिए? यद्यपि इस संबंध के कारण पिताजी को लाभ है, फिर भी उन्होंने इसके निर्णय का भार मेरे ऊपर रखा है, यह पिताजी की कृपा है।''

गांधारी को उदारता की यह शिक्षा कहाँ मिली थी? किसने उसे आत्मोत्सर्ग का यह सुनहरा पाठ सिखाया था। अपने पिता और भ्राता की भलाई के लिए यौवन की उन्मादभरी तरंगों के बीच चट्टान की भाँति स्थिर रहने की, अपने स्वर्णिम सपनों के हरे-भरे उद्यान को अपने हाथों उखाड़ फेंकने की, अपनी कोमल कल्पनाओं का बाजार लुटा देने की और सर्वसाधारण के माने हुए सांसारिक सुखों को शून्य में परिणत कर देने की सुशिक्षा कौन जाने गांधारी ने कहाँ पाई थी! आज का महिला समाज इस त्याग के महत्व को समझ नहीं सकता। जहाँ व्यक्तिगत और वर्गगत स्वार्थों के लिए संघर्ष छिड़े रहते हैं, उस दुनिया को क्या पता है कि गांधारी के त्याग का मूल्य क्या है? आजकल की लड़कियाँ भले ही बड़े-बड़े पोथे पढ़ सकती हों, पर पोथे पढ़ लेना ही क्या सुशिक्षा है? जो शिक्षा सुसंस्कार नहीं उत्पन्न करती, उसे सुशिक्षा

नहीं कह सकते। आज की शिक्षा प्रणाली में मस्तिष्क के विकास की ओर ध्यान दिया जाता है, हृदय को विकसित करने की ओर कोई लक्ष्य नहीं दिया जाता। यह एक ऐसी त्रुटि है, जिसके कारण जगत स्वार्थ-लोलुपता का अखाड़ा बन गया है।

गांधारी ने अपनी सखियों से कहा था—''मैं भोग के लिए नहीं जन्मी हूँ। मेरे जीवन का उद्देश्य सेवा करना है। अन्धा पति पाने से मेरे सेवाधर्म की अधिक वृद्धि होगी। अतएव इस संबंध को स्वीकार कर लेने से सभी तरह लाभ ही लाभ है। पिताजी को लाभ है, भाई का संकट कम होता है, मुझे सेवा का अवसर मिलेगा और आखिर वे धृतराष्ट्र भी राजपुत्र हैं। उनका भी तो खयाल किया जाना चाहिए। कौन जाने मुझे सेवा का अवसर मिलना हो और इसीलिए वे अंधे हुए हों।''

मनुष्य बीमार होता है अपनी करनी से, लेकिन सेवाभावी डॉक्टर तो यही कहेगा कि मुझे अपनी विद्या प्रकट करने का अवसर मिला है। इसी तरह गांधारी कहती है—''हो सकता है कि मुझे सेवा का अवसर देने के लिए ही राजकुमार अंधे हुए हों।''

पुरोहित ने कहा—''राजकुमारी! अभी समय है। इस समय के निर्णय का प्रभाव जीवनव्यापी होगा। आप सोलह शृंगार सीखी हैं, परंतु अंधे पति के साथ विवाह हो जाने पर आप सोलह शृंगार किसे बतलाओगी? आपके शृंगार एवं सौंदर्य का अंधे पति के आगे कोई मूल्य न होगा। इसलिए कहता हूँ कि नि:संकोच भाव से, सोच-समझकर निर्णय करो।''

गांधारी फिर भी मौन थी। उसे मौन देखकर उसकी **सखियों** ने कहा—''यह सब बातें इन्होंने सोच ली हैं। राजकुमारी ने हमें सिखलाया है कि स्त्रियाँ स्वभावत: शृंगारप्रिय होती हैं, लेकिन जो स्त्री ऊपरी शृंगार ही करती है और भीतरी शृंगार नहीं करती, उसके और वेश्या के शृंगार में क्या अंतर है? यह बात नहीं है कि कुलांगनाएँ ऊपरी शृंगार करती ही नहीं, लेकिन उनके ऊपरी शृंगार का संबंध भीतरी शृंगार के साथ होता है। कदाचित् उनका ऊपरी शृंगार छिन भी जाए तो भी वे अपना भाव-शृंगार कभी नहीं छिनने देतीं। राजकुमारी कहती है कि मैं अंधे पति की सेवा करके यह बतला दूँगी कि पति और परमात्मा की उपासना कैसे होती है?''

गांधारी की उच्च भावनाओं से भरे विचार सुनकर पुरोहित दंग रह गया। उसने गांधारी की सखियों से कहा—''राजकुमारी कैसे भी उच्च विचारों में गई हों परन्तु तुम्हारी बुद्धि कहाँ गई है? तुम तो छोटी हो, आखिर तो दासी ठहरी न!''

दासियाँ कहने लगीं—''पुरोहित जी! आप ओछी और दासी भले ही कहिए, पर हम दासी हैं भी तो ऐसे उत्तम विचार वाली राजकुमारी की दासी हैं। राजकुमारी सरस्वती का अवतार हैं तो हम इनकी पुजारिनें हैं। हम तो इन्हीं की मति मानेंगे! जो शृंगार इनका है, वही हमारा भी है। जब यह अंधे पति को स्वेच्छा से स्वीकार कर रही हैं तो हम क्या कहें? हम तो इनकी सेविकाएँ हैं।''

महाभारत में कहा है कि अंधा पति मिलने से गांधारी ने अपनी आँखों पर पट्टी बाँध ली थी। लेकिन यह कल्पना ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा करने से उनके सेवाकार्य में कमी आ जाती है। हाँ, विषय-वासना से बचने के लिए अगर कोई आँखों पर पट्टी बाँधे तो उसे बुरा भी नहीं कहा जा सकता। लेकिन गांधारी जैसी सती के विषय में यह कल्पना घटित नहीं होगी। अगर आँखों पर पट्टी बाँधने का अर्थ यह हो कि वह जगत् के सौंदर्य से विमुख हो गई थी, सौंदर्य के आकर्षण को उसने जीत लिया था तो पट्टी बाँधने की कल्पना मानी जा सकती है।

अन्त में **पुरोहित** ने कहा—''तो राजकुमारी का यही अभिमत है, जो उनकी सखियाँ कह रही हैं?''

गांधारी—''पुरोहित जी! सखियाँ अन्यथा क्यों कहेंगी? आप पिताजी को सूचना दे सकते हैं।''

पहले-पहल गांधारी के सामने समस्या उपस्थित

हुई कि अंधे के साथ विवाह करना उचित है या नहीं? मगर गांधारी शीघ्र ही निर्णय पर पहुँच गई। कैसा भी कठिन प्रसंग क्यों न हो, धर्म का स्मरण करने से कठिनाई दूर हो जाएगी। धर्म और पाप की संक्षिप्त व्याख्या यही है कि स्वार्थ-त्याग धर्म है और स्वार्थ-साधन की लालसा पाप है।

गांधारी ने स्वार्थ त्याग दिया। गांधारी जैसी सती का चरित्र भारत में ही मिल सकता है, दूसरे देश में मिलना कठिन है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि अमेरिका जैसे सभ्य गिने जाने वाले देश में 15 प्रतिशत विवाह-सम्बन्ध टूट जाते हैं या तलाक हो जाता है। भारतवर्ष में पतन की अवस्था में भी यह बात नहीं है।

गांधारी में अपनी मातृभूमि के प्रति भी आदर्श प्रेम था। अन्धे पति का वरण करने में उसका उद्देश्य यह भी था कि इससे मेरी मातृभूमि का कष्ट मिट जाएगा। मातृभूमि की भलाई के लिए उसने इतना त्याग करना अपना कर्तव्य समझा। उसने सोचा कि अन्धे धृतराष्ट्र के साथ विवाह कर लेने से बल बढ़ेगा और मेरी मातृभूमि की रक्षा भी होगी तो ऐसा करने में क्या हर्ज है?

सांसारिक दृष्टि से देखा जाए तो अन्धे के साथ विवाह करने में कितना कष्ट है? अन्धा पति होने से शृंगार व्यर्थ होता है और शृंगार की भावना पर विजय प्राप्त करनी पड़ती है। मगर गांधारी ने प्रसन्नतापूर्वक यह सब स्वीकार कर लिया।

अन्त में धृतराष्ट्र के साथ गांधारी का विवाह हो गया। गांधारी धृतराष्ट्र की पत्नी बनकर हस्तिनापुर आई।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-19 (नारी-जीवन)

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

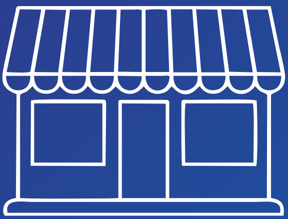

जरूरी सूचना

साहित्य विभाग द्वारा Inventory Counting के चलते **20 मार्च, 2025 से 27 मार्च, 2025 तक** Dispatch का कार्य बंद रहेगा। इस कारण होने वाली असुविधा के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए आपसे सहयोग की अपेक्षा है।

यदि अभी आपको साहित्य की आवश्यकता है तो 18 मार्च, 2025 तक ऑर्डर बुक करवा लेवें।

साधुमार्गी पब्लिकेशन

(अंतर्गत- श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

धर्मदेशना

नारी भी मोक्ष की अधिकारिणी होती है

* मानवता के आधे भाग को जिन्होंने ठुकराने का दुस्साहस किया, हकीकत में उन्होंने सारी मानव-जाति के भाग्य को ही ठुकराने की चेष्टा की। क्योंकि उन्होंने मानव जीवन की जननी के सम्मानपूर्ण स्थान का अनादर किया। यह एक ऐसा कुकर्म था, जिसने मानव-जाति में एक बहुत बड़ी भेद की दीवार खड़ी कर दी।
* मोक्ष प्राप्ति की उत्कृष्ट साधना जैसे पुरुष कर सकता है, वैसी ही साधना स्त्री की पोशाक में रहने वाली आत्मा भी कर सकती है। मोक्ष प्राप्ति के उच्च लक्ष्य की प्राप्ति में भी योग्यता, क्षमता एवं अधिकार की दृष्टि से पुरुष और नारी में कोई भेद नहीं है। यह सिद्धांत तीर्थंकरों ने अभिव्यक्त किया है।
* गुण, धर्म-करणी तथा मोक्ष प्राप्ति में जैन धर्म नारी-पुरुष की समानता का प्रबल समर्थक है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

मल्लि जिन बाल ब्रह्मचारी रे...
कुंभ पिता परभावती मैया, तिन की कुंवरी।
माँ नी कूंख कंदरा मांही, अपना अवतारी।
मालती कुसुम माल नी वांछा, जननी उर धारी।।
मल्लि जिन बाल ब्रह्मचारी रे...

प्रभु की प्रार्थना के प्रसंग से भगवान मल्लिनाथ को हम वंदन कर रहे हैं। इस भारत-भू पर मल्लिकुमारी ने तीर्थंकर पद तक आत्मोन्नति करके नारी जाति का एक विशिष्ट आदर्श उपस्थित किया। जिन लोगों का यह विश्वास है कि योग्यताओं और क्षमताओं में पुरुष की तुलना में नारी उतनी उन्नति नहीं कर सकती, मल्लिनाथ भगवान ने उस झूठे विश्वास को खंडित कर दिया।

तीर्थंकर मल्लिनाथ का स्वयं का आदर्श जीवन इस सत्य का पुष्ट प्रमाण है कि पुरुष के समान नारी भी मोक्ष की अधिकारिणी होती है।

मानव-जाति में भेद तथा विभिन्न धर्मों की मान्यता

मानव-जाति के बीच में विभिन्न मत और भेद, विभिन्न धर्मों की मान्यताएँ तथा परंपराएँ भी यत्र-तत्र-सर्वत्र दृष्टिगत हो गईं, लेकिन परीक्षा बुद्धि की यह जानने की समस्या है कि कौनसा धर्म वास्तविक सत्य को स्पर्श करने वाला है तथा कौनसा धर्म आडंबर लिए बैठा है? किस धर्म में अलग-अलग प्राणियों का क्या-क्या स्थान है और कौनसा धर्म मानव-जाति में भेदभाव की दीवारें खड़ी करता है? इन विषयों पर सहज भाव से चिंतन किया जाएगा एवं परीक्षा बुद्धि से काम लिया जाएगा तो सहज ही ज्ञात होगा कि जिन अपूर्ण व्यक्तियों ने राग-द्वेष की कुटिल वृत्तियों के साथ कोई मत या पंथ

चलाया तो उसने मानव-जाति को टुकड़ों में बाँटने की ही चेष्टा की। इसके विपरीत संपूर्ण मानव-जाति की समता और समानता के रूप में अद्भुत वैज्ञानिकता जैन धर्म ने इस विश्व में अपूर्व रूप से प्रस्तुत की है।

यहाँ अभी जिस भेद के बारे में मुख्य रूप से विचार किया जा रहा है, वह भेद है नारी और पुरुष का। कई धार्मिक मान्यताओं ने भी यह बताया है कि धर्म का आचरण पुरुष ही कर सकते हैं, बहनें नहीं। यहाँ तक कि मोक्ष के अधिकारी भी पुरुष ही हैं, बहनें नहीं। ऐसी मान्यताएँ प्रकट की गई है, जिनसे बहनों के प्रति घोर तिरस्कार के भाव झलकते हैं।

ऐसी मान्यताओं का बुरा असर यह हुआ कि समाज में भी नारी की उपेक्षा होने लगी। मानवता के आधे भाग को जिन्होंने ठुकराने का दुस्साहस किया, हकीकत में उन्होंने सारी मानव-जाति के भाग्य को ही ठुकराने की चेष्टा की। क्योंकि उन्होंने मानव-जीवन की जननी के सम्मानपूर्ण स्थान का ही अनादर किया।

वीतराग देवों ने नारी व पुरुष की योग्यता में कोई भेद नहीं माना

धर्म के नाम पर भी नारी-जाति को तिरस्कृत किया गया, उस धर्म के प्रवर्तकों में क्या यह नहीं मानना चाहिए कि राग-द्वेष एवं भेदभाव का कालुष्य भरा हुआ था? उसका धर्म नाम ही कहाँ सार्थक होता है जहाँ समता का ही अभाव हो? धर्म नाम के क्षेत्र में भी अगर विषमता की ज्वालाएँ सुलग रही हों, मानवता के आधे अंग के प्रति घृणा के भाव जग रहे हों तो उस धर्म से क्या मानव जीवन को सुख और शांति मिल सकेगी?

जिन्होंने राग और द्वेष को जीत लिया तथा जो अखंड समता भाव में स्थित हो गए, उन वीतराग देवों ने परम-तत्व आत्मा का साक्षात्कार किया। आत्म-तत्व के साक्षात्कार से उन्होंने यह अनुभूति ली कि इस जगत के बीच में जितनी भी आत्माएँ हैं, वे सब असंख्य प्रदेशों की दृष्टि से समान हैं। उन आत्माओं पर जो विभिन्न आवरण हैं, वे सब आवरण कर्मों के हैं। जिन-जिन कर्मों की प्रधानता होती है, उन-उन कर्मों के फलस्वरूप आत्माओं को विभिन्न-विभिन्न प्रकार के शरीर मिलते हैं। वह शरीर पुरुष के रूप में या नारी के रूप में हो सकता है तो पशु, पक्षी, देव या नारकीय के रूप में भी हो सकता है।

आत्मा और शरीर का वैसा ही रूपक है जैसा कि शरीर और पोशाक का होता है। जैसे शरीर पर अपनी-अपनी रुचि से अलग-अलग पोशाकें धारण की जाती हैं और उन अलग-अलग पोशाकों की वजह से उस शरीर को किसी भिन्नता की दृष्टि से नहीं देखते, उसी प्रकार आत्मा के स्वरूप में भी कर्मफल के अनुसार मिलने वाले अलग-अलग शरीरों के कारण कोई भिन्नता नहीं मानी जाती।

इस रूप में वीतराग देवों ने बतलाया कि जैसी मोक्ष के परमपद को प्राप्त करने की योग्यता पुरुष में है, वैसी ही योग्यता नारी को भी प्राप्त है। मोक्ष प्राप्ति की उत्कृष्ट साधना जैसी पुरुष कर सकता है, वैसी ही साधना स्त्री के पोशाक में रहने वाली आत्मा भी कर सकती है। मोक्ष प्राप्ति के उच्च लक्ष्य की प्राप्ति में भी योग्यता, क्षमता एवं अधिकार की दृष्टि से पुरुष और नारी में कोई भेद नहीं है।

शरीरों का अंतर : पोशाकों का फर्क

तीर्थंकर भी केवल पुरुष ही नहीं होते, **नारी-जाति के तीर्थंकर भी होते हैं**। भगवान मल्लिनाथ, जो इस चौबीसी में उन्नीसवें तीर्थंकर थे, स्वयं नारी जाति से थे।

सर्वज्ञ समदर्शी वीतराग प्रभु ने पोशाक की अवस्था का भी मूल्यांकन किया है। उन्होंने शरीरों के अनुरूप उनके गुणों को भी बतलाया है। शरीर भी पोशाकों की तरह है। पुरुष का शरीर, स्त्री का शरीर या अन्य योनियों के शरीर, ये सब पहचान के संकेत हैं। शरीर आत्मा के लिए पोशाक के समान है। आत्मा एक शरीर को धारण करती है जो उस शरीर की आयु के अनुसार उसके जीर्ण होने पर उसको त्याग देती है तथा उपार्जित कर्मों के

अनुसार नए शरीर को धारण कर लेती है।

तो आज जो शरीर मिला है, वह इस जीवन के नहीं, बल्कि पिछले जन्म या जन्मों के कर्मों के फलस्वरूप मिला है। जिन आत्माओं ने पुरुष के शरीर में रहते हुए पुरुष योनि की तुलना में नीचे कर्म किए तो उसके फलस्वरूप स्त्री की आकृति वाली पोशाक उन आत्माओं को मिली। पुरुष शरीर की पोशाक छूटी और नारी शरीर की पोशाक उनको उपलब्ध हुई। इसके पीछे मूल रहा हुआ है तथा वह मूल भी गुण के साथ है, केवल शरीर पिंड या जाति के साथ नहीं है।

कई भाई-बहनों के मन में कुछ सवाल इस बारे में जरूर पैदा होते होंगे कि जब शास्त्रीय दृष्टि से भी मोक्ष प्राप्ति के अधिकार में नारी एवं पुरुष को समान स्थान दिया गया है तो फिर एक दिन के दीक्षित साधु को भी पचास वर्ष की दीक्षित साध्वी द्वारा वंदन करने का विधान क्यों है? नारी एवं पुरुष की समान स्थिति मानने के बाद भी यह वंदन का फर्क क्यों है? इसका संतोषजनक समाधान भी जरूरी है।

यह भी मूल में गुणों का ही समादर है

वीतराग देवों का यह जैन धर्म गुणों की गरिमा को ही प्रधानता देता है। यह गुणों के समादर की ही परंपरा है कि जो कम गुणी है और जिसमें कम गुणी होने का चिह्न है, वह उन व्यक्तियों को नमस्कार करे जो अधिक गुणी हैं अथवा जिनमें अधिक गुणी होने का कोई चिह्न दृष्टिगत होता है।

तीर्थंकर जब माता की कुक्षि में आते हैं, तभी तीन ज्ञान को लेकर आते हैं- मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान। वे जब तक गृहस्थाश्रम में रहते हैं, संसार के कई व्यक्तियों को ज्ञान होता है कि वे तीर्थंकर बनने वाले हैं और इसी जन्म में मोक्ष जाने वाले हैं। श्रावकों की दृष्टि में भी यह बात आती है फिर भी वे उनको वंदन नहीं करते। साधुओं को भी यह मालूम होता है कि हम जिस साधुव्रत और जिस सम्यक्त्व को लेकर चल रहे हैं, उसकी अपेक्षा तीर्थंकर का सम्यक्त्व बहुत ऊँचा है, जितना हमारे अंदर ज्ञान है उससे अधिक ज्ञान उनमें है, फिर भी चूँकि तब तक उन्होंने तीर्थंकर पद का चिह्न धारण नहीं किया हुआ होता है, तो उनको वंदन नहीं किया जाता। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका गृहस्थाश्रम में रहने वाले तीर्थंकर को वंदन नहीं करते। क्यों नहीं करते, जबकि वे अधिक गुणवान होते हैं? इसीलिए उनको वंदन-नमस्कार नहीं करते कि गुण को प्रकट करने वाला चिह्न नहीं होता।

जैसे तीर्थंकरों में गुण अधिक हैं फिर भी उन गुणों के अनुसार प्रतीक चिह्न प्रकट में नहीं होता, इसलिए उनको साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका वंदन नहीं करते। वैसे ही यह थोड़ा-सा खयाल करना है कि वर्तमान की यह शरीर रूपी पोशाक क्या चिह्न प्रकट करती है? यह पुरुष शरीर रूपी चिह्न किस गुण से मिला तथा स्त्री शरीर रूपी चिह्न किस गुण की कमी रह जाने से मिला? इसलिए वर्तमान में जिन गुणों के प्रतीक चिह्न आपके सामने हैं, अधिक वंदन-नमस्कार होगा।

गुणवत्ता की न्यूनाधिकता का विश्लेषण

शास्त्रकारों ने इस आत्मा के साथ मोह कर्म की प्रधानता बताई है। जिस व्यक्ति में मोह कर्म की अधिकता होती है, वह आत्मिक गुणों को अधिक नहीं जानता और जिसका मोह कर्म कम होता है, उसमें आत्मिक गुणों का अधिक विकास होता है। उसका संसार में पुनर्जन्म हो तो उसे आत्मिक गुणों का प्रतीक शरीर मिलता है। इसका अभिप्राय यह है कि पहले के जन्म में जिस आत्मा ने मोह कर्म को हल्का किया हो तो उस आत्मा को पुरुष का शरीर मिलता है। लेकिन जिस आत्मा ने अपेक्षाकृत मोह को अधिक भारी बनाया हो, तो उसको नारी-शरीर रूपी चिह्न मिलता है।

ये शरीर वर्तमान में प्रकट हैं, लेकिन वर्तमान के गुणों के साथ प्रकट नहीं हुए, पहले के गुणों के फलस्वरूप प्रकट हुए हैं। गुणस्थान की दृष्टि से भी पुरुष

वेद का बंध-संबंध नौवें गुणस्थान तक होगा और स्त्री वेद का दूसरे गुणस्थान तक ही। पहला गुणस्थान मिथ्यात्व का माना गया है। दूसरे को भी मिथ्यात्व के समकक्ष माना है। ऐसी अवस्था में आज के चोले से जिस शरीर को प्रधानता मिली है उसको प्रत्यक्ष चिह्न स्त्री-शरीर और पुरुष-शरीर, यह पूर्व के गुणों का चिह्न है। वर्तमान में जो बहनें, पुरुषों से अधिक गुण-संपादन करती हैं, उनका प्रतीक-फल आगे के जीवन में दृष्टि में आएगा। लेकिन अभी वर्तमान में पचास वर्ष की दीक्षा वाली साध्वी जो, कुछ काम कर रही है, उसमें गुण है अवश्य, लेकिन जैसे गृहस्थ अवस्था में रहते हुए तीर्थंकरों में अधिक गुण होने के बावजूद साधु-साध्वियाँ उनको वंदन नहीं करते, उसी तरह से पूर्वगुणों की दृष्टि से ही पुरुष को ज्येष्ठता का पद दिया, इसीलिए पुरुष के ज्येष्ठत्व को वंदन करने का शास्त्रों में विधान है। इस दृष्टि से वंदन होगा तो वह वंदन साधु-साध्वियों तथा साधु-जीवन के समकक्ष चल रहे श्रावक-श्राविकाओं को भी हो जाएगा। इस विधान में भी मूलत: गुणवत्ता का ही भाव है। यह गुणवत्ता पूर्व के गुणों के फलस्वरूप प्राप्त चिह्न के अनुसार आँकी जाती है और आज वर्तमान में जो गुण हैं, उनका चिह्न प्रकट नहीं होने से उस पर नहीं चला जा सकता।

आयु के बावजूद भी पद का समादर

समादर की दृष्टि से ऐसा प्रसंग पुरुषों-पुरुषों के बीच में भी आता है। सोचें कि एक विशाल सभा में कई गुणी व अनुभवी व्यक्ति भी बैठे होते हैं, फिर भी एक बीस वर्ष के युवक को सभापति के पद पर बिठा देते हैं तो सभापति के नाते उसको महत्त्व मिल जाता है। आयु की कमी के बावजूद भी उसको अपने पद के कारण समादर प्राप्त हो जाता है। लौकिक व्यवहार में भी ऐसा होता है।

इसी तरह से साध्वी पद के साथ संबंध है। भावों की दृष्टि से, गुणों की दृष्टि से सबका वंदन होता है। यह भेद की दृष्टि नहीं है, तत्व की दृष्टि से वीतराग ने स्वरूप समझाया है।

भगवान महावीर ने यह भी निर्देश दिया कि बहनें साधु के पैर नहीं छुएँ और साधु नहीं छूने देता तो क्या यह बहनों के साथ घृणा-भाव कहलाएगा? ऐसा नहीं है। यह एक मर्यादा है, व्यवस्था है तथा व्यवस्था भी गुणों के साथ है। इसमें पुरुष तथा नारी के बीच भेदभाव का कोई प्रश्न नहीं है।

गुण, धर्म, कार्य एवं मोक्ष प्राप्ति में नारी-पुरुष की पूर्ण समानता

जहाँ शास्त्रकारों ने नारियों को मोक्ष का समान अधिकार दिया है, वहाँ शरीर पिंड का व्यवहार शरीर है तब तक रहेगा। गुणों की दृष्टि से सबका वंदन है, इस प्रकार का अधिकार तीर्थंकरों ने दिया और नारियों का मान बढ़ाया। वर्तमान अवस्था के बावजूद जहाँ नारियाँ पुरुषों से अधिक धर्मकरणी कर सकती हैं, उसका फल भी वे पुरुषों से अधिक पा सकती हैं। वे मोक्षगामी भी बन सकती हैं बल्कि कई महिलाएँ मोक्ष में गई हैं।

मल्लि कुमारी ने नारी-शरीर में होते हुए भी तीर्थंकर पद का चिह्न प्रकट कर दिया और विमल गुणों को विकसित बना दिया तो वे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाओं द्वारा वंदनीय बन गईं। एक नारी को नमस्कार आ गया, लेकिन प्रकट चिह्नों से प्रकट गुणवत्ता के आधार पर आया।

गुण, धर्म, करणी तथा मोक्ष प्राप्ति में जैन धर्म नारी-पुरुष की समानता का प्रबल समर्थक है। इस प्रकार की स्थिति मन के संकल्प में ली जाए कि शरीर की अवस्था देखकर अधिक से अधिक धर्मकरणी की जाए, ताकि गुणवत्ता के आधार पर अगले जन्म में ज्येष्ठ शरीर प्राप्त हो। वास्तविकता यही है कि सर्वत्र गुणों के समादर की परंपरा ही सम्मान पाती है। गुणपूजा का भाव ही समानता का द्योतक होता है।

साभार- नानेश वाणी-28 (समता मति गति दृष्टि की)

भावधारा की निर्मलता : मातृत्व की सफलता

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

चरम तीर्थेश प्रभु महावीर का यह भव्य शासन प्रभु महावीर की उद्घोषणा के अनुसार इक्कीस हजार वर्ष तक निरंतर गतिशील रहेगा। इसमें उतार-चढ़ाव आएँगे क्योंकि भगवान महावीर की जन्मराशि पर भस्म ग्रह का योग था। जिस समय प्रभु महावीर का निर्वाण होने वाला था उस समय शक्रेंद्र ने कहा भी था— ''भगवन्! अपनी आयु का थोड़ा-सा समय आगे बढ़ा लीजिए, ताकि भस्म ग्रह का योग टल जाए।'' प्रभु ने कहा— ''शक्रेंद्र! शासन के प्रति तुम्हारी हित-भावना मंगल भावना है, पर आयु के दलिक को बढ़ा पाना किसी के सामर्थ्य की बात नहीं है। तीर्थंकर भी उसमें असमर्थ हैं।'' वैसे तीर्थंकर का बल परिगणन करते हुए बताया गया है कि लोक, जो चौदह राजू प्रमाण है, इसकी यदि गेंद बना दी जाए और तीर्थंकर भगवान उसे धीरे से टिल्ला लगाएँ तो वह लोक रूपी गेंद अलोक में कहाँ जाकर गिरेगी, इसका कोई ठोर-ठिकाना नहीं। यद्यपि ऐसा न हुआ, न है, न होगा, पर इतना बल होते हुए भी आयु के दलिक को बढ़ाने की उनकी भी क्षमता नहीं है। इसका भी कारण है। जिस समय आयु का बंध होता है उस समय गति-जाति के साथ अनुबंध भी हो जाता है। आयु के साथ गति-जाति के दलिक आत्मा के साथ उतने ही समय तक के लिए संयोजित होते हैं, अत: उन्हें बढ़ाया नहीं जा सकता। यद्यपि अन्य कर्मों में यह आत्मा पुरुषार्थ-विशेष से परिवर्तित कर सकती है। बाद में उदय होने वाले कर्मों को पहले समाप्त किया जा सकता है। जो कर्म बहुत बाद में उदय में आने वाले हैं उन्हें पहले भोगकर आत्मा को निर्मल किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को उदीरणा कहते हैं। यदि हम मान लें कि बँधे कर्मों में परिवर्तन नहीं किया जा सकता अथवा उन्हें समय से पूर्व उदय में नहीं लाया जा सकता तो शोधन प्रक्रिया में कोई आगे नहीं बढ़ेगा। फायदा भी नहीं होगा। जिस समय उदय में आना है, आएगा ही फिर सफाई-धुलाई-शोधन क्यों किया जाए? क्यों तप से निर्जरा की जाए? समाधान हेतु एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है -

भवकोडी संचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ।

- उत्तरा, 30/6

करोड़ों भवों के संचित कर्म, जिनका अबाधाकाल पूर्ण हो गया है, उनकी तप के माध्यम से निर्जरा की जा सकती है।

कहा गया है कि अज्ञानी से सम्यक् दृष्टि की, सम्यक् दृष्टि से श्रावक की, श्रावक से साधु की क्रमश: असंख्यात गुणी निर्जरा अधिक होती है। कर्मक्षय की प्रक्रिया बनती है उसके लिए शोधन प्रक्रिया उपयोगी

है। प्रश्न उत्पन्न होता है कि तब प्रत्याख्यान की इस दृष्टि से क्या स्थिति है? शोधन के अभाव में रूपांतरण नहीं होता। जब तक सूक्ष्म शरीर की भावधारा में कषायों की आग अथवा मलिनता का प्रभाव है तब तक उसका प्रभाव, उसकी छाया, मन पर पड़े बिना नहीं रहेगी। ज्योतिषचक्र चलता है। जब सूर्य या चंद्र के विमान के सामने राहु-केतु के विमान आ जाते हैं तो कहा जाता है ग्रहण हो गया। राहु-केतु उन्हें निगल नहीं लेते, बल्कि उनके कालेपन की परछाई पड़ती है और ग्रहण की स्थिति बन जाती है, वैसे ही जैसे दर्पण में दृष्टिगत होगा। भावधारा में मलिनता है तो मन रूपी दर्पण पर मलिनता ही प्रतिबिंबित होगी। इसीलिए मन के बजाय भावधारा का शोधन किया जाए। पच्चीस बोल में बारहवाँ बोल है- पाँच इंद्रियों के तेईस विषय और दो सौ चालीस विकार। यदि विषय आपके सामने हैं तो उसे मिटाया नहीं जा सकता। शब्द कानों में पड़ेंगे, आप कान में रूई ठूँस लेते हैं तो भी शब्द उसे चीरकर प्रविष्ट हो जाएँगे, पर विकार तब ही जुड़ेंगे जब उनके साथ मन की प्रतिक्रिया जुड़ेगी। ये शब्द शुभ हैं, ये अशुभ हैं, इस विचारणा से राग-द्वेष के फल लग जाएँगे। यदि विषय पर कोई प्रतिक्रिया नहीं होगी तो विकार नहीं पनपेगा। भावधारा विकृत नहीं होगी तो विषय विषय ही रह जाएगा। अंतकृद्दशांग सूत्र के अनुसार देवकी महारानी की भावधारा में विकार आ गया कि क्या अतिमुक्तक मुनि की बात मिथ्या थी? जब उसने देखा कि भावधारा में विकार आ गया तो विचार किया कि प्रभु से समाधान कर लूँ।

मान लीजिए कि आपके मन में भी मलिनता आ जाए, परंतु आप महाराज से पूछने में संकोच करें तो यह मलिनता जमती चली जाएगी और जब भावधारा पर ये पौधे अंकुरित हो जाएँगे तब आत्मा कितनी उत्पीड़ित होगी, यह भी क्या आपने सोचा है? कर्म करते व्यक्ति नहीं सोचता तथा बाह्य स्थितियों का आलोड़न-विलोड़न करते मन में बात घुलती रहने देता है। परिणामस्वरूप मलिनता भावधारा पर चिपक जाती है। यह चिपकना भी दो प्रकार से होता है। **प्रथम-** एक बालक खेल खेल रहा था। काली गीली मिट्टी का गोला बनाकर दीवार पर फेंका, गोला दीवार पर चिपक गया। एक सूखा मिट्टी का ढेला भी था, उसे भी फेंका गया, वह चिपका नहीं बल्कि फिसल गया। गोंद और पानी से एक चिपचिपा पदार्थ बनता है जो चिपकाने के लिए काम में आता है। भावधारा के साथ भी ऐसा ही होता है। आने वाले विषय में कषाय व योग से गीलापन उत्पन्न होता है। कषाय और योग से एक रस और पैदा होता है जैसे दो पदार्थों से तीसरा रस पैदा होता है। सिद्धांत की भाषा में उसे लेश्या कहा गया है। अब देखें कि देवकी महारानी के संबंध में क्या हुआ। उन्होंने विचार किया कि मुझसे मुनि ने कहा था कि ऐसी (नल कुबेर के समान) संतानों को जन्म देने वाली अन्य माता नहीं होगी, तो क्या वह बात मिथ्या थी? चिंतन किया कि उतार-चढ़ाव, संकल्प-विकल्प क्यों रखूँ? वह तीर्थंकर की वाणी का रसपान करने वाली थी, अत: संशय नहीं रखा। संशय रखना भी नहीं चाहिए।

संशय से जीवन सुरक्षित नहीं रहता। विकल्पों में राग-द्वेष-काषायिक परिणाम से अशुभ लेश्या प्रादुर्भूत होती है। देवकी ने विचार किया कि कहीं मेरी भावधारा में अशुभ लेश्या उत्पन्न न हो जाए। अत: सर्वज्ञ सर्वदर्शी प्रभु अरिष्टनेमि जो यहाँ विराज रहे हैं उनके पास पहुँचकर समाधान प्राप्त कर लूँ। देवकी यद्यपि महिला थी, पर उसमें साहस था, सत्व था अन्यथा आज तो भाई भी संकोच करते हैं कि कहीं महाराज नाराज न हो जाएँ। यद्यपि ऐसी बात नहीं है।

देवकी पहुँच गई। पहुँचते ही प्रभु ने सारा दृश्य इस प्रकार प्रस्तुत कर दिया मानो देवकी के सामने टीवी सीरियल चल रहा हो। यह क्या, ये सारे पुत्र मेरे हैं? प्रभु की वाणी सुनी तो संकल्प-विकल्प नहीं रहा। भावधारा पर वे सूखे ढेले टिक नहीं पाए, झड़ गए। यदि वे भावधारा में

चिपका लिए जाते तो वह श्रद्धा से विचलित भी हो सकती थी। शंका, कांक्षा, विचिकित्सा, ये दूषण हैं। संशय में सम्यक्त्व मोहनीय का उदय होता है और यदि यह उदय आगे बढ़ गया और मिथ्यात्व में पहुँच गया तो विनाश ही परिणाम होगा। संशय से आत्मपतन हो जाता है। देवकी ने संशय नहीं रखा। पहुँच गई मुनियों के दर्शन के लिए। मुनि जब घर में आए थे उस समय जो भावधारा थी, जो अध्यवसाय थे, वे इस क्षण परिवर्तित हो गए। एक माता, जिसके प्रसव का प्रसंग नहीं आया हो तो उसके स्तनों में दूध भी नहीं आएगा। लेकिन जब बच्चा जन्म ले लेता है तब कैसी रासायनिक प्रक्रिया होती है, जरा इस पर गहराई से चिंतन करें। माता सिर्फ संतान को ही नहीं बल्कि उसके साथ मातृत्व भाव को भी जन्म देती है।

इस स्थिति पर आज के संदर्भ में विचार करें। आज तो माताएँ चाहती हैं, संतान जन्म ही न लें। ऐसी माताओं के लिए क्या कहें? एक तरफ तो अहिंसा के पुजारी आवाज लगाते हैं कि कत्लखाने बंद होने चाहिए, लेकिन आज तो कत्लखाने हमारे घरों में ही खुलते चले जा रहे हैं। ये माताएँ, जो वात्सल्य की प्रतिमूर्ति मानी जाती हैं, कैसी निष्ठुर-हृदय बन जाती हैं? एक रिपोर्ट के अनुसार पाँच लाख महिलाएँ प्रतिवर्ष अवैध रूप से भ्रूणहत्या करवाती हैं। वैध की संख्या तो बहुत अधिक है। मैं ज्यादा क्या कहूँ, जितने महीने का गर्भ होता है उसके अनुसार अलग-अलग तरीकों से गर्भपात की क्रिया अपनाई जाती है। एक इंजेक्शन द्वारा कोई द्रव पदार्थ गर्भ में छोड़ा जाता है जिससे उस भ्रूण के भीतर हलन-चलन होता है।

तीर्थंकरों ने कहा है- वनस्पति तक के लिए यह मत कहो कि इसे तोड़ दो, काट दो। इससे उसे पीड़ा होती है। डॉ. वेकेंस्टन और जगदीशचंद्र वसु ने प्रयोग से यह सिद्ध भी कर दिया है कि ऐसी बात करने मात्र से वनस्पतियों को पीड़ा होती है, क्योंकि उनमें भी संवेदना होती है। तब सोचिए कि उस भ्रूण को क्या अनुभूत होता होगा? वह भी संज्ञी पंचेंद्रिय मन वाला प्राणी है। महाभारत के पृष्ठ पलटिए, जान लेंगे कि अभिमन्यु ने गर्भ में ही चक्रव्यूह-भेदन की विधि सीख ली थी। तब आज संतान गर्भ में माता-पिता से क्या सीखेगी? शास्त्रकार कह रहे हैं कि जैसे ही गर्भ में संतान आती है, माता का कर्तव्य होता है कि वह अतिशोक न करे। मिर्च-मसाले वाले पदार्थों, प्रमाद तथा आलस्य आदि का सेवन न करे। उसे जिस प्रकार की संतान बनानी है तदनुरूप अपनी दिनचर्या को ढाल ले। पर जो माताएँ संतान चाहती ही नहीं, वे क्यों ऐसा करेगी! वे तो उस मेहमान का सम्मान शस्त्र से करवाएँगी। लेकिन वे नहीं जान पातीं कि योनि में शस्त्र-प्रवेश से बालक भय से भीषण रूप से प्रकंपित होता है, उस थैली में भाग-दौड़ करता है तथा बचने का प्रयास करता है। बालक तो माँ की कुक्षि को रक्षा के लिए सर्वश्रेष्ठ आश्रय मानता है, पर रक्षक ही भक्षक बन जाए तो बालक कहाँ सुरक्षा ढूँढ़े? वह बेचारा भीतर ही भीतर कोलाहल करता है, रक्षा के लिए भागदौड़ करता है, परंतु उसका कोई वश नहीं चलता। डॉक्टर, जो जीवन बचाता है, वह उसके लिए जीवन का हरण करने वाला बन जाता है। आँकड़े बताते हैं कि प्रतिवर्ष तीस लाख के लगभग भ्रूणहत्याएँ हो रही हैं। वैज्ञानिकों ने शोध किया है कि यदि दो-तीन बार गर्भपात करा लिया जाए तो फिर वह माता संतान को जन्म देने योग्य नहीं रह जाती, बाँझ हो जाती है। बाँझ पूजने जाने योग्य नहीं रहती। क्या ऐसी निष्ठुर नारियाँ भी पूजनीय हो सकती हैं?

हम विचार करें कि ये स्थितियाँ नैतिक अथवा धार्मिक दृष्टियों से उचित हैं? धार्मिक पर्व मनाने की सार्थकता फिर कहाँ है? तब पर्युषण पर्व फिर कैसे आएगा? गीले गोले चिपकने जैसी लेश्या का ही निर्माण होगा। गर्भ की संतान को नष्ट कर रहे हैं तो क्या शुक्ल लेश्या होगी? पद्म लेश्या होगी? वहाँ अशुभ लेश्या ही होगी, कृष्ण-नील। उससे जो द्रव उत्पन्न होगा, उसमें मरी हुई गाय अथवा मरे हुए सर्प जैसी दुर्गंध आएगी।

ऐसा द्रव्य यदि हमारी भावधारा में मिले तो फिर भावधारा निर्मल कैसे रहेगी? देवकी ने ऐसा नहीं सोचा कि कंस तो बच्चों को मारेगा ही। तो क्यों न मैं ही उन्हें पहले समाप्त कर दूँ, ताकि प्रसव-पीड़ा तो नहीं सहनी पड़े। पर उसने वैसा नहीं किया। उसी का परिणाम था कि आज वह अपने उन लालों के दर्शन कर पा रही थी। दर्शन करते-करते उसका मातृत्व भाव उमड़ पड़ा। मुनि दर्शन कर रही है। कपड़े छोटे हो गए हैं, कसने टूट गए हैं, दूध की धार, वात्सल्य की धार बहने लगी है। बालक कितना भी बड़ा क्यों न हो जाए, माता के लिए वह बालक ही रहता है। डॉ. डी.एस. कोठारी माता के प्रति अत्यंत श्रद्धावान थे। वे कभी भी माता की आज्ञा की अवहेलना नहीं करते थे। आज तो संतान पढ़-लिख लेने के बाद यह सोचती है कि माता क्या जानती है? पूज्य गुरुदेव की माता श्रृंगार बाई यदि गुरुदेव को जन्म नहीं देती तो उन्हें कौन जानता? आज भारत में श्रृंगार बाई का नाम गुरुदेव जैसे पुत्र के कारण फैला हुआ है।

जिस समय गुरुदेव को युवाचार्य पद दिया गया, उस समय उन्होंने वात्सल्य प्रकट करते हुए स्वर्गीय गुरुदेव आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा. से कहा था—"**ओ अन्नदाता! म्हारे नाना पर अतरो भार क्यों डाल्यो? ओ तो नानो है।**" स्वर्गीय गुरुदेव आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा. ने उत्तर दिया—"**बाईजी! अबे ए नाना नहीं रया।**" तब माता ने तो प्रबोध देते हुए पुत्र से भी यह कहा था—"**अतरो मोटो पद मली गयो, पर अहंकार में मती आवजो।**"

क्या वह माता गुरुदेव से ज्यादा जान रही थी? नहीं, पर वात्सल्य भाव से प्रेरित होकर वह शिक्षा दे रही थी। ऐसी शिक्षा माता दूध पिलाते-पिलाते दे देती है। देवकी खड़ी है, मुनियों पर वात्सल्य भाव उमड़ रहा है।

आज कहते हैं कि वात्सल्य भाव नहीं उमड़ता, पर ऐसा नहीं है। यदि पुत्र सामने हो तो वात्सल्य भाव रुक नहीं सकता। हम पहले पुत्र तो बनें, वात्सल्य स्वत: प्रवाहित होगा। पुत्र सामने थे, अत: देवकी का भी वात्सल्य रस फूट पड़ा।

देवकी की स्थिति पर विचार कीजिए। वह घर लौट आई और विचारों में डूब गई। कृष्ण चरण-वंदन को आए, पर माता को पता ही नहीं चला कि कौन उपस्थित हुआ था। कृष्ण को विचार आया कि अरे मैं दुनिया का दु:ख दूर करता हूँ और मेरी ही माँ यदि दु:खी रहे तो फिर मैं कैसी संतान? मेरा भी कुछ कर्तव्य है। माँ को तीन बार आवाज लगाई। माँ मानो सोते-सोते जाग पड़ी। कृष्ण बोले—"माँ! मैं आता हूँ तब तुम मेरी पीठ और माथा सहलाती हो, पर आज तुम्हें क्या हो गया है?" माता झूर रही थी। कृष्ण ने तो आश्वासन दे दिया, सांत्वना दे दी। बहनों! ध्यान रखिए, यदि आपने गर्भ में ही बच्चे की हत्या कर दी तो फिर मातृत्व प्राप्ति की स्थिति नहीं रहेगी। फिर भले ही आप झूरो, आपकी चाहत पूरी नहीं हो पाएगी। अत: प्रतिज्ञा कर लो कि आप किसी के दबाव में आकर अथवा स्वेच्छा से आने वाली संतान की हत्या नहीं करेंगी, उसे आश्रय देंगी।

देवकी कह रही थी—"मैंने किसी को गोद में नहीं खिलाया, पालने में नहीं झुलाया, दूध पिलाते हुए संस्कार नहीं दिए। इसलिए पुत्रों को जन्म देना सार्थक नहीं हो पाया। वे माताएँ धन्य हैं, जो अपनी संतानों को स्तनपान कराती हुई, झूला झूलाती हुई उन्हें संस्कारित करें।"

श्रीकृष्ण देवकी का झूरना दूर करने के लिए परदे की आड़ में गए और वैक्रिय शक्ति से बालक का रूप बनाया। अब कभी माता के कपड़े खींचे, कभी केश खींचे। माता ने लाड़-प्यार किया, नहलाया, धुलाया। कृष्ण ने देखा कि माता की ममता का तो अंत नहीं आ रहा। राज्य व्यवस्था का क्या होगा? लीला दिखाई। तुतलाते हुए कहने लगे—"माँ भूख लगी है।" "अरे बेटा, भूख लगी है तो ले वह दूध पी ले।" कटोरा मुँह से लगाते ही बोले—"यह तो फीका है।" दूध को मीठा कर दिया। "इतना मीठा दूध मुझे नहीं भाता।"

''अच्छा कोई बात नहीं, किस बात की कमी है, कोई किसान का घर थोड़ी है। दूसरा दूध पीले।'' ''नहीं, दूसरा नहीं पीऊँगा, यही दूध पीऊँगा, पर इतना मीठा भी नहीं पीऊँगा।'' माता परेशान हो गई। ''बेटे, अपनी लीला समेट।'' कृष्ण ने परदे के पीछे जाकर पुन: रूप परिवर्तन किया। ''अरे बेटे, वह कौन था? तू इतना बड़ा हो गया यह भी नहीं जानता कि दूध से बूरा-शक्कर निकाला नहीं जा सकता?'' ''माँ, वह तो बालक ही जाने, मैं क्या जानूँ? बालक तो बालक की तरह ही बात करेगा, उसमें समझदारी कहाँ होगी?'' माता ने कहा— ''कृष्ण! तुम भले बहलाओ, पर मुझे संतोष नहीं होगा, न चैन पड़ेगा, जब तक बालक को संस्कारित करने के लिए वात्सल्य रस प्रवाहित न करूँ।'' सोचिए कि कितने गहरे रिश्ते होते हैं माता और संतान के। यदि माता मातृत्व का हनन करे तो क्या कृष्ण जैसे पुत्र प्राप्त कर सकती है? आज तो कुएँ में भांग पड़ गई है। माता कर्तव्य के प्रति सजग नहीं। बालक को बालमंदिर में भेज दिया। जाओ चार-छह घंटे मुझे छुट्टी मिलेगी। बालक की बुद्धि कुंठित हो जाती है। आगम कह रहे हैं—''जब वह बालभाव से मुक्त हो जाए तभी उस पर भार डाला जाए।'' पर आज तो जो बालक के खेलने के दिन अथवा जो अंकुरित पौधा है, उस पर ही मिट्टी डाल दी जाती है। उसका विकास रुक जाता है, क्षमता का ह्रास हो जाता है। माताओं को देवकी के मातृत्व का आदर्श अपनाना होगा, माता के कर्तव्य के प्रति सजग होना होगा, तभी भारत, जो ऋषि-मुनियों की भूमि रहा है, पुन: ज्ञानियों से पूर्ण होगा और कमी नहीं आएगी। भारतमाता गौरवान्वित होगी। अत: भावधारा का शोधन करें, उसमें वैकारिक भावों को नहीं जोड़े। चिंतन-मनन के द्वारा भावधारा को निर्मल बनाएँ, तभी जीवन में मंगलमय दशा का प्रसंग बनेगा।

साभार- श्री राम उवाच-2 (यतना की महिमा)

रचनाएँ आमंत्रित

500 शब्द शब्द सीमा अथवा एक पेज

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक भिन्न-भिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी क्रम में आगामी अप्रैल एवं मई माह के धार्मिक अंक **गोचरी, गोचरी विवेक एवं तपस्या, तपस्या विवेक** विषयों पर आधारित रहेंगे। कृपया विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ यथाशीघ्र ही भिजवावें। उपरोक्त विषय के अतिरिक्त प्रेरणात्मक सारगर्भित विषयों पर भी लेख, रचनाएँ आदि स्पष्ट एवं सुंदर शब्दों में सादर आमंत्रित हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाओं का सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

9314055390

news@sadhumargi.com

- श्रमणोपासक टीम

ज्ञान सार

आध्यात्मिक आरोग्यम्

आत्मानुशासन

– संकलित

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा जन-जन के चिंतन हेतु अमूल्य आयाम **'आध्यात्मिक आरोग्यम्'** ब्यावर की पुण्यधरा पर सन् 2021 को ज्ञान पंचमी के दिन प्रदान किया गया था। यह आयाम धारावाहिक के रूप में आप सभी के समक्ष आत्मकल्याण के लक्ष्य से प्रस्तुत कर रहे हैं। इसे जीवन में उतारकर अपने जीवन को आध्यात्मिक आरोग्यम् की ओर उन्मुख करें।

अनुशासन में जो रहे,
करता नित्य विकास।
अनुशासित श्रीसंघ हो,
कहते गुरु महाराज।।

15-16 फरवरी 2025 अंक से आगे...

नदी कल-कल छल-छल बहती है। उसकी अपनी गति है। बहती नदी जीवन कहलाती है। उसके किनारे कई नगर बसते हैं। उसके पानी का उपयोग सिंचाई में किया जाता है। नहाने और पीने में भी काम आता है उसका जल। अन्य अनेक प्रकार के जीवनोपयोगी कार्यों के लिए नदी से पानी की आपूर्ति होती है। अनेकानेक सभ्यताएँ नदी के किनारे विकसित हुई हैं।

जो इतिहास हमें पढ़ाया जाता है उसके अनुसार मनुष्य का पहला निवास नदी का किनारा था। नदी के किनारे सभ्यता के विकास में आसानी होती है, इसलिए नदी का दूसरा नाम जीवन भी है। नदी के आस-पास का क्षेत्र हरा-भरा होता है। उस क्षेत्र में पशु-पक्षी और जानवर भी होते हैं। नदी से जितना दूर बढ़ते जाएँगे, उतना ही सूखापन देखने को मिलेगा। रेगिस्तान में दूर-दूर तक नदी देखने को नहीं मिलती। वैसे ऐसा भी सुना जाता है कि हजारों साल पहले रेगिस्तान में भी नदी बहती थी, पर किसी कारण से वह धरती में समा गई।

आज भी सरस्वती नदी की धाराएँ रेगिस्तान में देखने को मिलती हैं। थार मरुस्थल से लेकर कच्छ और भुज के रण तक देखी जाती हैं। धौलावीरा (गुजरात) को वर्ल्ड हेरिटेज साइट में यूनेस्को ने शामिल किया है। ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि वहाँ सरस्वती के किनारे-किनारे करीब 4 हजार नगर बसे हुए थे। आए दिन नए-नए नगरों की खोज एवं प्राप्ति पुरातत्वविदों को खुदाई के माध्यम से होती है। संक्षेप में कहें तो जहाँ-जहाँ नदी है, वहाँ-वहाँ जीवन है। जहाँ नदी है वहाँ सभ्यता है। जहाँ नदी है वहाँ बस्ती है। जहाँ-जहाँ नदी है, वहाँ-वहाँ अन्न-जल की पूर्णता है। जिधर नदी है उधर हरियाली है। उधर बस्ती है। उधर समृद्धि है। उधर लहलहाते खेत हैं। नदी का

दूसरा नाम तटी भी है। तटबंधों के मध्य में बहने वाली को तटी कहते हैं। नदी को बाँध कर नहरों के रूप में निकाला जाता है तो जहाँ नदी नहीं निकलती है उन क्षेत्रों में भी नदी का लाभ मिलता है।

1960 में नेहरू जी ने सतलुज नदी पर भाखड़ा नांगल बाँध बनाया था। उससे लाखों हेक्टेयर भूमि की सिंचाई हो रही है। उस नदी के पानी को बिजली बनाने के काम में भी लिया जाता है। यह नदी की उपयोगिता है। दो तटों के बीच मर्यादापूर्वक बहने से नदी जीवनदायिनी बन जाती है, पर जब नदी तटबंधों को तोड़ने लगती है... तो हाहाकार मच जाता है। प्रलय मच जाता है।

नदी ही नहीं, मर्यादा से बाहर होने पर हर वस्तु नुकसानदेह होती है।

यूरेनियम नाम का एक पदार्थ होता है। उसका उपयोग परमाणु बम बनाने में किया जाता है। इसे बनाने में ऊर्जा का विखंडन होता है। एक ग्राम यूरेनियम से उत्पन्न बिजली कई बाँधों से उत्पन्न बिजली से भी ज्यादा होती है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन ने जो शक्ति सिद्धांत प्रतिपादित किया है, उसके अनुसार एक पुद्गल परमाणु से 3,45,960 कैलोरी (ऊर्जा) शक्ति उत्पन्न हो सकती है। वस्तुत: विज्ञान अभी तक निश्चित रूप से यह नहीं समझ पाया है कि एक परमाणु के अंदर यथार्थत: कितनी शक्ति है। फिर भी उक्त संदर्भ से आप यह अनुमान कर सकते हैं कि अनंत पुद्गल परमाणुओं से निर्मित इस शरीर में कितनी शक्ति हो सकती है।

एक अन्य वैज्ञानिक अनुमान के अनुसार 450 ग्राम पुद्गल द्रव्य को यदि पूर्णरूप से शक्ति में परिवर्तित किया जा सके तो उससे उतनी ही शक्ति (ऊर्जा) उत्पन्न होगी, जितनी 14 लाख टन कोयला जलाने पर प्राप्त होती है।

यूरेनियम की शक्ति को जब वैज्ञानिकों ने जाना तो उनकी आँखें खुली रह गईं। उसके बाद एक नए युग का सूत्रपात हुआ। 1920 से 1930 के दौर में पूरी दुनिया के वैज्ञानिक एटम की एनर्जी और उसके विखंडन के प्रभाव को जाँचने और देखने में व्यस्त थे। पूरी दुनिया आइंस्टीन के सिद्धांत $E=mc^2$ की परिक्रमा कर रही थी। वैज्ञानिकों ने सालों दिन-रात मेहनत की। आखिर एक दिन उन्होंने एटम बम बना ही लिया, किंतु उसके विखंडन से निकलने वाली ऊर्जा का तब भी उनको अंदाजा नहीं था। उसका अंदाजा तब हुआ जब **'हिरोशिमा'** पर बम गिराए गए। 6 अगस्त 1945 को हिरोशिमा पर गिराए गए बम की विभीषिका इतनी थी कि विस्फोट केंद्र से 1600 गज की दूरी पर स्थित एक लोहार की दुकान का सारा लोहा पिघल गया। 900°C पर पिघलने वाला अभ्रक भस्म हो गया। अनुमानत: विस्फोट स्थल का तापमान 6000°C तक पहुँच गया था, जिससे नगर की 25% आबादी बम द्वारा जलने से, 50% उससे उत्पन्न जख्मों से, 25% उसके रेडिएशन से मर गई। 90000 मकानों में से 62000 पूर्णत: ध्वस्त हो गए, 6000 मरम्मत योग्य बचे। नगर के मध्य भाग में 5 मकान ही ऐसे बचे थे, जिनकी मरम्मत की जरूरत नहीं थी।

खेतों में उगे हुए आलू, शकरकंद आदि खाने योग्य पक गए थे। लोगों के कंठ प्यास से सूख गए थे। पानी में लेट-लेटकर शरीर की जलन को शांत करने की कोशिश की गई थी। बम की बीटा और गामा किरणों से अनेक रोग फैले। विस्फोट केंद्र से आधा-आधा मील दूर तक की 95% आबादी मर गई थी। बम प्रहार से 15-20 दिन के बाद बाल झड़ने शुरू हुए और 25-30 दिन बाद रक्त दोष उत्पन्न हुए। मसूड़ों से खून बहने लगा। चमड़ी पर दाने और फफोले आ गए। गला और मुँह सूज गया। पैरों से मोजे उतारने पर मोजे के साथ खाल भी खिंच गई। धुएँ से लोगों का दम घुटने लगा। नगर में रह रहे 2,45,000 लोगों में लगभग 1,00,000 लोग बम विस्फोट से मारे गए। पूरा आकाश पहले सफेद और फिर पीली चमक से भर गया। फिर पीले से लाल हुआ और उसके बाद नारंगी। जिसने

उन रंगों को देर तक देखा वह अंधा हो गया। नगर की इमारतें ढह गईं। वृक्ष गिर पड़े।

सारा नगर जलते हुए अंगारों में बदल गया। अचेत अवस्था में लोगों ने ऐसा अनुभव किया जैसे सूर्य, रवि मंडल से गिर पड़ा है। ऐसे लगा जैसे करोड़ मील का उल्का पिंड उन पर बरस गया है। विश्व के इतिहास में यह निराला संहार था। समूचा नगर चार फीट ऊँची लपटों से घिर गया। 7 वर्ग मील क्षेत्र में एक भी प्राणी जीवित न बचा। साढ़े 7 मील की ऊँचाई तक धुआँ छा गया। नगर से 3-4 किमी. की दूरी पर खड़े आदमी झुलस गए। उनके शरीर नीले हो गए और फफोले पड़ गए। दस कोस तक पहाड़ों की हरियाली खत्म हो गई। खेत सूखकर जल गए। 40 मील दूर एक अंधे आदमी की आँखें चौंधिया गई। विस्फोट का धमाका 150 मील तक सुनाई दिया और 50 मील तक की धरती हिल गई। इस महाभयानक विस्फोट की जानकारी कुछ ही घंटों में पूरे विश्व को हो गई। हिटलर जिस महाअस्त्र की अंतिम क्षणों तक प्रतीक्षा करता रहा, वह अमेरिकियों के हाथों लगा और उसका शिकार हिरोशिमा नगर हुआ।

7 अगस्त 1945 को ट्रू मैन ने सैन फ्रांसिस्को से रेडियो भाषण से हीरोशिमा पर गिराए गए बम का नाम **'लिटिल बॉय'** परमाणु बम बताते हुए उसके विध्वंसकारी प्रभाव पर प्रकाश डाला। पूरा संसार भयभीत हो गया। मानव मस्तिष्क की यह खोज जितनी हितकारी थी, उससे कई गुना अधिक विध्वंसकारी साबित हुई।

इस पूरे दृश्य का वर्णन आचार्य चतुरसेन ने किया है। आप सोच रहे होंगे कि इसे यहाँ पर क्यों लिखा जा रहा है। इसके उत्तर में निवेदन है कि यह ऊर्जा की व्याख्या है। अनुशासित ऊर्जा जनकल्याणकारी होती है, किंतु जब उससे अनुशासन का अंकुश हट जाता है तब वह प्रलयकारी हो जाती है। परमाणु बम जब संयंत्र में होता है और बड़े-बड़े इंजीनियरों के दिमाग और नजरों से निकलता है तो लाखों मेगावाट बिजली पैदा करने वाला बन जाता है। उससे उत्पन्न बिजली सैकड़ों गाँवों और शहरों को जगमग कर देती है। सिंचाई के काम आती है।

नदी जब तक तटबंधों के बीच बहती है तभी तक वह जीवनदायिनी कहलाती है। जब उसके तटबंध टूटते हैं तब वह बाढ़ के रूप में मृत्युदायिनी बन जाती है। हिंदुस्तान के पूर्वोत्तर में बहने वाली ब्रह्मपुत्र और कोसी का कहर हर कुछ सालों में देखने और सुनने को मिलता है।

हमारा शरीर भी तो पुद्गल द्रव्य से निर्मित है। कल्पना करिए 60 किलोग्राम भार वाले इस शरीर से कितनी शक्ति उत्पन्न हो सकती है!

इसी शक्ति के कारण वेदों में इस शरीर को **'ज्योतिषां-ज्योतिः'** कहा गया है। शरीर में 6 नील यानी 6 लाख करोड़ (6,00,00,00,00,00,000) कोशिकाएँ हैं। शरीर के विभिन्न अंगों की कोशिकाएँ एक-दूसरे से काफी भिन्न हैं। ये इतने सूक्ष्म आकार की होती हैं कि एक आलपीन की नोंक पर लगभग दस लाख कोशिकाएँ अवस्थित रह सकती हैं, लेकिन बड़ी कोशिकाओं का आकार शुतुरमुर्ग के अंडे के बराबर भी होता है।

यद्यपि मानव खोपड़ी का भार डेढ़ किलोग्राम से अधिक नहीं होता, लेकिन इसमें ही 14 करोड़ कोशिका तंत्र होते हैं तथा 14 अरब 5 लाख ज्ञान तंतु मानव-मस्तिष्क में अवस्थित होते हैं। इसका क्षेत्रफल लगभग 26 वर्ग इंच होता है। मस्तिष्क में दो रंग के द्रव्य होते हैं- एक, **धूसर** (पीले से कुछ गहरा रंग) रंग का, यह स्मृति तथा बुद्धि को नियंत्रित करता है। जिस व्यक्ति के मस्तिष्क का यह द्रव्य अच्छा होता है, उसकी बुद्धि भी अच्छी होती है और दूसरा द्रव्य है **सफेद** रंग का, यह क्रिया का नियंत्रण करता है। मस्तिष्क के तीन भाग हैं- **एक** समस्त क्रिया-प्रक्रियाओं का संचालक है, **दूसरा** मांसपेशियों का नियंत्रक है और **तीसरा**

स्वचालित प्रक्रियाओं- साँस लेना, भोजन पचाना आदि क्रियाओं का नियंत्रक है।

अब जरा इस मस्तिष्क की कार्यक्षमता का अनुमान लगाइए। आँखें ही औसतन 50 लाख चित्र प्रतिदिन उतारती हैं। इसके अतिरिक्त ध्वनियों, गंधों, स्पर्शों, स्वादों का महासागर हर समय मनुष्य के चारों ओर लहराता रहता है। यह सारा तूफान मस्तिष्क से ही तो टकराता है और मस्तिष्क इन सबको समझता है, जानता है और निर्णय करता है। इन सबके अलावा नई-पुरानी स्मृतियाँ, अर्जित किया हुआ ज्ञान, इस जन्म और पिछले जन्मों के संस्कार, सुखद-दुःखद अनुभूतियाँ आदि सभी मस्तिष्क में ही संचित रहती हैं।

यह सारा कार्य कितना श्रमसाध्य और उलझन-भरा है! किंतु इन सब कार्यों को अपने 14 अरब 5 लाख ज्ञान तंतुओं की सहायता से मस्तिष्क सुचारु रूप से नियमित संपन्न करता रहता है।

समस्त अतींद्रिय-क्षमताएँ भी मस्तिष्क में ही भरी होती हैं; दूसरे शब्दों में मस्तिष्क ही अतींद्रिय क्षमताओं का स्रोत है।

सुना है आपने -

1. नियेशन नाम की एक महिला किसी भी अज्ञात व्यक्ति की कोई वस्तु छूकर उस व्यक्ति का भूत, वर्तमान और भविष्य बता देती है, जो पूर्णरूप से सत्य होता है।
2. कुमारी एडम, दूरवर्ती वस्तुओं को इस प्रकार बता देती है, मानो वह सामने खुली हुई पुस्तक को पढ़ रही हो।
3. कनाडा के मन:तत्व विशेषज्ञ डॉ. डब्ल्यु.जी. पेनफील्ड ने ऐसे विद्युदग्र (Electrode) की खोज कर ली है, जिसका शरीर के किसी विशिष्ट स्थान की किसी विशिष्ट कोशिका के साथ संबंध जोड़ देने पर मनुष्य अपने भूतकाल की घटनाओं को अपनी आँखों के सामने चित्रपट की भाँति प्रत्यक्ष देख सकता है।
4. रूसी वैज्ञानिक प्रो. एनाखीन ने एमीनोजाइन (Eminozine) नाम की ऐसी औषध का आविष्कार कर लिया है, जो व्यक्ति को शारीरिक पीड़ा से छुटकारा दिला देती है।
5. एक ल्यूथिनियन लड़का विशिष्ट अतींद्रिय क्षमता का धनी है। वह किसी भी नई-पुरानी, जीवित-मृत भाषा यथा इंगलिश, फ्रेंच, लैटिन, ग्रीक आदि के शब्दों को उच्चारणकर्ता के साथ-साथ इस प्रकार बोलता जाता है, मानो वह उन भाषाओं का विद्वान हो और उसे पहले से ही यह ज्ञात हो कि उच्चारणकर्ता आगे कौनसा शब्द बोलने वाला है।

यह तो हुई मानव मस्तिष्क की बात, जिसके बारे में कहा जा सकता है कि मनुष्य तो संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है और उसका मस्तिष्क अत्यंत ही विकसित तथा उच्चकोटि का है, लेकिन ऐसी ही अतींद्रिय क्षमताएँ चूहे-बिल्ली आदि संज्ञी पंचेंद्रिय प्राणियों में भी पाई जाती हैं।

मस्तिष्क तो अनेक क्षमताओं और चमत्कारी शक्तियों का पुंज है ही, किंतु त्वचा की सामर्थ्य और शक्ति भी कम नहीं है। इसका महत्त्व भी अत्यधिक है।

मानव शरीर की चमड़ी का क्षेत्रफल लगभग 250 वर्ग फुट होता है और वजन 6 पौंड (लगभग 2 किलो 750 ग्राम)। इसकी सबसे पतली तह आँखों पर होती है- लगभग 5 मिलीमीटर और सबसे मोटी तह पैर के तलवों में होती है- 6 मिलीमीटर। साधारणतया इसकी मोटाई 1 से 3 मिलीमीटर होती है। इसमें अगणित छेद होते हैं। प्राचीन धर्मशास्त्रों के अनुसार त्वचा में साढ़े तीन करोड़ रोम होते हैं। त्वचा, शरीर के लिए एयरकंडीशनर का काम करती है, अर्थात् जाड़ों में यह शरीर को गर्म रखती है और गर्मियों में ठंडा। इसकी छह परतें होती हैं, जो विभिन्न कार्य करती हैं।

- क्रमशः

साभार - आध्यात्मिक आरोग्यम्

ज्ञान सार

श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

15-16 फरवरी 2025 अंक से आगे...

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

प्र.158 उग्र कुल आदि को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर (1) **उग्र कुल** - राजा ऋषभदेव ने कोतवाल के पद पर जिन्हें स्थापित किया था, वे उग्र कुल कहलाए। ये प्रायः उग्र स्वभाव वाले होते हैं।

(2) **भोग कुल** - राजा ऋषभदेव ने जिन्हें पुरोहित पद पर स्थापित किया था, वे भोग कुल कहलाए।

(3) **राजन्य कुल** - राजा ऋषभदेव ने जिन्हें राजा पद पर स्थापित किया तथा जिनको राजा बनाया, वे राजन्य कुल कहलाए। राजा ऋषभदेव के कुरु पुत्र को छोड़कर सभी 97 पुत्रों के वंशज राजन्य कुल कहलाए।

(4) **इक्ष्वाकु कुल** - आवश्यक निर्युक्ति के अनुसार राजा ऋषभदेव के बालपन में शक्रेंद्र ने उनके सामने अनेक फल खाने के लिए रखे, उनमें से ऋषभदेव ने इक्षु लेकर खाया तब से उनका कुल इक्ष्वाकु कुल कहलाया।

(श्री ऋषभदेव व उनके 100 पुत्रों का कुल तो इक्ष्वाकु कुल ही था। इनके पौत्र, वंशज आदि अन्य राजन्य, कौरव आदि कुल वाले हुए। राजन्य कुल, ज्ञात कुल, कौरव कुल, ये इक्ष्वाकु कुल की ही शाखाएँ हुईं। ज्ञात कुल भगवान महावीर के समय में प्रसिद्ध था)

(5) **ज्ञात कुल** - वर्धमान कुमार (भगवान महावीर) का कुल ज्ञात कुल था।

(6) **कौरव कुल** - राजा ऋषभदेव के कुरु पुत्र की संतान कौरव कुल कहलाई।

प्र.159 कर्म आर्य किसे कहते हैं तथा इसके कितने भेद हैं?

उत्तर सज्जन पुरुषों के योग्य अहिंसा प्रधान आजीविका से जीवनयापन करने वाले कर्म आर्य कहलाते हैं। जैसे - कपड़े का व्यापार, सूत का व्यापार, कपास का व्यापार, किराणे का व्यापार, मिट्टी के बर्तनों का व्यापार, सोना-चाँदी-जवाहरात आदि का व्यापार करने वाले।

प्र.160 शिल्प आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर शिल्प (कला) करके जीवन निर्वाह करने वाले शिल्प आर्य कहलाते हैं। इनके अनेक भेद हैं – दर्जी, जुलाहा, ठंठारा, चित्रकार आदि विविध शिल्प करने वाले। **ऋषभदेव भगवान ने (प्रजा के हित के लिए) गृहस्थावस्था में त्रिपदी की प्रधानता के साथ 100 प्रकार के शिल्प विज्ञान का शिक्षण प्रदान किया। –*श्री जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र***

प्र.161 भाषा आर्य किसे कहते हैं?

उत्तर संस्कृत और प्राकृत से जुड़ी हुई सभी भाषाएँ आर्य भाषाएँ हैं। उत्तर भारतीय सभी भाषाएँ अर्धमागधी हैं।

हिंदी की लिपि देवनागरी है तथा इसे ब्राह्मी लिपि का ही संस्कारित/परिवर्तित रूप मान सकते हैं।

प्र.162 ज्ञान आर्य (सम्यग्ज्ञान के धारक) के कितने भेद हैं?

उत्तर ज्ञान आर्य के पाँच भेद हैं - (1) आभिनिबोधिकज्ञान (मतिज्ञान) आर्य, (2) श्रुतज्ञान आर्य, (3) अवधिज्ञान आर्य, (4) मनःपर्यवज्ञान आर्य, (5) केवलज्ञान आर्य।

दर्शन आर्य

प्र.163 दर्शन आर्य किसे कहते हैं तथा इसके कितने भेद हैं?

उत्तर सम्यग्दृष्टि जीव दर्शन आर्य कहलाते हैं। इसके दो भेद हैं- (1) सराग दर्शन आर्य और (2) वीतराग दर्शन आर्य।

प्र.164 सराग दर्शन आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर सराग (कषाय से युक्त) दर्शन आर्य के 10 भेद हैं। यथा -

(1) **निसर्गरुचि** - बिना किसी उपदेश के स्वयमेव या जातिस्मरण आदि ज्ञान से, जिनभाषित जीवादि तत्वों पर 'ये इसी प्रकार हैं अन्यथा नहीं हैं' इस प्रकार श्रद्धा करने वाला 'निसर्गरुचि दर्शनार्य' है।

(2) **उपदेशरुचि** - छद्मस्थ अथवा जिन भगवान का उपदेश सुनकर जिनभाषित तत्वों पर श्रद्धा करने वाला 'उपदेशरुचि दर्शनार्य' है।

(3) **आज्ञारुचि** - जो तीर्थंकर प्रभु द्वारा उपदिष्ट आगमों को तर्क सहित न जानते हुए भी केवली भगवान की आज्ञा मानकर प्रवचन पर श्रद्धा करता है कि 'ये पदार्थ इसी प्रकार से हैं, अन्य प्रकार से नहीं' वह 'आज्ञारुचि दर्शनार्य' है।

(4) **सूत्ररुचि** - श्रीमद् आचारांग आदि अंग प्रविष्ट सूत्र और श्रीमद् आवश्यक, श्रीमद् दशवैकालिक आदि अंग बाह्य सूत्र का अध्ययन करते हुए सम्यक्त्व प्राप्त करने वाला 'सूत्ररुचि दर्शनार्य' है।

(5) **बीजरुचि** - पानी में तेल बिंदु की तरह क्षयोपशम विशेष से एक पद पर श्रद्धा से जो अनेक पदों पर श्रद्धा को फैला लेता है, वह 'बीजरुचि दर्शनार्य' है।

(6) **अधिगमरुचि** - श्रुतज्ञान को जिसने अर्थ से जान लिया है वह 'अधिगमरुचि दर्शनार्य' है। वह श्रुतज्ञान ग्यारह अंग, प्रकीर्णक ग्रंथ तथा दृष्टिवाद रूप है।

(7) **विस्ताररुचि** - सभी प्रमाणों और सभी नयों से द्रव्यों की सभी पर्यायों को जानने वाला 'विस्ताररुचि दर्शनार्य' है।

(8) **क्रियारुचि** - ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, विनय, समिति-गुप्ति संबंधी क्रियाओं में जो क्रिया भाव रुचि वाला है, वह 'क्रियारुचि दर्शनार्य' है।

(9) **संक्षेपरुचि** - जिसने अन्य दर्शनों को अभिगृहीत नहीं किया है यानी अपनाया नहीं है और जैनागमों का भी जो विशेष जानकार नहीं हो, किंतु जिनोक्त तत्वों में सामान्य रूप से श्रद्धा रखने वाला 'संक्षेपरुचि दर्शनार्य' है।

(10) **धर्मरुचि** - जिनेश्वरों द्वारा कथित धर्मास्तिकाय आदि के धर्म यानी स्वभाव पर और श्रुत तथा चारित्र धर्म पर श्रद्धा रखने वाला 'धर्मरुचि दर्शनार्य' है।

-क्रमशः

ज्ञान सार

श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

द्वादश अध्ययन : हरिएसिज्जं

15-16 फरवरी 2025 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - सरिता बैंगानी, कोलकाता

पूर्व चित्रण

हरिकेशबल मुनि के स्वरूप को जानकर ब्राह्मणों ने मुनिराज से अपनी गलती की क्षमा माँगी और सम्मान के साथ एक मास के पारणे हेतु यज्ञ मंडप में रखे एषणीय आहार-पानी से मुनिराज को आहारदान दिया। सुपात्रदान के प्रभाव से देवों ने पाँच दिव्य वस्तुओं की वृष्टि की। ब्राह्मणों को तप की विशेषता दिखाई दी तथा उनका मिथ्यात्व मोहनीय उपशांत हुआ। मुनिराज हिंसात्मक यज्ञ की निरर्थकता व्यक्त करते हैं।

यज्ञ मंडप में ब्राह्मणों की श्रेष्ठ यज्ञ संबंधी जिज्ञासा

मुनिराज के यज्ञ संबंधी उपदेश सुनकर ब्राह्मणों को यज्ञ करने के प्रति संदेह उत्पन्न हुए। तब उन ब्राह्मणों ने मुनिराज से पुन: यह पूछा –

कहं चरे भिक्खु! वयं जयामो, पावाइं कम्माइं पणुल्लयामो?।
अक्खाहि णे संजय! जक्ख-पूइया!, कहं सुजट्ठं कुसला वयंति?।।40।।

भावार्थ – ''हे भिक्षु! हम कैसे प्रवृत्ति की शुरुआत करें? कैसे यज्ञ करें, जिससे हम अपने पाप कर्मों को दूर कर सकें? हे यक्षपूजित संयत! आप हमें बताइए कि कुशल सुइष्ट – श्रेष्ठ यज्ञ का विधान किस प्रकार किया गया है?''

सुजट्ठं कुसला – श्रेष्ठ कुशल पुरुषों द्वारा यज्ञ अर्थात् पाप कर्मों को नष्ट करने वाला यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ अनुष्ठान है।

मुनिराज ने इस प्रकार उत्तर दिया –

छज्जीवकाए असमारभंता, मोसं अदत्तं च असेवमाणा।
परिग्गहं इत्थिओ माण-मायं, एयं परिन्नाय चरंति दंता।।41।।

भावार्थ – ''जो दांत – मन एवं इंद्रिय को वश में रखते हैं, छह जीवनिकाय का आरंभ-हिंसा नहीं करते, असत्य और चौर्य का सेवन नहीं करते, परिग्रह, स्त्री, मान और माया के स्वरूप को जानकर, इनका परित्याग करके इस तरह यज्ञ में प्रवृत्ति करते हैं।''

असमारभंता – आरंभ – आरंभ को पाप का कारण कहा है। प्रत्याख्यान से उस आरंभ से निवृत्त होते हैं।

इस गाथा का आशय है – हम किस प्रकार का आचरण करें? इसके उत्तर में कहा गया है कि हिंसा एवं पाँच पाप आश्रवों तथा क्रोध आदि चारों कषायों के स्वरूप को जानकर उनका परित्याग करते हुए विचरण करना चाहिए।

सुसंवुडो पंचहिं संवरेहिं, इह जीवियं अणव-कंखमाणा।
वोसट्ठकाया सुइचत्तदेहा, महाजयं जयई जन्नसिट्ठं।।42।।

भावार्थ – "जो पाँच प्रकार के संवरों से पूर्ण रूप से संवृत्त होते हैं। असंयमी जीवन (सांसारिक) की आकांक्षा नहीं करते। व्युत्सर्ग – शरीर के प्रति ममत्व या आसक्ति का त्याग करते हैं। जो शुचि (पवित्र) हैं और जो देहभाव से रहित हैं, ऐसे महाजय (मुनिराज/यज्ञकर्ता) कर्मशत्रुओं पर श्रेष्ठ यज्ञ करके विजय प्राप्त करते हैं।"

सुसंवुडो पंचहिं – जिन्होंने पाँच द्वार अर्थात् कर्मों के आगमन रूप आश्रव द्वार बंद कर दिया है, उसे सुसंवृत्त कहा जाता है। संवर के पाँच प्रकार हैं –

(i) प्राणातिपात विरति (ii) मृषावाद विरति (iii) अदत्तादान विरति (iv) मैथुन विरति (v) परिग्रह विरति।

वोसट्ठकाया – 'व्युत्सृष्ट काय' – जिसने उपसर्ग और परीषह को सहन करने में अपने शरीर पर से ममता का त्याग कर दिया।

सुइचत्तदेहा – 'शुचित्यक्त देह' – जिसने ग्रहित व्रतों का निर्दोष पालन किया है, उसे शुचि (पवित्र) कहा है तथा अपने शरीर की सार-सम्हाल का संपूर्ण त्याग किया हो।

इस गाथा का आशय है – तत्वज्ञ पुरुष श्रेष्ठ यज्ञ किसे कहते हैं? इसके उत्तर में कहा गया है कि जिसको शरीर व शरीर से संबंधित वस्तुओं के प्रति आसक्ति एवं मूर्च्छा है, वह हिंसा आदि आश्रवों के कारण नाना प्रकार के पाप कर्मों का बंध करता है। जिसने आसक्ति एवं मूर्च्छा को छोड़ दिया है, वह अहिंसा आदि संवरों का भली-भाँति पालन करते हुए आश्रवों को रोककर कर्मशत्रुओं पर विजय पाता है और आत्मशुद्धि करता है। ऐसा यज्ञ सर्वश्रेष्ठ यज्ञ है।

अध्यात्म-यज्ञ के साधनों के विषय में प्रश्न

श्रेष्ठ यज्ञ संबंधित बात को सुनकर ब्राह्मणों के मन में संशय उत्पन्न हुआ तो वे हरिकेशबल मुनि को पूछते हैं कि जब यज्ञ में षट्जीवकाय की विराधना होती है, यज्ञ के सभी उपकरण आपकी दृष्टि में हेय (छोड़ने योग्य) हैं तो आपका यज्ञ साध्य जीव हिंसा से रहित कैसे हो सकता है? इसके निवारण हेतु इस प्रकार पूछा –

के ते जोई? के य ते जोइठाणे, का ते सुया? किं व ते कारिसंगं?।
एहा य ते कयरा संति भिक्खू?, कयरेण होमेण हुणासि जोइं?।।43।।

भावार्थ – "हे भिक्षु! आपने जिस यज्ञ के बारे में कहा है, उस यज्ञ में आपकी ज्योति (अग्नि) कौनसी है? आपके ज्योति स्थान कौनसा है? आपके स्त्रुवा (कुड़छियाँ – अग्नि में घी डालने वाली) कौनसी हैं? आपके अग्नि प्रज्वलित करने के लिए कारिषांग (कंडा) कौनसा है? अग्नि जलाने के लिए ईंधन कौनसा है? आपके शांति पाठ कौनसा है तथा किस होम से आप ज्योति को तृप्त करते हैं?"

मुनि द्वारा अध्यात्म-यज्ञ का निरूपण

ब्राह्मणों की बात को सुनकर मुनि ने स्वयं द्वारा सेवित यज्ञ के लिए आवश्यक भिन्न सामग्री के संबंध में इस प्रकार बताया –

तवो जोई जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंगं।
कम्मेहा संजमजोग संती, होमं हुणामि इसिणं पसत्थं।।44।।

भावार्थ – ''हे ब्राह्मणो! मेरे यज्ञ में तप ज्योति (अग्नि) है। जीव ज्योति का स्थान है। मन, वचन और काय, ये तीन योग घी डालने की कुड़छियाँ रूप हैं। शरीर अग्नि प्रदीप्त करने के लिए कंडे रूप है। कर्म कुश, तृण, धूप रूप ईंधन है। संयम की प्रवृत्ति – शांति पाठ है, (क्योंकि संयम से ही समस्त जीवों के प्रति उपद्रव दूर होते हैं, जिससे अनंत शांति मिलती है।) ऐसे प्रशस्त होम (यज्ञ) सम्यक् चरित्री ऋषियों द्वारा प्रशंसनीय है अर्थात् हम करते हैं।''

पसत्थं – प्रशस्त - जीव का उपघात रहित होना।

इस गाथा का आशय है – मुनि तपरूपी अग्नि प्रज्वलित करके समस्त कर्मरूपी कष्टों को जलाते हैं। जीव उस तप का आधार होने से इसको अग्निकुंड बताया है। मन-वचन-काया के निमित्त से तपरूपी अग्नि प्रज्वलित होती है, इसलिए योगों को कुड़छियाँ बताया है। शरीर की सहायता से तपरूपी अग्नि प्रदीप्त होती है, इसलिए शरीर को कंडे बताया है। कर्म को तपरूपी अग्नि जलाती है, इसलिए कर्मों को ईंधन बताया है।

आध्यात्मिक स्नान और शुद्धि के साधनों की जिज्ञासा

मुनिराज ने यज्ञ विधि के स्वरूप का प्रतिपादन किया, तब ब्राह्मणों को यज्ञ के लिए जलस्पर्श (शुद्धि-स्नान) के विषय में पूछने की जिज्ञासा बढ़ी और वे मुनिराज से पूछते हैं –

के ते हरए? के य ते संतितित्थे?, कहिं सि ण्हाओ व रयं जहासि?।
आइक्ख णे संजय! जक्ख-पूइया! इच्छामो नाउं भवओ सगासे।।45।।

भावार्थ – ''हे यक्षपूजित संयत! आपका ह्रद – जलाशय कौनसा है? आपका शांति तीर्थ कौनसा है? आप कहाँ स्नान करके कर्म रज को झाड़ते हैं? हम आपसे जानना चाहते हैं।''

आध्यात्मिक स्नान, उसके साधनों और आत्मशुद्धि का निरूपण

स्नान के विषय में जब ब्राह्मणों ने जिज्ञासा भाव रखा तब मुनिराज ने इस प्रकार उत्तर दिया -

धम्मे हरए बंभे संतितित्थे, अणाविले अत्त-पसण्णलेसे।
जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइ-भूओ पजहामि दोसं।।46।।

भावार्थ – ''हे ब्राह्मणो! अनाविल अर्थात् अकलुषित आत्मा की प्रसन्न लेश्या वाला धर्म ही मेरा ह्रद-जलाशय है। ब्रह्मचर्य मेरा शांति तीर्थ है, जहाँ स्नान करके मेरा मन विमल, विशुद्ध और सुशीतल होकर ज्ञानावरणीय आदि दोषों को दूर करता हूँ। (भविष्य में उनसे रहित हो जाऊँगा।)''

हरए – जलाशय, जल स्पर्श। कितने ही चिंतक प्रात: स्नान करने में ही आत्मशुद्धि मानते हैं। श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने प्रत्येक परिस्थिति में स्नान करने का स्पष्ट निषेध किया है। जल स्पर्श से मुक्ति मानना मिथ्या दशा है, क्योंकि जल स्नान से कर्ममल नष्ट होते हैं तो फिर पुण्य फल (कर्म) भी तो नष्ट होंगे। अत: भगवान ने इस धारणा को भ्रांत बताया है।

बंभे संतितित्थे – ब्रह्मचर्य शांति तीर्थ है। ब्रह्मचर्य सब व्रतों में महान और कठोर व्रत है। इसकी आराधना करने से समस्त मलों के मूल राग-द्वेष विनिष्ट हो जाते हैं। राग-द्वेष, मोह, क्रोध, आदि रूपी मल नष्ट हो जाने पर उसकी पुन: उत्पत्ति की संभावना नहीं होती। इससे सहज ही आत्मा विशुद्ध हो जाती है। इसलिए ब्रह्मचर्य को शांति तीर्थ कहा है। इसमें नहाने से आत्मशुद्धि होती है। आत्मा पूर्ण निर्मल, दोषमुक्त हो जाती है।

अत्त-पसण्णलेसे - 'अत्त' – आत्मा, इष्ट, कांत, प्रिय और मनोज्ञ; **'पसण्ण'** – विशुद्ध; **'लेसे'** – लेश्या – लेश्या प्रसन्न और अप्रसन्न दो प्रकार की होती है। सर्वथा अकलुषित लेश्या को प्रसन्न लेश्या कहा गया है।

इस गाथा से मुनि का आशय है – केवल किसी तीर्थरूप जलाशय (गंगा आदि) में स्नान करने से पापों का नाश होता है, ऐसी मान्यता को मुनिराज नहीं मानते। हिंसा आदि पापों से निवृत्त होना ही सर्वोत्तम धर्म तीर्थ है एवं इसमें अवगाहन करने वाले जीव नियमतः विमल एवं विशुद्ध बनते हैं। तत्व रूपी धर्म हृदय में स्नान करने को ही प्रशंसनीय माना है। आध्यात्मिक उन्नति के लिए यही महास्नान है। ऐसे स्नान से आत्मा निर्दोष – दोषों से रहित बन जाएगी। इस प्रकार हरिकेशबल मुनि ब्राह्मणों को प्रतिबोध देकर अपने स्थान पर चले गए और वहाँ विशिष्ट तपस्या की आराधना से कर्मों का क्षय करके मुक्ति का लाभ लिया तथा ब्राह्मणों ने भी प्रतिबोधित होकर आत्मकल्याण का मार्ग ग्रहण कर लिया।

एयं सिणाणं कुसलेहिं दिट्ठं, महासिणाणं इसिणं पसत्थं।
जहिंसि ण्हाया विमला विसुद्धा, महारिसी उत्तमं ठाणं पत्ते।।47।।

।। त्ति बेमि ।।

भावार्थ – ''कुशल पुरुषों तीर्थंकर भगवान द्वारा दृष्ट-उपदेश है। 'वह महास्नान ही प्रशस्त – प्रशंसनीय है। जिस स्नान से महर्षि विमल और विशुद्ध होकर मुक्ति रूप उत्तम स्थान को प्राप्त हो जाते हैं।'' (**त्ति बेमि –** ऐसा ही वीर प्रभु ने कहा है और वैसा ही मैं कहता हूँ।)

प्रभु महावीर का ही तीर्थ एक ऐसा तीर्थ है, जहाँ सब जीवों को शांति लाभ मिलता है।

– क्रमशः

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राष्ट्रीय अध्यक्ष (सत्र 2025–2027) मनोनयन हेतु सूचना

हमारे गौरवशाली संघ के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी गांधी का कार्यकाल आसोज सुदी 2, दिनांक 23 सितंबर, 2025 को पूर्ण होने जा रहा है। अतः आगामी सत्र 2025–27 हेतु इस पद के लिए संघ समर्पित, सेवा भावना से ओत–प्रोत सुश्रावक, जो श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के व्यसनमुक्त सदस्य हों, उनके नामांकन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इस पद के लिए आप अपना अथवा अन्य किसी सुज्ञ संघ सदस्य का नाम प्रस्तावित कर सकते हैं। कृपया अपना प्रस्ताव दिनांक 31 मार्च, 2025 से पूर्व निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें –

राजकुमार नाहर

प्रमुख – नियामक परिषद्

103–104, जनकपुरी प्रथम, इमलीवाला फाटक, जयपुर–302005 (राज.)

Mo.: 9928074897 (WhatsApp), Email : rknahar27@gmail.com

–राष्ट्रीय महामंत्री, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

भक्ति रस

सुयश कहानी महत्तम की

– प्रतिभा तिलकराज सहलोत, निम्बाहेड़ा

पचास बरस की सुयश कहानी,
अद्भुत योगी की कथा निराली।
नोखा मंडी के संघ प्रांगण में, महत्तम महोत्सव विशाल।
जिसने देखा दृश्य अलौकिक, वो आँखें तो हुई निहाल।।
माघ सुदी बारस के दिन, हमने संयम अर्धशताब्दी मनाई।
स्वर्गलोक से गुरु नाना ने, दी आशीष और बधाई।।
रामलाल बने थे आज मुनिराज, संघ में उत्साह छाया।
देश-विदेश के गुरुभक्तों ने, उत्सव सोल्लास मनाया।।
उच्च पाट पर पाट, पाट पर वीर सम राम विराजे।
पार्श्व में उपाध्याय प्रवर, मानो गौतम गणधर राजे।।
आगम युग-सा दृश्य देख, चारों तीर्थ गा रहे गुणगान।
समवसरण-सी छटा निराली, हुक्मसंघ की बढ़ती शान।।
आस्था के अनमोल अक्षत, अर्पित हुए कई हजार।
श्रद्धा भावों के गुलदस्तों से, सजा राम दरबार।।
उल्लास भरा था कण-कण में, नव बसंत की छटा सुहानी।
संत-सतीरत्नों से मुखरित, पचास वर्षों की सुयश कहानी।।
उपाध्याय प्रवर की प्रबल प्रेरणा, जागा शौर्य हमारा।
संयम शतम आह्वान पर, बहीं आज्ञा-पत्रों, प्रतिज्ञा-पत्रों की धारा।।
शासन पुष्ट बनाया श्रम से, पंचम आरे के अवतार।
श्रावक समुदाय सहज समर्पित, अर्पित किए संतति उपहार।।
वीर बहन कमला बाई ने, देख भ्राता का अतिशय अपार।
हर्षातिरेक से गूँजा दिया, सुवर्ण दीक्षा महोत्सव पंडाल।।
क्या गाएँ, क्या सुनाएँ, अद्भुत योगी की कथा निराली।
वरदहस्त पाने वालों की, झोली रही ना खाली।।
सूर्य बनकर चमक रहे हैं, सिंधु-सी गंभीरता है।
मेघ बनकर बरस रहे हैं, हिमगिरि-सी धीरता है।।
नए-नए आयामों से, शासन खूब सँवारा।
दिए आपने सूत्र विलक्षण, मुग्ध हुआ संघ सारा।।
चौसठ तीरथ पद पंकज में, आनंद स्वर्ग-सा पाया।
गुरुवर ने सुपावन 'प्रतिभा' से, उज्ज्वल इतिहास रचाया।।

अतीत के झरोखों से

युवाचार्य विद्वान श्रीराम मुनिजी- एक अनूठा व्यक्तित्व

प्रो. सतीश मेहता

साधुमार्गी जैन संघ के आचार्य नानेश के द्वारा मनोनीत अनूठे व्यक्तित्व के धनी, शास्त्रज्ञ, सेवाभावी, आज्ञाकारी, शांत, धीर वीर एवं गम्भीर विद्वान युवाचार्य राममुनि जी। मुनि प्रवर का नाम राम है। इनका कार्य भी राम जैसा ही है।

मेरा राम मुनि जी से बहुत लम्बा परिचय तो नहीं है परन्तु दर्शन करने का मुझे कई बार अवसर मिला। आपका विशेष परिचय दीक्षा प्रसंग के अवसर पर बीकानेर पधारने के बाद ही हुआ तो मैंने देखा कि वास्तव में मुनिवर रामलालजी म.सा. बहुत ही अनूठे व्यक्तित्व के धनी है।

इनका जन्म बीकानेर से 30 किलोमीटर दूर पर स्थित देशनोक कस्बे में विक्रम संवत 2009 मिती चैत्र शुक्ला 14 को हुआ। आपके पिता नेमचन्द भूरा सरल एवं धार्मिक वृति के थे माता गवरा देवी धर्मप्रेमी महिला है आपके पिता देशनोक के भूरा पंचायती के प्रमुख भी रहे थे। मुझे युवाचार्य श्री राम मुनि जी म.सा. ने एक चर्चा में मेरे द्वारा पूछने पर बताया कि मैं जब बनमनखी [बिहार] में मारवाड़ी छात्र संघ का कोषाध्यक्ष था तब कि बात है एक दिन हम खेल रहे थे। तभी मित्रों में बात चली कि कौन क्या बनेगा तो मैंने बताया मैं साधु बनूंगा। इस पर लिखा पढ़ी हुई और मेरे हस्ताक्षर हुए।

मैं जयपुर चातुमार्स में आचार्य श्री के दर्शन करने गया तब मुझे विशेष रूप से दीक्षा की प्रेरणा मिलीं एवं विद्वान श्री कँवरचन्द जी म.सा. ने मुझे गुरुदेव के पास ले जाकर त्याग पच्चखान करवाए। यहीं से मेरे मन में दीक्षा की प्रेरणा जगी।

मुनिवर ने आचार्य श्री नानेश से देशनोक में 22 वर्ष की उम्र में माघ शुक्ला 12 संवत 2031 में दीक्षा ग्रहण की। तब से आप नियमित रूप से संयम साधना में संलग्न है। वर्तमान में आपको दीक्षा ग्रहण किए 17 वर्ष पूरे हो चुके हैं। अभी आप 39 वर्ष के युवा मुनि है। आपने दीक्षा ग्रहण किए जाने के बाद अधिकांश समय आचार्य श्री नानेश के साथ-साथ

जय जिनेश | जय नानेश

युवाचार्य प्रवर

पूज्य श्री रामलाल जी म.सा. को चादर प्रदान दिवस पर शत्-शत् वन्दन

[युवाचार्य प्रवर दीक्षा के पूर्व अवस्था में]

युवाचार्य विद्वान श्रीराम मुनिजी

प्रो सतीश मेहता

मुनिवर ने आचार्य श्रीनानेश से देशनोक में २२ वर्ष की उम्र में माघ शुक्ला १२ संवत २०३१ में दीक्षा ग्रहण की। तब से आप नियमित रूप से संयम साधना में संलग्न है। वर्तमान में आपको दीक्षाग्रहण किए १७ वर्ष पूरे हो चुके है। अभी आप ३९ वर्ष के युवा मुनि है। आपने दीक्षा ग्रहण किए जाने के बाद अधिकांश समय आचार्य श्रीनानेश के साथ-साथ विचरण कर बिताया।

आचार्य श्री की अनुपम कृपा इन्हें सदैव मिली परन्तु आपमें किसी प्रकार के अहंकार की भावना नहीं देखी। आप सदैव ही अपने जीवन में संयम साधना व कर्त्तव्य निष्ठा के प्रति तत्पर रहे हैं। आप आचार्य श्री के मन के विचारों व भावनाओं को हाव-भाव से बिना कुछ बात किए तुरंत समझाने व भापने में बड़े निपुण है।

आचार्य श्री नानेश का व्यक्तित्व भी मननशील, चिंतनशील, दूरदर्शी है तभी आचार्य श्री नानेश ने वर्षों के परीक्षण चिंतन मनन के बाद अनूठे व्यक्तित्व के धनी श्रीराममुनि जी को युवाचार्य हेतु चयनित किया है। आपका व्यक्तित्व तेजस्वी है आप भी आचार्य श्री की तरह ही जैन जगत के एक नक्षत्र के रूप में गौरव एवं ख्याति प्राप्त कर समाज को दिशा प्रदान करेंगे।

युवाचार्य चादर महोत्सव

साधुमार्गी परम्परा का गौरवशाली अध्याय: बीकानेर संघ

समता और समीक्षण ध्यान से राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान: आचार्य श्री नानेश

आमंत्रण-पत्र

समता विभूति आचार्य श्री नानेश द्वारा घोषित युवाचार्य श्री राममुनि जी के चादर महोत्सव पर आप सादर आमंत्रित हैं

स्थान: जूनागढ़
दिनांक: 7 मार्च 1992 शनिवार
समय: प्रात: 8 बजे

निवेदक

भंवरलाल कोठारी, संयोजक — रामलाल बोथिया, मंत्री

श्री साधुमार्गी जैन बीकानेर श्रावक संघ

'मूर्ति छोटी कीर्ति मोटी'

आचार्य पद सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य में

दीक्षा का स्वरूप और महत्व

☆ डॉ. नरेन्द्र भानावत

...की दिशा में सांसारिक माया मोह और पापकारी प्रवृतियों से अलग हटकर, उत्कृष्ट वैराग्य भावना ...त हो आजीवन सम-भाव में रमण करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होता है, उस प्रक्रिया का नाम दीक्षा है। ...से बना है जिसका अर्थ है किसी धर्म-संस्कार के लिए अपने आप को तैयार करना, आत्म- संयम की चेतना के रूपान्तरण का नाम है। यह नए आध्यात्मिक जीवन का प्रवेश द्वार है। वृतियों के पवित्रिकरण ...नाम है दीक्षा।

...स्तार है। एक श्रावक दीक्षा और दूसरी श्रमण दीक्षा। श्रावक दीक्षा सद्गृहस्थ बनने और अपने में आदर्श ...त करने की प्रतिज्ञा ग्रहण करने का नाम है। श्रावक उसे कहा गया है जोश्रद्धा और विवेक पूर्वक अपनी ...ार हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह का त्याग कर आत्म- गुणों को प्राप्त करने की दिशा में सक्रिय ... से व्रत- नियमादि ग्रहण कर वह संसार में रहते हुए भी अधिकाधिक संयमी जीवन जीता है। ...की अगली सीढ़ी है। प्रचलित अर्थ में श्रमण दीक्षा को ही दीक्षा कहा जाता है श्रावक दीक्षा बारह व्रत ...जो साधक श्रमण दीक्षा धारण करता है वह गृह, और परिगृह तथा उसके ममत्व से रहित होता है। वह ...कुशील और परिग्रह का तीन करण योग से अर्थात मन, वचन, काया से इन पापकारी प्रवृतियों को स्वयं ...ने और उन्हें करते हुए का अनुमोदन न करने की प्रतिज्ञा धारण करता है। इस प्रतिज्ञा द्वारा वह नए ...श करता है।

...यदर्शन, सम्यग्यज्ञान और सम्यग्यचारित्र की निरतिचार आराधना के लिए साधना के मार्ग में आने वाली ...ो हंसते-हंसते सहन करता है। वह नंगे पांव पैदल चलता है शरीर- रक्षण के लिए घर-घर जाकर ...र ग्रहण करता है, कल के लिए कुछ भी संचित नहीं रखता। अपने पास कोई पैसा, नोट, गहना आदि का स्पर्श तक नहीं करता। रहने के लिए अपना निजी कोई मकान नहीं रखता। वर्षावास को छोड़कर शेष ... उपदेश देने, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने, जीवन को व्यसन मुक्त कर सुसंस्कार डालने की भावना ...द विहार करता है और कहीं भी एक माह से अधिक नहीं रूकता।

...य साधक अपने पुराने वस्त्रों को त्याग कर आध्यात्म जीवन के प्रतीक सादे वस्त्र धारण करता है और ...ने भावी जीवन- व्यवहार को शुद्ध, पवित्र और निर्मल करने के लिए वह प्रतिज्ञाबद्ध होता है, साथ ही ...दुष्कृत अर्थात बुरे कार्य हुए हैं, उनके लिए सबसे क्षमा मांगता है, उनकी आत्म साक्षी से निंदा करता है। ...न और दुष्कृत्यों के प्रति निंदा, गर्हा करके वह अपने हृदय को पाप रहित, भारहीन बनाकर नए जीवन

...क्षा तथाकथित आधुनिक शिक्षा की अर्थकारी भोगोन्मुखी प्रवृति से परे आत्मबोध की सहज स्फुरणा है, ...विशिष्ट प्रक्रिया है, चेतन का अपनी स्वानुभूति में स्थित होने की साधना है, मन की ग्रन्थियों को भेदकर ...समें आत्म-सुधार, जीवन निर्माण, लोक कल्याण, अहिंसक समाज रचना और विश्वमैत्री का बहुत बड़ा

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

जैनाचार्य 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के दीक्षा अंगीकार दिवस के स्वर्ण महोत्सव 'महत्तम शिखर महोत्सव' के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई। इस विशेष अवसर पर श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा कार्यक्रमों के आयोजन व 'श्रमणोपासक' के विशेषांक का प्रकाशन सराहनीय है।

भारत भूमि सदियों से संतों, ऋषियों, मुनियों, तीर्थंकरों और आचार्यों की गौरवशाली कर्मभूमि रही है। जन-जन का मार्गदर्शन करते हुए मानवता के कल्याण में हमारे मनीषियों का अमूल्य योगदान रहा है। यह देखना सुखद है कि आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. हमारी इस महान परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के जीवन व विचारों में लोक कल्याण के लिए गहन चिंतन का भाव निहित है। उनके नेश्राय में किये जा रहे आध्यात्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, जीवदया व अन्य लोकोपयोगी कार्य उल्लेखनीय हैं। समाज में नवचेतना लाने और कुप्रथाओं के उन्मूलन की दिशा में श्रीसंघ द्वारा प्रशंसनीय कार्य किये गये हैं।

अमृत काल में अपनी गौरवशाली विरासत पर गर्व के भाव के साथ हम एक भव्य व विकसित भारत के निर्माण की दिशा में अग्रसर हैं। इस कर्तव्य काल में हमारे महापुरुषों द्वारा दिये गये सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, समानता और बन्धुत्व जैसे विचार हमारी एकता व एकजुटता को बढ़ाकर राष्ट्र को प्रगति की नई ऊंचाइयों पर ले जाने में सहायक होंगे।

मुझे विश्वास है आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के संयम सकल्प का स्वर्ण महोत्सव लोगों को देश व समाज की बेहतरी के लिए किये जा रहे उनके प्रयासों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देगा।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
माघ 18, शक संवत् 1946
07 फरवरी 2025

महत्तम शिखर
के स्वर्णिम क्षण

महत्तम महोत्सव अथवा महत्तम शिखर एक अहसास बनकर पूर्णता की ओर अग्रसर हुआ है। अहसास एकता का, समर्पणा का, गुरुभक्ति का...

इस महोत्सव ने जन-जन के भीतर श्रद्धा व समर्पणा को और अधिक प्रगाढ़ बना दिया है। आचार्यश्री के सिद्धांतों व इंगिताकारों ने प्रत्येक अंधकारभरी राह को दैदीप्यमान किया है, जिसकी रोशनी न सिर्फ भौतिकता की चकाचौंध को मात दे रही है, बल्कि संयम की मशाल जलाने में भी सहायक सिद्ध हो रही है।

ऐसे परम उपकारी, गुणशील संप्रेरक, नानेश पट्टधर के 50वें दीक्षा दिवस को **'महत्तम शिखर महोत्सव'** के रूप में नोखा नगर में मनाया गया, जिसके आकर्षण निम्न प्रकार रहे –

1. **साहित्य, थोकड़ों सहित लगभग 15 पुस्तकों का विमोचन।**
2. **संयम शतम में पूर्व निर्धारित 7 दीक्षाओं के स्थान पर 9 मुमुक्षुओं की जैन भागवती दीक्षाएँ संपन्न।**
3. **महत्तम आराधना कार्यक्रम में अल्का जी डागा व टीम द्वारा प्रस्तुति।**
4. **महत्तम Immersive (A Soulful Journey) नयनाभिराम प्रदर्शनी का आयोजन।**
5. **महत्तम Lifting (Learning Session) - हर आयु वर्ग के लिए।**
6. **'कौन बनेगा अभिरामम् रत्नम्' राष्ट्रीय स्तरीय क्विज का आयोजन।**
7. **महत्तम शिखर (The Ultimate) के अंतर्गत मुख्य अतिथि के रूप में**
   - श्री अर्जुनराम जी मेघवाल (कानून व न्याय मंत्री, भारत सरकार)
   - श्री लहर सिंह जी सिरोया (राज्यसभा सदस्य) की उपस्थिति से गौरवानुभूति।
8. **महत्तम प्रतिभागियों का आकर्षक प्रस्तुतियाँ।**

9. अभिरामम् प्रतियोगिता के प्रथम 3 विजेताओं की घोषणा।
10. S2S Connect (साधुमार्गी टू साधुमार्गी) ऐप का लोकार्पण
11. मशहूर मोटिवेशनल स्पीकर राहुल जी कपूर (जैन) द्वारा महत्तम अहोभाव गुरुचरणों में अर्पण।
12. महत्तम संयम का 9 फरवरी को धर्माराधना के साथ संपूर्ण दिवस आयोजन।
13. 2 फरवरी 2023 से 9 फरवरी 2025 तक एकांतर तप कर रहे तपस्वियों के सामूहिक पारणे का आयोजन। नोखा में उपस्थित तपस्वियों का शानदार अभिनंदन। देशभर में लगभग 185 तपस्वियों ने एकांतर तप किया।
14. संघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों की स्टॉल।
15. महत्तम महोत्सव के 9 प्रकल्पों की यात्रा का विवरण विभिन्न मॉडल्स व चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत।

महत्तम Immersive Gallery (A Soulful Journey)

एक विरले महापुरुष के इंगिताकारों पर सैकड़ों पुण्यात्माएँ गतिमान है। ऐसे महापुरुष के जीवन का एक-एक क्षण प्रेरणा लेने योग्य है। उनके जीवन के प्रत्येक पहलू से हर आयु वर्ग को एक नई दिशा व सोच मिलती है। उन्हीं पहलुओं को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया नयनाभिराम प्रदर्शनी द्वारा। जिसके अंतर्गत आचार्य श्री के जन्म, जन्मस्थान का विवरण, माता-पिता का विवरण, मनोहर बचपन के किस्से, वैराग्य का बीजारोपण, आज्ञा-पत्र हेतु घर वालों को मनाना, शिक्षा स्थली का दीक्षा स्थली में परिवर्तन होना, गुरुचरणों में समर्पित मुनि जीवन, मुनि प्रवर अलंकरण, गुरु शिष्य का परमागम अद्भुत संबंध, रहस्यज्ञाता उपाधि, युवाचार्य पद प्रदान, नाना गुरु का विरह, आचार्य पदारोहण, सुदूर क्षेत्रों में विचरण, जन-जन के चिंतन हेतु आयाम आदि अन्य कई अवसरों को चित्रों, मॉडल्स, पोस्टर्स, 3D स्ट्रक्चर्स के माध्यम से दर्शाया गया।

श्रमणोपासक : संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक की स्टॉल पर 50 से अधिक एड्रेस अपडेट किए गए। 56 नवीन सदस्य बने। इस दौरान मोटिवेशनल स्पीकर राहुल कपूर (जैन), **'थव-थुई-मंगलं'** की मधुर गायिका अल्का जी डागा, वीर परिजनों, संघ पदाधिकारियों, 'अभिरामम रत्नम्' प्रतिभागियों के परिजनों आदि के साक्षात्कार लिए गए।

ग्लोबल कार्ड : इस हेतु 40 से अधिक जनों ने जिज्ञासाएँ प्रकट कीं, जिनके डाटा अपडेट किए गए एवं 4 परिवारों ने ग्लोबल कार्ड जारी करने हेतु आवेदन किया।

इदं न मम, जीवदया, दानपेटी, विहार सेवा, छात्रवृत्ति, एवं सर्वधर्मी सहयोग आदि में प्रभुत दानराशि का सहयोग मिला।

जैन संस्कार पाठ्यक्रम : नोखा के त्रिदिवसीय कार्यक्रम में हजारों लोगों ने साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड की स्टॉल का विलोकन किया। 92 जनों ने जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा हेतु आवेदन किया। **'समता चैत्र एक्टिविटी'** बुक तैयार करने वाली टीम के 15 सदस्यों का सम्मान-पत्र प्रदान कर स्वागत किया गया।

समता संस्कार पाठशाला : पाठशाला के बच्चों द्वारा सचित्त-अचित्त, सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन संस्कार,

व्यसनमुक्ति, पाठशाला आपके द्वार, नानेश-रामेश चालीसा, 24 तीर्थंकरों इत्यादि पर मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं। स्टॉल पर नवीन पाठशाला संचालन सहित विभिन्न विषयों पर जानकारी उपलब्ध कराई गई। इस दौरान बच्चों के ज्ञानार्जन के लिए प्रकाशित पुस्तक **'समता चैत्र भाग 1, 2, 3'** की एक्टिविटी बुक का विमोचन संपन्न हुआ।

साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम के लिए 6 नए सदस्यों ने पंजीकरण करवाया। गुणशील हेतु 5 रजिस्ट्रेशन हुए। समता समता सर्वमंगल के 18 संकल्प-पत्र भरे गए।

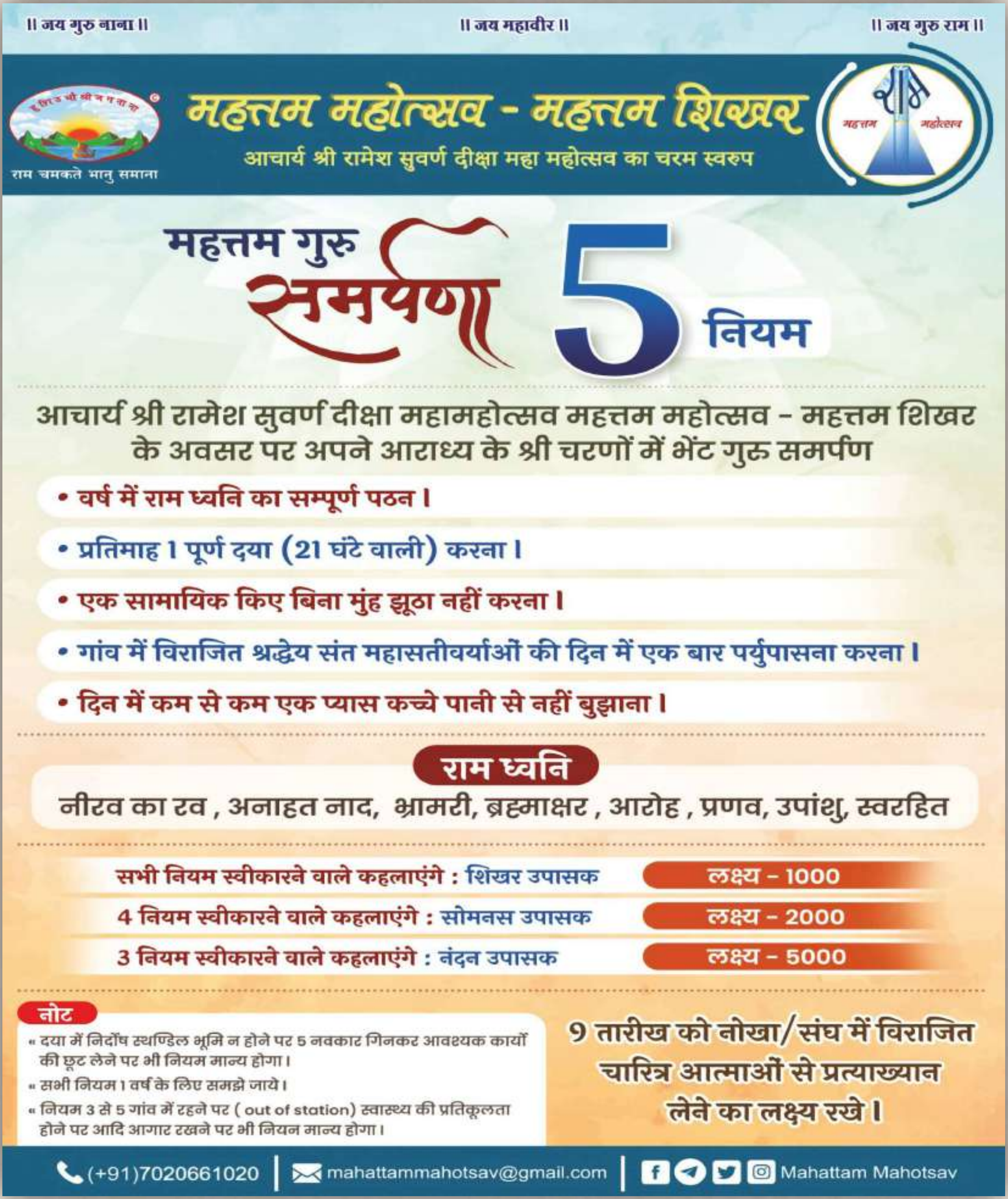

महत्तम शिखर महोत्सव में नारीशक्ति की गूँज

7-8-9 फरवरी 2025, नोखा मंडी (राज.) | परमागम रहस्यज्ञाता, जिनशासन प्रद्योतक, व्यसनमुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की स्टॉल का शुभारंभ थर्मोकॉल से निर्मित एक शानदार लोगो आकृति से हुआ, जिसमें समिति के हाथ के लोगो की संरचना को दर्शाया गया। यह सुंदर रचना न केवल देखने में मनमोहक थी, बल्कि संगठन की एकजुटता और समर्पण का प्रतीक भी बनी।

★ **'सज्झायम्मि रओ सया'** (सदा स्वाध्याय में रत रहो) के अंतर्गत माचिस की खाली डिब्बियों एवं थर्मोकॉल से 32 आगम ग्रंथों का अद्भुत एवं कलात्मक प्रस्तुतिकरण किया गया। यह प्रोजेक्ट इतना आकर्षक था कि दर्शनार्थियों की नजरें उस पर ठहर गईं और वे मंत्रमुग्ध होकर इसकी सराहना करते रहे। इस हेतु 207 नए फॉर्म (ऑनलाइन एवं ऑफलाइन) भरे गए।

★ युवती शक्ति के अंतर्गत 12 वर्ष से अधिक आयु की अविवाहित 70 युवतियों ने पंजीकरण करवाया। बीकानेर-मारवाड़ अंचल की युवतियों द्वारा 50 चार्ट तैयार किए गए। इसी के साथ कई रोचक गतिविधियाँ आयोजित की गईं, जिनमें 'जय गुरु नाना, जय गुरु राम', सामान्य ज्ञान, जैन सिद्धांत बत्तीसी तथा आचार्यश्री की जीवनी पर प्रश्नोत्तरी आदि शामिल थीं। स्टॉल पर एक सेल्फी पॉइंट भी बनाया गया। प्रतियोगिता के विजेताओं को जैन सिद्धांत बत्तीसी के प्रेरणादायक उद्धरण, युवती शक्ति के बैज तथा स्टॉल पर सेवाएँ देने वाली युवतियों को युवती शक्ति के प्रतीक चिह्न वाले टॉट बैग भेंट किए गए।

★ संगठन के अंतर्गत स्टॉल को केसरिया गणवेश से भव्यता प्रदान की गई। समता भवन का एक सुंदर स्वरूप में केसरिया गणवेश को अत्यंत आकर्षक एवं प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया गया। महिलाओं को नई गतिविधि आनंदिनी से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया तथा महिला समिति के अंतर्गत आने वाले सभी आयामों की प्रभावना की गई।

★ समता छात्रवृत्ति के अंतर्गत बच्चों को आकर्षित करने हेतु रेलवे स्टेशन एवं सड़क मानचित्र की थीम पर एक अत्यंत सुंदर और प्रभावशाली प्रोजेक्ट तैयार किया गया, जिसने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा। बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाने के उद्देश्य से दो विशेष गतिविधियाँ आयोजित की गईं,

जिनमें भाग लेने वाले बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप आकर्षक उपहार भेंट किए गए।

- ✶ केसरिया कार्यशाला के अंतर्गत साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम, प्रतिक्रमण, सर्वधर्मी सहयोग आदि विभिन्न प्रवृत्तियों की प्रभावना मॉडल्स द्वारा की गई।
- ✶ **पुस्तक विमोचन :** महिला समिति द्वारा एक पुस्तक विमोचन समारोह में **'धम्माणुरागरत्ता'** एवं **'सज्झायम्मि रओ सया'** (सदा स्वाध्याय में रत रहो) पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर अनेक राष्ट्रीय पदाधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इन पुस्तकों के माध्यम से स्वाध्याय और धर्मानुरागता के महत्त्व को प्रेरणादायक रूप में प्रस्तुत किया गया।

त्रिदिवसीय कार्यक्रमों में सभी प्रवृत्तियों को अत्यंत आकर्षक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया। दर्शनार्थियों की सुविधा के लिए समिति से जुड़ने हेतु ऑनलाइन (QR कोड) और ऑफलाइन, दोनों विकल्प उपलब्ध कराए गए। रंग-बिरंगी झाँकियों एवं रचनात्मक प्रोजेक्ट्स के माध्यम से समिति की विविध प्रवृत्तियों को ऐसा प्रभावशाली रूप दिया गया कि हर दर्शक मंत्रमुग्ध हो उठा।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

राष्ट्रीय अध्यक्षा (सत्र 2025-2027) मनोनयन हेतु सूचना

हमारे गौरवशाली संघ की महिला समिति की वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा जी मेहता का कार्यकाल आसोज सुदी 2, दिनांक 23 सितंबर, 2025 को पूर्ण होने जा रहा है। अतः आगामी सत्र 2025-2027 हेतु इस पद के लिए संघ समर्पित, सेवा भावना से ओत-प्रोत सुश्राविका, जो श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति की सदस्या हों, उनके नामांकन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इस पद के लिए आप अपना अथवा अन्य किसी सुज्ञ महिला समिति सदस्या का नाम प्रस्तावित कर सकते हैं। कृपया अपना प्रस्ताव दिनांक 31 मार्च, 2025 से पूर्व निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें –

नरेन्द्र गांधी

राष्ट्रीय अध्यक्ष – श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ

37, जवाहर मार्ग, कृषि उपज मंडी के सामने, नीमच रोड, पो. जावद, जिला नीमच-458330 (म.प्र.)

Mo.: 9425108224 (WhatsApp), Email : president@sadhumargi.com

– राष्ट्रीय महामंत्री, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

भक्ति रस

शिखर की गूँज

संयम का रोशन रास्ता, नहीं कंकरीला है,

कहते गुरुवर...

लक्ष्य प्राप्ति का यह अवसर निराला है,
संसार में क्या दुःख कम हैं?
संयम का सुख विशाला है।
आनंद से चलते चलाते उस डगर पर,
पचास/पच्चीस के आँकड़े मानो गणित के सवाला हैं।।

पचास वर्षों में 22 परीषहों से परिपूर्ण यह निर्जरा पथ अपनाया है,
स्वर्णिम महीनों में अष्ट माताओं के वात्सल्य को पाया है।
सुनहरे दिवस-रातों में स्वयं को आत्मसात कर साधनारत बनाया है,
हर घंटे, हर पल, हर समय को, संघ के स्वर्णिम भविष्य को, उत्तरोत्तर गतिमान बनाया है।।

स्वयं चले, हमें चलाया, संघनायक, संघ मालिक के चरणों में हमने शीष नमाया है,
संघ के प्रति समर्पण को, आपश्री जी ने शब्दों से सजाया है।
धर्म पर श्रद्धा का पथ भी आलोकित कर दर्शाया है,
जिन नहीं पर जिन सरीखे गुरु राम का सौम्य व्यक्तित्व मन भाया है।।

श्री रामेश चालीसा के छंदों से क्या अंतर तार बजाया है!
क्या हमारे लहू के कतरों में राम नाम समाया है?
श्रावक-श्राविकाओं का सैलाब उमड़ा जो, मरुधर की माटी से सामने से रंग आया है।
गुरुभक्ति में जनमानस का आतम जो भरमाया है,
एक नजर, एक शब्द, एक मंगल वाक्य को मन में जमाया है,
क्या लौटकर जब आए, तब उन सुनहरे पलों के रसायन को पचाया है?

मनाया हमने महत्तम, नंदन, सोमनस, शिखर पर परचम लहराया है,
अनेक भव्यात्माओं ने अपने नाम के आगे राम भी लगवाया है।
अनोखी नगरी के धोरों के कण-कण को राम नाम से गुँजाया है,
क्या संघ के प्रत्येक जन के रोम-रोम में राम नाम समाया है?
पूछें स्वयं से कि क्या सर्वस्व झोंककर हमने 'महत्तम महोत्सव' मनाया है?

- राष्ट्रीय महामंत्री (श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति)

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

महत्तम ग्रैंड फिनाले : संघीय एकता और आध्यात्मिक समर्पण का भव्य उत्सव

नोखामंडी में 7 से 9 फरवरी तक आयोजित महत्तम ग्रैंड फिनाले में साधुमार्गी जैन समाज की आध्यात्मिक और संगठनात्मक शक्ति को भव्य रूप से प्रदर्शित किया गया। इस तीन दिवसीय महोत्सव में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति के साथ समता युवा संघ द्वारा भी विविध प्रवृत्तियों को दर्शाने हेतु आकर्षक स्टॉल्स लगाई गईं। इन स्टॉल्स पर युवा संघ की गतिविधियों की संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर आगंतुकों ने हर्षानुभूति व्यक्त की।

50वें दीक्षा महोत्सव के गौरवशाली क्षण :

यह भव्य आयोजन परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के 50वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में हुआ, जिसमें तीन दिवस में 25,000 से अधिक गुरुभक्तों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। प्रतिदिन हज़ारों श्रद्धालु स्टॉल्स का अवलोकन करने पहुँचे, जिनका युवा कार्यकर्ताओं ने मार्गदर्शन किया।

संघ की प्रवृत्तियों का प्रभावशाली प्रदर्शन :

आकर्षक बैनर और स्लोगन बोर्ड्स के माध्यम से युवा संघ की विविध गतिविधियों को प्रस्तुत किया गया। स्टॉल्स में प्रवेश करते ही युवा संघ के गौरवशाली इतिहास की झलक मिलती। विशेष रूप से **'समता-स्वाध्याय-सेवा'** के मूलमंत्र को केंद्र में रखकर स्थापित समता युवा संघ की यात्रा को दर्शाया गया।

मुख्य आकर्षण : विविध प्रवृत्तियों की जानकारी

1. समता शाखा : आध्यात्मिक आराधना का वैश्विक प्रभाव

समता आराधना का 863 क्षेत्रों में सफलतापूर्वक आयोजन किया गया है। विश्व के मानचित्र पर इन आराधना स्थलों को दर्शाते हुए संघ के विशाल आध्यात्मिक परिक्षेत्र को सरलतापूर्वक प्रस्तुत किया गया।

2. धार्मिक प्रवृत्ति : युवाओं में आध्यात्मिक चेतना

समता युवा संघ द्वारा आयोजित धार्मिक प्रतियोगिताएँ, शुभ दिवसों पर तप-त्याग की प्रेरणा तथा अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रमों के प्रभाव एवं उपलब्धियों को आकर्षक ढंग से दर्शाया गया।

3. उत्क्रांति : एक आध्यात्मिक परिवर्तन की पहल

उत्क्रांति अभियान के तहत कई परिवार और ग्राम उत्क्रांतियुक्त घोषित किए गए। उत्क्रांति 3D बैनर और प्लेट के माध्यम से इस क्रांतिकारी आयाम एवं समाज उत्थान में इसके प्रभाव की जानकारी दी गई। इससे प्रेरित होकर कई भाई-बहनों ने उत्क्रांति के नियम अपनाने का संकल्प लिया।

4. व्यसनमुक्ति : सामाजिक बुराइयों के खिलाफ एक पहल

समाज में कुव्यसनों के दुष्प्रभाव को बैनर और प्रदर्शनी के माध्यम से प्रस्तुत कर आगतजनों को जागरूक किया गया। बड़ी संख्या में लोगों ने व्यसनमुक्ति संकल्प-पत्र भरकर स्वस्थ जीवनशैली की ओर कदम बढ़ाया।

5. सामाजिक सेवा : संघ की परोपकारी प्रतिबद्धता

समता युवा संघ मूलतः एक धार्मिक संघ है, जो समाज के प्रति अपने दायित्व को बखूबी समझता है एवं अनेक सामाजिक सेवा कार्यों से अपने दायित्व का निर्वहन करता है। संघ ने रक्तदान, अन्नदान, जीवदया, आरोग्यम् और अमृतम् जैसी सामाजिक सेवाओं को उजागर किया। इस काउंटर पर स्क्रैबल-बोर्ड गेम के माध्यम से युवाओं को सामाजिक कार्यों में अग्रणी होने हेतु प्रेरित किया गया।

6. तरुण शक्ति : संघ का भविष्य

तरुण युवाओं के व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास हेतु 12 से 18 वर्ष के किशोरों को तरुण शक्ति से जोड़ने की प्रेरणा देते हुए अनेक कार्यक्रमों की जानकारी प्रस्तुत की गई। इस प्रवृत्ति के तहत तरुण युवाओं में आत्मबल और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए प्रेरक संदेश और कई गतिविधियों का आयोजन किया गया।

7. आध्यात्मिक कार्यशाला :

तीनों ही दिवस चारित्रात्माओं के सान्निध्य में अनेक आध्यात्मिक कार्यशालाओं का आयोजन हुआ, जिनमें सैकड़ों युवाओं ने इनसे जुड़कर आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त की।

संघीय एकता और समर्पण का प्रतीक

महत्तम ग्रैंड फिनाले सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि यह संघ की एकता, परंपरा और आध्यात्मिकता का अद्भुत संगम बना। इस आयोजन ने सिद्ध कर दिया कि साधुमार्गी समाज न केवल अपनी धार्मिक आस्थाओं में अडिग है, बल्कि सामाजिक उत्थान और युवा जागरूकता की दिशा में भी निरंतर अग्रसर है।

SABSJS - S2S Connect :

साधुमार्गी समाज के व्यापार, प्रोफेशन और करियर विकास के लिए एक अभिनव पहल के रूप में सामाजिक प्रकल्पों के अंतर्गत S2S Connect (साधुमार्गी टू साधुमार्गी कनेक्ट) ऐप को लॉन्च किया गया है। यह ऐप साधुमार्गी प्रोफेशनल्स और व्यापारियों के लिए एक विशिष्ट डिजिटल मंच उपलब्ध कराता है। इस ऐप का उद्देश्य व्यवसाय और करियर में नई प्रतिभाओं को जोड़कर साधुमार्गी समाज को नए अवसरों की ओर अग्रसर करना है।

भव्य लॉन्चिंग समारोह :

इस अनूठे प्लेटफॉर्म का शुभारंभ 8 फरवरी 2025 को भट्टड़ स्कूल, नोखा में हुआ। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति में ऐप की लॉन्चिंग की।

मुख्य विशेषताएँ :

* व्यवसाय और पेशेवरों के लिए नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म * व्यक्तिगत और व्यावसायिक प्रोफाइल निर्माण की सुविधा * प्रासंगिक कनेक्शन बनाने और सहयोग बढ़ाने का अवसर * नए विचारों और व्यावसायिक प्रस्तावों को साझा करने की सुविधा * सुरक्षित, प्रमाणित और उपयोगकर्ताओं के अनुकूल इंटरफेस

इस एंड्रॉइड ऐप को गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है, जिसका QR कोड आपकी सुविधा के लिए यहाँ दिया जा रहा है। ऐप से जुड़ी जानकारी व किसी भी समाधान के लिए वॉट्सऐप हेल्पलाइन नंबर 9636501008 पर संपर्क कर सकते हैं।

संस्कार सौरभ

अद्भुत अलौकिक अविस्मरणीय

- राष्ट्रीय अध्यक्ष
(श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ)

नोखा में दिनांक 7-8-9 फरवरी 2025 को मैं जिन पलों का साक्षी बना उन पलों को शब्दों में उकेरना मेरे लिए शक्य नहीं है। क्योंकि जितना विशाल, जितना नयनाभिराम, जितना अलौकिक, जितना अविस्मरणीय, जितना अद्भुत, जितना संयमवान वह नजारा था, उसे केवल और केवल महसूस ही किया जा सकता था। उन दिनों के बाद मैं जब भी चिंतन करता हूँ तो सोचता हूँ कि इतना बड़ा आयोजन पूर्ण व्यवस्थित पूर्ण से संपन्न होना लगभग असंभव ही था, लेकिन इसे आचार्य भगवन् का अतिशय कहूँ, उनकी कृपा कहूँ या भक्तों की भक्ति कहूँ, जिससे ये अद्भुत कार्यक्रम अविश्वसनीय आह्लाद एवं नोखा को वास्तव में अनोखा निरूपित करते हुए संपन्न हो गया।

नोखा का वातावरण एक अद्भुत आध्यात्मिक ऊर्जा से भर चुका था। पूरा नगर और पंडाल संयम और भक्ति के रंग में रँगा हुआ था। 9 फरवरी, माघ सुदी बारस का वह स्वर्णिम दिवस जब युगपुरुष आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के संयम जीवन के 50 वर्ष पूर्ण होने जा रहे थे। यह केवल एक सुवर्ण दीक्षा दिवस नहीं, बल्कि एक उत्कृष्ट संयम युग का आध्यात्मिक दर्शन था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सूर्यदेव को भी इस पावन अवसर पर उपस्थित होने की जल्दी थी।

संयम की गूँज और भावों की धारा

इस ऐतिहासिक अवसर की शुरुआत पहले ही हो चुकी थी। 7 फरवरी 2025 को जब सात वैरागी संयम पथ पर आगे बढ़ रहे थे, तब पूरा पंडाल *'अहो संयम'* के नाद से गूँज उठा। जैसे ही दो और वैरागी भाई दीक्षा हेतु पंडाल उपस्थित हुए तो श्रावक-श्राविकाओं की जय-जयकार के रूप में भावाभिव्यक्ति केवल और केवल महसूस ही की जा सकती थी। **'जय-जयकार जय-जयकार, राम गुरू की जय-जयकार'** से पूरा वातावरण गूँज उठा। यह एक संयमी दिव्य यात्रा के पदचाप का विस्तार था, जिसने सभी को भक्ति और त्याग के सागर में डुबकी लगाने का अवसर दिया।

8 फरवरी को श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ रही थी। स्वर्णिम दिवस के ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बन अपने जीवन में एक नई आध्यात्मिक ऊर्जा पाने के लिए हजारों हृदय भावातुर हो उमड़ रहे थे। आध्यात्मिक ज्ञानशालाओं के माध्यम से लोग संयम, साधना और आत्मशुद्धि की ओर अग्रसर हो रहे थे। जब संघ के मंच पर महत्तम महोत्सव के 31 माह के अनुभव साझा किए गए तो हर भक्त का मन भावविभोर हो गया। क्या बड़ा, क्या छोटा, क्या युवा, क्या तरुण, हर किसी ने इस यात्रा में एक नया आध्यात्मिक प्रकाश पाया। देशभर के प्रबुद्धजनों ने भी संयम, त्याग और ध्यान के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए अपने भाव संघ तक पहुँचाए।

स्वर्णिम दिवस 9 फरवरी का ऐतिहासिक क्षण

और फिर वह विशेष दिवस आया, जब पूरे नोखा का वातावरण एवं कण-कण आचार्य भगवन् के संयमी जीवन के 50 वर्षों की गौरवमयी यात्रा का साक्षी बना। हजारों श्रद्धालु सामायिक वस्त्रों में, मन में भक्ति और आँखों में आस्था का प्रकाश लिए पंडाल में विराजमान थे। जब भगवन् अपनी विशाल शिष्य संपदा के साथ प्रवचन स्थल पर पधारे, तो पूरा वातावरण **'पधारज्ये घणी खम्मा'** के आत्मिक उद्बोधन के साथ भक्ति के सागर में डूब गया।

साधुवृंद एवं साध्वीवर्याओं ने अपने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता और भक्ति की भाव लड़ी अर्पित की। सभी अपनी भावनाएँ विस्तार से व्यक्त करना चाहते थे, लेकिन समय सीमित था। फिर भी भावों का पिटारा ऐसा खुला कि आत्मा को परमात्मा के साक्षात् दर्शन होने लगे। पाँच घंटे कैसे बीत गए, किसी को आभास भी नहीं हुआ। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो यह प्रवाह निरंतर चलता रहे, अनंत तक चलता रहे।

महत्तम जिज्ञासा : जब भगवन् ने दिए समाधान

इस उत्सव का एक और अद्भुत एवं अलौकिक पड़ाव आया **'महत्तम जिज्ञासा'** के रूप में। यह वह क्षण था जब भक्तों को अपने भगवान से अपनी जिज्ञासाओं के समाधान पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हर श्रद्धालु के हृदय में उत्सुकता थी, मन में असीम श्रद्धा थी। जब भक्तों ने अपने गुरुदेव से उनके जीवन के हर पहलू और आत्मिक अनुभवों को लेकर प्रश्न किए तो पूरा पंडाल एक विशाल ज्ञानसभा में परिवर्तित हो गया। हर जिज्ञासा में गहरी जिज्ञासा थी और हर समाधान में वह सरलता, सटीकता व वात्सल्यता थी, जिसने सभी को आनंद और संतोष से भर दिया।

आचार्य भगवन् के समाधान इतने सहज, सरल और सारगर्भित थे कि मानो अनुभवों का अमृत बह रहा हो और हर भक्त उससे अपने भीतर नई ऊर्जा का संचार कर रहा हो। यह जिज्ञासा और समाधान का अद्वितीय संगम था। यह पल ऐसा था मानो उपस्थित जनसमूह के मन में आनंद का सैलाब उमड़ पड़ा हो।

संयम और तप की महिमा

हर श्रद्धालु का मन अपने इस जीवन को धन्य मान रहा था। इस पावन दिवस पर हजारों हृदय एकसाथ एक ही धुन में धड़क रहे थे। सबने तप, त्याग, ध्यान और ज्ञान के प्रत्याख्यानों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लिया। संयम जीवन के इस अद्वितीय उत्सव में हर व्यक्ति आत्मा के उत्थान और आध्यात्मिक वृद्धि की राह पर अग्रसर हो गया।

कोई कह रहा था कि 12,000 श्रद्धालु उपस्थित थे, तो कोई 15,000 की संख्या बता रहा था। लेकिन संख्या मायने नहीं रखती, क्योंकि यह उत्सव किसी गिनती का विषय नहीं था। यह तो अध्यात्म के महासागर में डूब जाने का अवसर था। पूरे भारतवर्ष में इस स्वर्णिम दिवस की पावन गूँज सुनाई दी।

धन्य जिनशासन, धन्य आचार्य भगवन्

वे क्षण जिनशासन की गौरवगाथा का प्रतीक बन गए। भगवान महावीर के शासन के कुशल सारथी आचार्य भगवन् के संयमी जीवन के 50 वर्षों की यह यात्रा केवल उनका व्यक्तिगत सफर नहीं थी, ये तो सैकड़ों आत्माओं को संयम में आरूढ़ करने का पर्व था। यह हजारों भक्तों की आत्मिक जागृति का पर्व था।

'अहो संयम! अहो संयम!' की गूँज में पूरा वातावरण पुलकित हो गया। श्रद्धालु भक्ति और त्याग की इस अद्वितीय यात्रा के साक्षी बनकर स्वयं को सौभाग्यशाली मान रहे थे। धन्य है यह जिनशासन, धन्य है यह हुक्मसंघ और धन्य है संयम जीवन के 50 वर्षों से जिनशासन आलोकित करने वाले आचार्य भगवन्!

जय-जयकार, जय-जयकार, राम गुरु की जय जयकार!

संयम, साधना और भक्ति का यह पर्व युगों-युगों तक अमर रहेगा।

मोटिवेशनल स्पीकर राहुल जी कपूर (जैन), बेंगलुरु

(महत्तम अहोभाव)

जिज्ञासा - **आप यहाँ ये क्या ग्रहण करके ले जाना चाहेंगे, जो आपको लगता है कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का वो गुण या आपने यहाँ जो माहौल देखा उसकी कोई विशेष बात, जिसे आप अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करना चाहेंगे।**

उत्तर - सादगी, जो बहुत ही साफ दिखाई देती है। तीन प्रकार का कॉन्सेप्ट था। आचार्य भगवन् बात कर रहे थे भीतर के जगत की। उपाध्याय प्रवर ने बात की तो संक्षिप्त में और श्री आदित्य मुनि जी म.सा. लोगों के प्रयोगात्मक मुद्दों पर फरमा रहे थे। यानी कि एक जगह पर सादगी की बात और दूसरी जगह सारे के सारे मर्यादित तत्वों की बात, इन दोनों का सामंजस्य था। मगर मैं यदि यहाँ से कुछ लेकर जाना चाहता हूँ, कुछ ग्रहण करना चाहता हूँ तो वह है बाहर की दुनिया में फिजूलखर्च– समय, पैसा, एनर्जी या कुछ और व्यर्थ नहीं करना। उससे अच्छा है कि भीतर के जगत में ज्यादा विनियोग करें। बाहर के जगत की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया गया सब कुछ व्यर्थ है। क्यों न हम सादगी से जीकर अपने धर्म की प्रभावना कर सकते हैं, ये बहुत बड़ी उपलब्धि है मेरे लिए।

जिज्ञासा - **आपका मोटिवेशन स्पीच माता-पिता, गुरु एवं परिवार आदि पर विशेष आधारित होता है। इसके अलावा अन्य बहुत की विषय हैं जिन पर भी स्पीच दी जा सकती है, मेंटोर बनकर। आपका झुकाव इस ओर ज्यादा क्यों है?**

उत्तर - जो भी अन्य विषय आपने कहे उन सबका एक बेस होता है। बेस होता है कमिटमेंट– संकल्प, जो आचार्य भगवन् के जीवन में है। वो दृढ़ निश्चय, वो संकल्प बनता कहाँ से है। उनकी शुरूआत एक इनसान कहाँ से देखता है। जब वो इनसान अपनी माँ की कोख में है तब से वो कमिटमेंट की ओर है यानी कि माँ बच्चे को 9 माह कमिटमेंट के रूप में अपने गर्भ में रखती है। जब बच्चे का जनम होता है तो क्या पता माँ जीएगी या मरेगी! कितना दर्द! ये रिस्क, ये निर्णय क्षमता, ये संकल्प फिर कौन आगे लेकर जाता है? पिता। पिता नान–स्टॉप हमें प्यार, मार्गदर्शन, दिशानिर्देश देते हैं। तो वास्तव में जो हम कार्यक्रम में करते हैं उसके जो मूल्य हैं वो तो हमें माता–पिता ही देते हैं। मगर हमारे अंदर देखने को विजन होता नहीं है। हमें तो लगता है कि ये तो उनका कर्तव्य था। लेकिन उस कर्तव्य में जो हमने नहीं देखा, वो विजन हमारे अंदर नहीं है। विजन को अगर आप देख लो तो पता चले कि माँ ने कितना त्याग किया है।

मैंने ये विजय यहाँ से पकड़ा कि मेरे पापा कैंसर से पीड़ित थे। हॉस्पिटल में एडमिट थे और मेरे एक्जाम चल रहे थे। इसी दौरान उनका ऑपरेशन हुआ और कुछ दिनों पश्चात् उनका निधन हो

गया। इससे आहत होकर मैं डॉक्टर से चर्चा करने के लिए जाने लगा कि आपने कहा था कि मेरे पापा ठीक हो जाएंगे, फिर मरे कैसे? फिर मेरी कजन बहन ने मुझसे कहा कि आपके पापा ने कहा था कि एक बार राहुल गलती करके फैल हुआ था, लेकिन अब वो सुधार करके आगे बढ़ रहा है। इस बार मेरी मृत्यु के कारण वो फैल नहीं हो जाए। तब मुझे पता चला कि एक संकल्प इनसान जब लेता है तो मृत्यु के साथ भी अपने पुण्य व पाप के कर्मों के साथ लड़कर पुरुषार्थ के साथ अपने बच्चे के लिए कुछ भी कर सकता है। तब मैंने प्रण किया कि मैं पापा का नाम रोशन करने के लिए उसी प्रकार मेहनत व संकल्प करूं जैसे पापा ने मेरे लिए किया और वही सब में दूसरों को दे पाऊं।

कुछ मुख्य बात – 1. माता–पिता हमको हर जन्म में मिलते हैं, लेकिन ये ही माता–पिता हर जन्म में मिले ये संभव नहीं है। इसलिए उनके मान–सम्मान से कोई समझौता नहीं करें। 2. माता–पिता के होना हमारे लिए महत्वपूर्ण है। यदि वे नहीं है तो हम जीवन को अच्छे से जी ही नहीं पाएंगे। 3. माता–पिता के ऊपर भी एक भूमिका होती है, वह होती है गुरु की। क्योंकि माता–पिता हमें संसार में लाते हैं, संसार में जीना सिखाते हैं। मगर जो गुरु हमें संसार के इस भवचक्र से निकालने के लिए मेहनत करते हैं। एक सच्चे गुरु की संगत में रहकर अपने इस भव और भव–भवांतर को सुधारना है।

जिज्ञासा - **नोखा बहुत छोटी जगह है, फिर भी यहाँ इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में हजारों गुरुभक्तों का आगमन हुआ है। इसके बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?**

उत्तर - गुरु गौतम स्वामी का अष्टापद का उदाहरण है कि वे इतने सारे साधु–साध्वियों को कहाँ से पारणा कराएंगे। इसलिए जब गुरु का आशीर्वाद होता है तो उसे चमत्कार नहीं कहते, उसे कहते है सिद्धि प्राप्त होना। नोखा में भी वही बात हुई। वहाँ पर महावीर और उनके साथ गुरु गौतम और यहाँ पर नाना गुरु और उनके साथ आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा.। जब गुरु आशीर्वाद हो और शिष्य कुछ करना चाहे तो हर बात संभव है। जो 2700 वर्ष पहले हुआ था, वही चीज यहाँ नोखा में हुई और हम सब उसके साक्षी बने। जिस कार्य का उद्देश्य सर्वजन हिताय – सर्वजन सुखाय हो वह कार्य अवश्य ही सफल होता है। नोखा के गुरुभक्त स्व–हितों से ऊपर उठकर लग गए सेवा में और दुनियाभर से लोग आकर उनके साथ जुड़ते गये। ये स्व–हितों से ऊपर उठना सिर्फ और सिर्फ आध्यात्मिक जगत में ही संभव है।

मधुर गायिका अल्का डागा, बीकानेर

(थव–थुई–मंगलं)

जिज्ञासा - **आप द्वारा प्रस्तुत भक्ति से आप जन-जन में गुरुभक्ति का प्रभाव महसूस कर पाती हैं, इससे आपको कैसा महसूस होता है?**

उत्तर - हम लोग बहुत ही सौभाग्यशाली है कि हमें दृढ़ संयमी, गुरुनिष्ठ साधक महापुरुषों का पावन सान्निध्य मिला है। आपश्री के चिंतन में आपकी उच्च साधना का परिणाम परिलक्षित होता है। मेरा

'आत्मा में लीन' नामक एक ट्रैक है। उस भजन भजन के एक–एक शब्द में महापुरुषों की साधना झलकती है। हम तो निमित्त मात्र हैं कि हम उन उच्च विचारों व चिंतनों को श्रोताओं में उतार पाते हैं। बहुत से छोटे–छोटे बच्चों का कॉल आता है कि हम आपका फलां–फलां संगीत सुनकर ही सोते हैं। तब मैं गौरवान्वित होती हूँ कि नौनिहालों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है। यही आचार्यदेव का चिंतन है कि भावी पीढ़ी संस्कारित हो, जो कहीं न कहीं प्रकट हो रहा है।

जिज्ञासा - नोखा में आयोजित थव थुई मंगलम् के सफलतम आयोजन के बारे में आप क्या महसूस करते हैं?

उत्तर - मुझे लगता है कि यह गुरु गुणानुवाद का सामूहिक आयोजन था। इससे आत्मिक चेतना का प्रस्फुटन स्वतः ही हो रहा था। मैंने प्रारंभ की लाइनों का गान प्रारंभ किया और सभी श्रोता स्वतः ही गायक बनकर उसमें उतरते गए। यह गुणगान रूपी भक्ति एक विशेष अनुभव बन गई। हम अपने चैनल पर कभी भी अपना चेहरा नहीं दिखाते। बहुत से लोग तो हमें जानते ही नहीं, लेकिन ये संतुष्टि भरा अहसास है कि लोग 'थव–थुई–मंगलं' को जानते हैं और यही भक्ति का माध्यम बनता जा रहा है। यह आत्मविभोर होने जैसा है। यह सब गुरुकृपा से ही संभव है। हमारी 21 लोगों की कोर टीम थी। इसके अलावा हमारे टेक्निशियन्स आदि भी साथ में बैठे थे। विशेषतौर पर कोलकाता से भी कई भाई मेरे साथ आए कोरस टीम के लिए। यह सब टीम वर्क का ही परिणाम है। मैं अकेली कुछ भी नहीं हूँ।

जिज्ञासा - आचार्य भगवन् के 50वें दीक्षा दिवस पर आपके विचार।

उत्तर - 'उमड़–घुमड़ के बरसो मेघा' भजन को 9 फरवरी को लॉन्च किया गया था, जिस दिन आचार्य भगवन् की दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हुए थे। हमारी टीम नोखा में गुरुचरणों में उपस्थित हुई। सभी का आचार्य भगवन् से परिचय हुआ वे सभी ये जानकर दंग गए कि जिन कृपानिधान आचार्य प्रवर की हम भक्ति कर रहे हैं उनका अलौकिक तेज जीवन धन्य बनाने वाला है। आचार्य भगवन् के समक्ष एक भजन को प्रस्तुत करते हुए हमने वहाँ दिव्य ऊर्जा का आलोक महसूस किया। 'उमड़–घुमड़ के बरसो मेघा' का ट्रैक आचार्यदेव को सुनाने की मेरी बहुत इच्छा थी, लेकिन भगवन् तो भगवन् ही हैं। उनको खुद की महिमा सुननी पसंद ही नहीं है। वे तो कहते हैं कि भक्ति करनी ही है तो तीर्थंकरों, पूर्वाचार्यों आदि के गुणानुवाद सुना दो। वे कभी खुद का गुणानुवाद नहीं सुनते। बड़ी मुश्किल से वाचनी के समय एक भजन की अनुमति मिली, जिसमें भी भगवन् ने फरमाया कि मेरा नाम नहीं होना चाहिए। 5 फरवरी को 'उमड़–घुमड़ के बरसो मेघा' भजन हमने आचार्य भगवन् के समक्ष प्रस्तुत किया, लेकिन भगवन् तो निर्लेप भाव से सुन रहे थे। उनके भावों में कोई उच्चावचन नहीं आया, कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। आचार्य भगवन् के 50वें दीक्षा दिवस पर मैं यही कहना चाहूँगी कि थोड़ा–सा नाम हो जाने पर हम मान में आ जाते हैं, लेकिन आचार्यदेव को इस बात से कोई सरोकार नहीं की कोई उनकी प्रशंसा करे या न करे। जिस दिन हमारे भीतर भी ऐसा गुण आ जाएगा, तब हम भी मान–सम्मान से ऊपर उठ सकते हैं।

वीर पिता मुकेश जी-वीर माता ललिता जी सांखला, डौंडीलोहारा (मुमुक्षु बहन राखी जी सांखला)

कोरोना काल में साधु-साध्वियों का सान्निध्य एवं माता-पिता व समस्त परिजनों द्वारा बचपन से प्रदत्त संस्कारों की धरोहर से मुमुक्षु राखी का धर्म से विशेष जुड़ाव हुआ। आप बचपन से ही दया भावों से ओत-प्रोत थी और बाल्यकाल में ही अपने के जरूरतमंद सहपाठी को अपने टिफिन से भोजन कराने का ध्यान रखती थी। संसार से विलगता के साथ सरलता, सहनशीलता, जीवों के प्रति दया के भाव आप में प्रस्फुटित हुए। इन्हीं सबसे वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ। दीक्षा के भाव ज्ञात होने पर हमने कोई अंतराय नहीं दिया, अपितु 22 परीषह का बोध देते हुए कष्टों के बारे में विस्तार से समझाया। उसका सपना सी.ए. करके प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्य करने का था। उसने एम.कॉम. के साथ-साथ सी.ए. की तैयार प्रारंभ करके आईपीसीसी का ग्रुप प्रथम क्लियर कर लिया था। लेकिन जब से वैराग्य भाव उत्पन्न हुए तब से उसे यही लगता था कि मैं जिस पथ पर गमन करने जा रही हूँ उससे बड़ी ये व्यावहारिक डिग्रियाँ नहीं है। वो अपने निर्णय से पूर्ण संतुष्ट थी। गुरुदेव की महत्ती कृपा और हमारी अटूट आस्था व श्रद्धा से दीक्षा का अध्याय हमारे परिवार के साथ जुड़ा है। इससे बड़ा अतिशय और क्या हो सकता है?

वीर पिता दिलीप जी-वीर माता कविता जी चौरड़िया, बालाघाट (मुमुक्षु भाई विनीत जी चौरड़िया)

चित्तौड़गढ़ में अभिमोक्षम् शिविर, हैदराबाद में उन्नयन शिविर में प्रतिभागिता से विनीत को संसार की असारता का ज्ञान हुआ और यहीं से वैराग्य के भाव प्रस्फुटित हुए। उसके वैराग्य भाव ज्ञात होते ही हमने तुरंत आज्ञा दे दी, क्योंकि पुण्योदय से ऐसा अपूर्व अवसर उपस्थित होता है। हम रिटर्न टिकट सहित दीक्षा साक्षी और आचार्य भगवन् की दीक्षा के 50वें दीक्षा सुवर्ण महोत्सव के साक्षी बनने हेतु नोखा आए थे। प्रात: आचार्य प्रवर से हमने पूछा कि दीक्षा के लिए कौनसा दिवस उपयुक्त है तो आचार्य प्रवर ने फरमाया कि आज का दिन कौनसा खराब है। बस हमने तुरंत ही आज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित कर दिया और आज ही यानी 7 फरवरी 2025 को ही दीक्षा संभव हो गई। कुल मिलाकर संसार का टिकट कैंसल करवाकर मोक्ष का टिकट कन्फर्म करवा लिया। विनीत ने 7 साल की उम्र में प्रतिक्रमण याद कर लिया और 8 साल की उम्र में पर्युषण पर्व पर सामूहिक प्रतिक्रमण करवाया। उसी समय पहला पौषध भी किया। 'आचार्य प्रवर का आदेश होते ही मैं दीक्षा के लिए तैयार हो जाऊँगा' ये भाव थे विनीत के। इससे बड़ा अतिशय और क्या हो सकता है।

महत्तम शिखर के त्रिदिवसीय आयोजन पर गुरुभक्तों के अहोभाव

भगवन् के जीवन पर आधारित 'व्यूविंग आर्ट गैलेरी' का प्रयास बहुत ही अच्छा व सराहनीय रहा। यह भी अच्छी बात थी कि फोन, कैमरा जैसे डिवाइस अंदर ले जाने की मनाही थी। जो आए वह इसे अपनी आँखों में कैद कर ले। यह मर्यादा में नहीं है आचार्य भगवन् के जीवन को लोग मोबाइल में देखे। यहाँ भी संयम जीवन को सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है। इस प्रदर्शनी में आचार्य भगवन् के जीवन को बहुत ही शानदार तरीके से बताया गया है। इसकी जितनी तारीफ की जाए, उतनी ही कम है। **– राष्ट्रीय मंत्री, मध्य प्रदेश अंचल**

इस महामहोत्सव का हिस्सा बनने के लिए मैंने गुरुदेव से विनती की कि आप ही मुझे बुला लो और मैं यहाँ आ पाई। यहाँ का नजारा देखकर मैं दंग रह गई। दीक्षा का नजारा देखकर तो ऐसे भाव उठ रहे थे कि हमारा वह दिन कब धन्य होगा, जब हम भी दीक्षा लेंगे। व्यविंग आर्ट गैलेरी बहुत ही सुंदर है। सभी ने इस पर बहुत मेहनत की है और सारा काम बहुत बारीकी से किया गया है। इससे बच्चों को बहुत ही अच्छे संस्कार मिल रहे हैं।

– किरण पिरोदिया, रतलाम (मध्य प्रदेश)

गुरुदेव की दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित आर्ट गैलेरी में विभिन्न प्रसंगों को बहुत ही श्रेष्ठता से दर्शाया गया। सब कुछ इतना सरल व सहज था कि बच्चों, बुजुर्गों सभी को आसानी से समझ में आ जाता। इस अनोखी रचना के लिए मैं पूरे संघ को धन्यवाद एवं साधुवाद देना चाहूंगा।

– अभय कोठारी, रायपुर (छत्तीसगढ़)

नोखा में अनोखा ही अनोखा हुआ। उसे शब्दों में बयां नहीं कर सकते। पूर्व घोषित 7 के साथ 2 गुप्त दीक्षाएँ एवं होली चातुर्मासिक पर्व से पूर्व ही चातुर्मासों की घोषणा अपने आप में अनोखे प्रसंग बन गये। केन्द्रीय कार्यालय द्वारा किसी विशेष अवसर पर स्टॉल्स लगाने का जो नवाचार किया है, वह संघ एक नए लेवल पर ले जाएगा। 'व्यूविंग आर्ट गैलेरी' में आध्यात्मिकता का अहसास था। **– विकास भूरा, करीमगंज (असम)**

'नोखा बनेगा अनोखा' यह तो मन में तय था। लगभग सभी गुरुभक्त आज की सभा में कुछ अनोखा देखने को आतुर थे। प्रवचन सभा में 9 मुमुक्षु भाई-बहनों के प्रवेश के साथ ही पूरी सभा जय-जयकारों से गूँज उठी। अब मन निश्चित था कि अनोखा हो गया है। जब आचार्य भगवन् ने आगामी चातुर्मास की घोषणा देशनोक संघ के लिए फरमाई तब तो सभी का मन गुरुदेव के प्रति अहोभावों से भर गया।

– ऋषि बुच्चा, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

'अभिरामम् रत्नम्' के प्रतिभागी कुछ बच्चों के माता-पिता के भाव

बच्चे की उपलब्धि से गर्व महसूस हो रहा है। पाठशालाओं के माध्यम से बच्चे ज्ञान-ध्यान, गुरुदेव तथा महत्तम महोत्सव के बारे में ज्ञानार्जन कर रहे हैं। महत्तम महोत्सव के अंतर्गत भी अनेक अच्छी बातें सीखने को मिल रही हैं, जिससे बच्चे की रुचि यह परीक्षा देने की हुई। आंचलिक स्तर पर चयन होने के बाद आज राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षा दी। आगे भी अगर इस प्रकार की धार्मिक परीक्षाएँ एवं प्रतियोगिताएँ होती हैं तो हम चाहेंगे कि बच्चे गुरुदेव व धर्म के बारे में अधिक से अधिक जानें और सीखें। हम चाहते हैं कि बच्चों ने 'अभिरामम्' के माध्यम से जो कुछ भी सीखा है उसको अपने जीवन में उतारें तथा संघ एवं गुरु सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहें।

– शरद जी नवलखा, मनावर

हमारा बच्चा धार्मिक पाठशाला में निरंतर जाता है, वहाँ ज्ञान-ध्यान सीखता है और उसी से वह आगे बढ़ रहा है। अभिरामम् प्रतियोगिता के लिए उसकी तैयारी, पाठशाला के टीचर्स का मार्गदर्शन के साथ उसे घर पर अध्ययन करवाते हैं। संघ के प्रयास सराहनीय व बेहतर हैं। बच्चा धार्मिक गतिविधियों जुड़ा हुआ रहता है। चाहे सर्दी हो या गर्मी, आंधी हो या बरसात वह पाठशाला जाने से नहीं चूकता। यदि बीमार है तो भी पाठशाला जाने को तैयार रहता है। यह सब गुरुदेव की कृपा से ही संभव हो रहा है। **– नितिन मुणत, रतलाम**

नोखा में महत्तम शिखर महोत्सव के अवसर पर विमोचित साहित्य

प्रथम शिष्या की प्राप्ति

संस्कार सौरभ

धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

15-16 फरवरी 2025 अंक से आगे...

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंद कुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंद कँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चरित्र प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

''पुत्ताय सीसाय समं भवित्ता'' जैनाचार्य की इस उक्ति में कितना तथ्य है! कितनी ऊँची बात कही गई है! वास्तव में संसार के क्षेत्र में जो संबंध पिता और पुत्र का है, वही आध्यात्मिक क्षेत्र में गुरु और शिष्य का है। इसके अध्ययन करने के लिए अनुभवयुक्त हृदय की आवश्यकता है। पिता और पुत्र का संबंध तो एक ही जन्म तक रहता है, परंतु गुरु और शिष्य का तो कई जन्मों तक चल सकता है। गुरु एक प्रकाश हैं जो अज्ञानांधकार में पड़े हुए शिष्य को ज्ञान की रोशनी बतलाते हैं। वे ज्ञान का ऐसा अंजन लगाते हैं कि उसके विवेक नेत्र विश्व के स्वरूप का दर्शन करने के लिए खुल जाते हैं। इसी बात को प्रकट करते हुए कहा गया है –

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

अर्थात् जिन्होंने अज्ञानता रूपी अंधकार से भरी हुई आँखों को ज्ञान रूपी अंजन से युक्त सलाई से खोला है, उन गुरुदेव को नमन है।

इस भूमंडल पर नामधारी गुरुओं की कमी नहीं है। जिधर देखो, उधर ही अपनी टोली लिए गुरु लोग फिरते रहते हैं। परंतु इनमें सच्चे गुरु कितने हैं, जो शिष्यों के अज्ञान को दूर करें और भोली-भाली जनता को धर्म का सच्चा रहस्य समझाएँ? शिष्यों पर जादू की लकड़ी फिराकर धन हरण करना और बात है तथा उनके मन को हरण करना दूसरी बात है। कंचन और कामिनी के लोभी गुरु नहीं हो सकते। गुरु वे हैं जो शिष्य के हृदय पर आध्यात्मिकता की छाप डालें। जो अज्ञान रूप रतौंधी को मिटाकर ज्ञान-भानु का प्रकाश कर दें। ऐसे गुरु शिष्य के सद्भाग्य से ही मिलते हैं। यह बात भी सोलहों आने सत्य है कि किसी भाग्यशाली गुरु को ही योग्य शिष्य की प्राप्ति होती है। योग्य गुरु और योग्य शिष्य की अनुपम जोड़ी वस्तुतः सोने पर सुहागे जैसी है।

श्रद्धेय बड़ी आनंद कुमारी जी व छोटी आनंद कुमारी जी का विक्रम संवत् 1962 का चातुर्मास सोजत में ही था। चातुर्मास के बाद की बात है। उस समय क्रांतिकारी, युगद्रष्टा, जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. थांदला में विराजित थे। थांदला की धर्मप्रेमी बहन मूली बाई को पूज्यश्री के प्रभावोत्पादक व्याख्यान सुनकर वैराग्य उत्पन्न हो गया। अंतर् में सच्ची जागृति होने के बाद कोई विरला ही संसार की वासना में फँसता है। संसार को जिसने खतरे की घंटी समझ लिया है, वह ऐसे खतरनाक स्थल में कितने दिन तक रहेगा?

एक दिन अवसर पाकर मूली बाई ने अपना दीक्षा लेने का विचार पूज्यश्री के सामने रख दिया। पूज्यश्री बड़े

चतुर और व्यक्ति की परख करने वाले सच्चे जौहरी थे।

सुनते ही पूछा—''स्पष्ट कहो, तुम्हारा क्या विचार है?''

मूली बाई—''मैं जैन भागवती दीक्षा लेकर अपना कल्याण करना चाहती हूँ। मैंने संयम मार्ग की यात्रा करने का दृढ़ विचार कर लिया है।''

पूज्यश्री—''मार्ग कठिन है, कुछ समझ भी लिया है या यों ही सनक में आकर कह रही हो?''

मूली बाई—''मैंने अपने दिल को अच्छी तरह से टटोल लिया है। मेरा दिल तो संयम मार्ग के कठिन द्वंद्वों को सहने के लिए तैयार है।''

पूज्यश्री—''किनके पास दीक्षा लेना चाहती हो?''

मूली बाई—''यही तो मैं आप से पूछने आई हूँ कि मैं किसकी पवित्र छाया में आश्रय प्राप्त करूँ? मेरे संयम, तप और ज्ञान में वृद्धि हो ऐसी कोई जगह बताइए। ऐसा कोई झरना बताइए, जहाँ मैं अपने जीवनकल्याण की पिपासा मिटा सकूँ। ऐसी आश्रयदात्री बताइए, जो शांत और गंभीर हों।''

पूज्यश्री—''ठीक है, वास्तव में तुम्हारे विचार अभिनंदनीय हैं। जिस किसी की शरण में जाना हो उस शरण की जाँच-पड़ताल तो पहले ही करनी चाहिए। पीछे अपनी प्रकृति न मिलने और आध्यात्मिक जिज्ञासा पूरी न होने पर मन में अनुताप करने की अपेक्षा पहले ही सोच-समझकर काम करना बेहतर है। मेरी दृष्टि में सोजत में एक ही नाम की दो भाग्यशालिनी सतियाँ हैं, उनका आश्रय लेना ठीक रहेगा। वे दोनों आनंद कुमारी जी हैं। उनका सौम्य स्वभाव, अपूर्व प्रतिभा और चरित्रनिष्ठा को देखकर तुम्हारा मन और कहीं आकर्षित नहीं होगा। उनके चरणों की शरण पाकर तुम आगे बढ़ो और अपना कल्याण करो।''

पूज्यश्री ने वैरागिन मूली बाई के हृदय में आपके प्रति प्रेमांकुर पैदा कर दिए। मूली बाई पन्नालाल जी राव को साथ लेकर उदयपुर, ब्यावर आदि स्थानों में साध्वीवर्याओं के दर्शन करती हुई आपकी सेवा में सोजत पहुँची।

मूली बाई ने महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी व महासती श्री छोटी आनंद कुमारी जी से काफी देर तक बातचीत की। उनके सदाचरण व ज्ञान की ज्योति की परख की। पहले तो साधारण परिचित थी, लेकिन बाद में उनमें असाधारण धर्म-प्रेम बढ़ता चला गया। महासती जी के चरणों का स्पर्श पाकर भला वह संस्कारी आत्मा अलग-थलग कैसे रह सकती थी! मूली बाई ने महासती जी को अपना संकल्प सविस्तार सुनाते हुए कहा—''मुझे अब शीघ्र ही इस संसार रूपी दावानल से निकाल कर अपनी छाया में स्थान दीजिए।''

महासती जी बड़ी दूरदर्शिता से काम लेती थीं। वह सहसा किसी नए आगंतुक को कैसे दीक्षा प्रदान कर सकती थीं? उन्होंने मन के अंदर गहरी दृष्टि डाली। नवीन वैरागिन में दुर्बलता-सबलता की खोज करने लगी। साधुता का प्रश्न सहज नहीं है। पूरी जाँच-पड़ताल के बाद ही योग्य साधक को इस पथ पर लेना चाहिए। योग्य गुरु संख्या बढ़ाने की लालसा में पड़कर मुंड-मंडली की भर्ती नहीं करता। वह अच्छी तरह जाँच-परखकर ही कोई कदम बढ़ाता है। जब वह ऐसा करता है तो संसार उसके कार्यों को देखकर चमत्कृत हो उठता है। जैन धर्म गुण को महत्ता देता है, संख्या को नहीं।

महासती श्री छोटी आनंद कुमारी जी एवं उनकी श्रद्धेय महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी इस बात में पक्की थीं। आपने सोचा—''इसे हमारे किसी उपदेश के बिना ही वैराग्य का रंग चढ़ा है और स्वयं दीक्षा देने के लिए कह रही हैं। अत: शिष्या के लोभ में पड़कर हमें झटपट इसे मूंड नहीं लेना चाहिए। पहले हमें इसके खानदान, प्रकृति, इज्जत, आचरण आदि की जाँच-पड़ताल करनी चाहिए।''

आपने पन्नालाल जी राव से उक्त वैरागिन बाई के विषय में पूछताछ की। उनसे यह पता लगा लिया कि मूली बाई की प्रकृति शांत है। कई दिनों से वैराग्य भावों में रमण कर रही हैं। साधु जीवन की कई क्रियाओं का पालन भी कर रही हैं और खानदान-घराने की हैं। इनकी अपने गाँव में इज्जत-आबरू भी अच्छी है। संयम का भार सहन कर सकती हैं। परंतु मनस्वी और धीर पुरुष सहसा कोई काम किसी के कहने पर नहीं कर बैठते। आपने मूली बाई से साक्षात् पूछने का विचार किया और कहा—''क्यों, साध्वी

किसलिए बनना चाहती हो? क्या घर में कुछ दु:ख है?''

मूली बाई—''नहीं गुरुदेव! कोई दु:ख नहीं। भरा-पूरा घर है। आत्मकल्याण के लिए ही इस मार्ग पर आना चाहती हूँ।''

महासती जी—''तो संरक्षकों की आज्ञा ले आई हो?''

''हाँ, आज्ञा तो लेकर ही आपके पास उपस्थित हुई हूँ। बिना आज्ञा के तो आप दीक्षा नहीं दे सकतीं, यह मैं जानती हूँ।''

महासती जी ने अब मूली बाई के सामने संयम के कष्टों आदि का जिक्र किया और कहा—''देखो, जैन भागवती दीक्षा का पालन करना बड़ा कठिन काम है। दीक्षा कोई बच्चों का खेल नहीं है। यहाँ तो जीते जी ही अपने को कष्ट की भट्टी में झोंकना पड़ता है।'' फिर आपने लोच, पैदल चलना, यावज्जीवन, रात्रि भोजन त्याग, सर्दी-गर्मी आदि परीषहों की कष्ट-कथाएँ सुनाईं। पर मूली बाई का वैराग्य सोडा वाटर का उफान नहीं था, जो शीशी खोलते ही उड़ जाता। उनका निश्चय पक्का रंग ले चुका था। मन, वचन व काया में सर्वत्र प्रसन्नता थी। वैराग्य की आभा मुखमंडल पर स्पष्ट झलक रही थी। सुनते ही कहने लगीं—''ये कष्ट-कथाएँ मुझे विचलित नहीं कर सकतीं। मैंने अपने लक्ष्य का निर्णय कर लिया है। मैं संयम के सभी कष्टों को सहने के लिए तैयार हूँ।''

बात पक्की हो चुकी थी। वैरागिन अपनी परीक्षा में खरी उतरी। महासती जी ने अपना निर्णय उनको सुना दिया—''तब ठीक है। **शुभस्य शीघ्रम्**। अपनी तैयारी करो।'' वैरागिन बाई ने कहा-''महाराज! दीक्षा तो मेरे ग्राम में पधारकर दीजिए। आपने मेरी कसौटी की है और मुझे आपने प्रेम से आकर्षित किया है तो मेरी बात भी आपको रखनी पड़ेगी। आप थाँदला पधारने की कृपा करें। थाँदला संघ सब तरह से समर्थ है। वह धर्मवीर आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. की जन्मभूमि है। चारों ओर पर्वत श्रेणियों से घिरा होने के कारण उसकी रमणीयता और बढ़ गई है। साधु-साध्वियों के लिए तो वह स्थान बड़ा प्रशस्त है। क्या आप मेरी जन्मभूमि को यह लाभ न देंगी?''

महासती जी ने उत्तर दिया—''तुम्हारी प्रार्थना उचित ही है, परंतु इस समय मेरी परिस्थिति इन वृद्ध-साध्वियों की सेवा छोड़कर जाने जैसी नहीं है। अगर मैं स्वतंत्र विचरण करती तो अवश्य तुम्हारी जन्मभूमि में आकर ही दीक्षा देती। सेवा-धर्म का महत्त्व दीक्षा से कम नहीं है। तुम्हें अगर संसार से सच्ची विरक्ति हो गई है तो वहाँ और यहाँ में क्या फर्क है? जैसी वहाँ दीक्षा होगी वैसी ही यहाँ होगी। सोजत संघ तुम्हारी दीक्षा अच्छी तरह से अपने यहाँ करा सकता है।''

मूली बाई के हृदय में निर्मलता और निष्कपटता थी। उन्होंने कहा—''तब ठीक है महाराज, मैं आपसे ज्यादा आग्रह नहीं करूँगी। आपको व्यर्थ ही परेशानी में डालने से मुझे क्या मतलब है? मेरी दीक्षा यहीं होने दीजिए।''

दीक्षा की बात सुनकर सोजत के लोगों के दिलों में हर्ष का सागर हिलोरे लेने लगा। दीक्षा महोत्सव की धूम मची हुई थी। वैरागिन बाई अपने परिवार के नौ व्यक्तियों को साथ लेकर सोजत आईं। दीक्षा का सब संबंध थाँदला संघ की ओर से था। सोजत शहर के बाहर रामद्वारा के विशाल मैदान में वटवृक्ष के नीचे दीक्षा महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए विशाल मानव-मेदिनी एकत्रित हुई। दीक्षा देने का समय आया तो महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. ने वैरागिन को दीक्षा का पाठ सुनाया। विक्रम संवत् 1962 चैत्र सुदी 10 के दिन शुभ समय में दीक्षा-विधि बड़े ही आनंद के साथ संपन्न हुई। महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी ने नवदीक्षिता साध्वी जी को महासती श्री छोटी आनंद कुमारी जी के नेश्राय में सौंप दिया। महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी की इस निस्पृहता और उच्च त्याग के लिए हम उन्हें कोटिशः नमन किए बिना नहीं रह सकते। इस पवित्र दिवस की स्मृति कभी भुलाई नहीं जा सकती। आज के दिन यहाँ योग्य शिष्या को योग्य गुरुणी जी मिलीं तो योग्य गुरुणी जी को भी योग्य शिष्या मिली। दोनों एक-दूसरे को पाकर जीवन यात्रा में सफल हो सकीं।

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

– क्रमशः

आचार्य भगवन् के संयमी जीवन के सुनहरे पचास वर्ष पूर्ण होने के साथ ही महत्तम महोत्सव भी भव्य आध्यात्मिक गतिविधियों के साथ संपन्न हो गया। लगभग 31 महीने चले महत्तम महोत्सव में आत्मकल्याण के लिए कई तरह की गतिविधियाँ अनवरत चलती रहीं। इसी क्रम में आचार्य भगवन् के जीवन चरित्र पर आधारित पुस्तक **'अभिरामम्'** की ओपन बुक परीक्षाएँ संपन्न हुईं। इस परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाएँ जाँचते समय एक प्रश्न-पत्र के शीर्षक पर ध्यान गया। शीर्षक था– **'गुणों का गुलदस्ता'**। शीर्षक के नीचे एक गुलदस्ते का चित्र बना रखा था, जिसमें कई तरह के रंग-बिरंगे फूल दिखाई दे रहे थे। फूलों से सुसज्जित वह गुलदस्ता बड़ा ही सुंदर दिखाई दे रहा था।

गुलदस्ते को देखते-देखते मेरी नजर उसके नीचे वाले पात्र पर गई। पात्र सामान्य ही दिखाई दे रहा था। अब मैं कल्पना करने लगा ऐसे गुलदस्ते की, जिसमें फूल नहीं हो, सिर्फ नीचे का पात्र ही हो। इस कल्पना में अब गुलदस्ता दिखाई नहीं दे रहा था। सिर्फ पात्र ही दिखाई दे रहा था। एक ऐसा पात्र जिसमें फूल नहीं थे।

कल्पना की शक्ति वास्तविकता से कई गुना अधिक होती है। मेरी कल्पना भी कहाँ विराम लेने वाली थी। कल्पना अब तुलना पर उतारू होने लगी। तुलना भी किसकी और किससे? बिना फूलों वाले गुलदस्ते से फूलों वाले गुलदस्ते की। यह एक ऐसी तुलना कही जा सकती है, जिसमें दोनों के बीच समानता को ढूँढ़ पाना सहज नहीं था।

यह कैसी तुलना? दिन और रात के बीच कैसी तुलना? अंधकार व प्रकाश के बीच कैसी तुलना? कैसी समानता? लेकिन कल्पना तो बस कल्पना ही है, जो बिना ब्रेक की गाड़ी के समान अग्रसर होती गई।

दिन और रात, अंधकार व प्रकाश के बीच भी कुछ तो तुलना की ही जा सकती है। दिन में कितना भी प्रकाश क्यों न हो और रात्रि में कितना भी गहन अंधकार क्यों न हो, लेकिन भोर में जब अंधकार अपने निम्न स्तर पर होता है और प्रकाश अपने शुरुआती स्तर पर और संध्या के समय जब प्रकाश अपने निम्न स्तर पर होता है और अंधकार अपने शुरुआती स्तर पर; उस समय दिन व रात, अंधकार व प्रकाश में आपस की विपरीतता होने के बावजूद कुछ तो तुलना की जा सकती है। तुलना का ऐसा रास्ता मिल जाने के बाद अब दोनों तरह के गुलदस्तों के बीच तुलना करने लगा।

ऐसी काल्पनिक तुलना का वास्तविक निष्कर्ष निकला शून्य। कहीं कोई तालमेल नहीं, कोई समानता नहीं। दोनों तरह के गुलदस्तों के बीच तुलना जैसा कुछ भी नहीं था। यहाँ तक कि नाम में भी समानता दिखाई नहीं दे रही थी। जो फूलों से सुसज्जित था वह गुलदस्ता एवं जो फूलों से रहित था वह सिर्फ पात्र। ऐसा पात्र, जिसमें न तो फूल और न ही सुंदरता।

अब मैं कल्पना एवं तुलना के चक्रव्यूह से बाहर

गुणों का गुलदस्ता

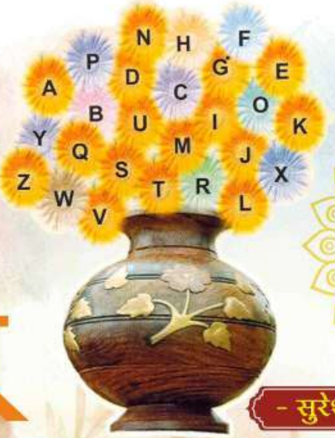

संस्कार सौरभ

आचार्य भगवन्

- सुरेश बोरदिया, मुंबई

निकलकर वास्तविकता पर आने लगा। गुणों का गुलदस्ता यह पूरा प्रश्न-पत्र आधारित था आचार्य भगवन् के गुणों पर। इस प्रश्न-पत्र में अंग्रेजी वर्णमाला के A से Z तक सभी अक्षरों पर आचार्य भगवन् के गुण पूछे गए थे। सभी गुण **'अभिरामम्'** पुस्तक में से ढूँढ़कर उत्तर के स्थान पर लिखने थे।

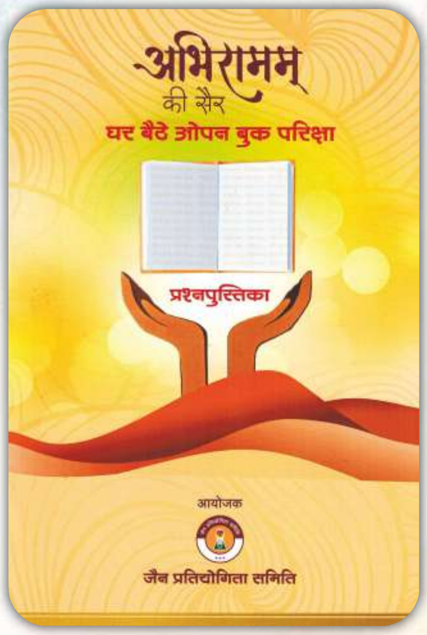

परीक्षार्थियों ने अपने उत्तर में आचार्य भगवन् के कई गुण लिखे। मुझे विश्वास है कि इसके लिए उन्हें जरा-सा भी प्रयास नहीं करना पड़ा होगा। क्योंकि आचार्य भगवन् के गुणों को क्या ढूँढ़ना? महकते फूल की महक को क्या ढूँढ़ना? चमकते सूर्य की रश्मियों को क्या ढूँढ़ना? **'अभिरामम्'** पुस्तक को मैंने स्वयं कई बार पढ़ा है। पुस्तक का हर पृष्ठ, हर वाक्य ही नहीं, हर शब्द अपने आप में आचार्य भगवन् का गुण ही तो है। हर शब्द ही गुण है तो ढूँढ़ने की आवश्यकता ही कहाँ रही?

जो चीज हम बरसों से प्रत्यक्ष देखते आ रहे हैं, उसे क्या ढूँढ़ना? और फिर ढूँढ़ा तो उसे जाता है जिसकी उपलब्धता कम हो या नहीं के बराबर हो।

आचार्य भगवन् का जीवन तो गुणों का गुलदस्ता ही नहीं, गुणों का उपवन है। गुणों का सोमनस वन, गुणों का पंडकवन, गुणों का नंदनवन आदि सब कुछ तो है। ऐसे में क्या ढूँढ़ना? क्योंकि उपवन में से फूल चुने जाते हैं, ढूँढ़े नहीं जाते। उपवन में से कुछ ही फूल तो चुनकर गुलदस्ता बनाना था। कई में से कुछ को चुनना था बस।

परीक्षार्थियों द्वारा लिखे गए उत्तरों का मिलान करने के लिए हमें जो मॉडल उत्तर पुस्तिका दी गई थी, उसमें आचार्य भगवन् के कुछ गुण लिखे हुए थे। लेकिन परीक्षार्थियों द्वारा लिखे गए उत्तर तो उस मॉडल उत्तर पुस्तिका में भी नहीं लिखे हुए थे। इसमें मात्र कुछ ही गुण लिखे थे, जबकि परीक्षार्थियों ने तो अनेकानेक गुण लिख दिए थे। जाँचने वाले कार्यकर्ताओं के लिए असमंजस था कि ऐसे उत्तर को सही मानें या गलत?

एडमिन से बार-बार पूछा जा रहा था कि सही या गलत? और हर बार जवाब आता सही! सही! सही!

उत्तर लिखने वाले परीक्षार्थियों ने कितने गुण लिख दिए थे यानी उपवन में से कितने ही फूल चुन लिए थे गुलदस्ते को सजाने के लिए। एक-एक करके जैसे-जैसे हम उत्तर पुस्तिकाएँ जाँचते गए, आचार्य भगवन् के अनेकानेक गुणों से रूबरू होते गए। ऐसा लग रहा था जैसे हम आचार्य भगवन् के गुणों को ही पढ़ रहे हों। गुलदस्ते से आगे बढ़ते हुए हम तो उपवन तक पहुँच गए।

सर्वाधिक परीक्षार्थियों द्वारा लिखा गया जो गुण पढ़ने में आया, वह था – **कृपादृष्टि**। यह एक ऐसा गुण था जो सभी ने लिखा था। कुछेक ने कृपादृष्टि न लिखकर कृपावृष्टि भी लिख दिया था। अंतर भी क्या है दोनों में? मात्र शब्द अलग हैं। कृपादृष्टि एवं कृपावृष्टि में शब्दार्थ में भी जरा-सा ही अंतर है। भावार्थ में तो कुछ भी अंतर नहीं। कृपादृष्टि किसी पर भी पड़ सकती है और कृपावृष्टि भी। वृष्टि यानी बरसात। बरसात भी कहीं भी बरस सकती है। क्या खेत और क्या जंगल? क्या गाँव और क्या शहर? क्या मैदान और क्या चट्टान? कहीं भी बरस सकती है।

आचार्य भगवन् की कृपादृष्टि एवं कृपावृष्टि भी तो एक जैसी है। दृष्टि या वृष्टि जिस पर भी पड़ गई, वह धन्य हो जाता है। उसे और क्या चाहिए?

कृपा-किरण जब जिस पर पड़ती,
मन की कलियाँ उसकी खिलतीं।

आचार्य भगवन् की कृपादृष्टि या वृष्टि किसी व्यक्ति विशेष पर ही नहीं, हर किसी पर भी पड़ जाती है। न कोई छोटा, न कोई बड़ा, न कोई जैन, न कोई अजैन, सभी समान हैं उनकी दृष्टि में। नाना गुरु की समता का प्रत्यक्ष दर्शन होता है राम गुरु में।

ऐसा ही एक प्रसंग उल्लेखित करना आवश्यक प्रतीत हो रहा है। वर्ष 2022 उदयपुर चातुर्मास से पूर्व मेवाड़ विचरण के दौरान आचार्य भगवन् का मेरे पैतृक गाँव देवरिया में पधारना हुआ। 14 मई को प्रातः कोशीथल से देवरिया के लिए लगभग 5 कि.मी. का विहार हुआ। कोशीथल गाँव के बाहर तक श्रद्धालुओं का सैलाब उपस्थित था, जो देवरिया जाने वाले मार्ग तक पहुँचने पर थम-सा गया। क्योंकि गाँव से बाहर आगे विहार में किसी को भी चलने के लिए आचार्य भगवन् की स्पष्ट मनाही थी और अगले स्थान पर पहुँचने पर भी अधिकतम 1 कि.मी. से ज्यादा आगे आने की भी मनाही थी।

लगभग एक घंटे के विहार के पश्चात् देवरिया गाँव की सीमा शुरू हो गई। वहीं से कुछ अंदर की तरफ एक गाँव पड़ता है मानपुरा। एक ऐसा गाँव जहाँ एक भी जैन घर नहीं और गाँव पूर्णतया शाकाहारी। अधिकतर घर तेली समाज के और कुछ घर सुथार परिवारों के। अजैन होते हुए भी सभी परिवार जैन धर्म के प्रति श्रद्धावान थे। चारित्रात्माओं के देवरिया विराजने पर श्रद्धालु दर्शन-सेवा एवं प्रवचन का लाभ प्रायः लेते ही हैं और उन्हें गोचरी का भी लाभ मिलता ही है।

इनमें एक श्रद्धावान हैं मोहन जी सुथार। जन्म से जैन नहीं, लेकिन धर्म से जैन। क्रिया से जैन, श्रद्धा भी इतनी कि देवरिया स्थानक भवन में चारित्रात्माओं के विराजने पर नित्य प्रार्थना, प्रवचन, दोपहर में सेवा-चर्चा में उनकी उपस्थिति रहती ही है। मोहन जी जितना आचार्य भगवन् को मानते हैं, उतना ही आचार्य भगवन् की भी मानते हैं। **'होगा गुरु का जिधर इशारा, उधर बढ़ेगा कदम हमारा'** आचार्य भगवन् के उपदेशों को, वचनों को सिर्फ सुनकर कान में ही नहीं रखा, बल्कि हृदय में उतारा। उसी का सुपरिणाम था कि आप व्रत-नियम, त्याग-प्रत्याख्यान में भी अग्रणी हैं। कई वर्षों से आजीवन रात्रि चौविहार, आजीवन हरी का त्याग, पाँच सामायिक करने का नियम एवं अन्य कई व्रत-नियम का पालन कर रहे हैं। इन सबसे भी बड़ी बात कि सुथार परिवार में जन्मे मोहन जी का पारंपरिक व्यवसाय लकड़ी का होते हुए भी हरे वृक्ष को कटवाने एवं उसकी लकड़ी का व्यवसाय करने का उनके त्याग है। वनस्पतिकाय जैसे एकेंद्रिय जीवों के प्रति भी इतनी यतना। पिछले कुछ वर्षों से आरंभ-परिग्रह एवं व्यवसाय से निवृत्त हो गए। आज लगभग 93 वर्ष की आयु हो जाने पर भी ग्रहण किए हुए व्रत-नियमों की पूर्णतया अनुपालना कर रहे हैं। धन्य हैं ऐसे गुरुभक्त!

अब पुनः लौटते हैं आचार्य भगवन् के विहार प्रसंग पर। आचार्य भगवन् मानपुरा के आस-पास पहुँच चुके थे। उक्त स्थान की देवरिया से दूरी 1 कि.मी. से अधिक नहीं थी। पूरे मार्ग पर गुरुभक्तों का रैला उमड़ रहा था। आचार्य भगवन् की एक झलक पाने को आतुर निगाहें उसी दिशा में एकटक आतुरता से देखे जा रही थीं और दूर से आचार्य भगवन् की एक झलक दिखाई देने के साथ ही नजदीक से दर्शन करने की आतुरता प्रबलवती होने लगी। देखते ही देखते आचार्य भगवन् सड़क से बायीं ओर मानपुरा की तरफ मुड़ गए। असमंजस के बीच श्रद्धालु कुछ समझ पाते इससे पहले ही आचार्य भगवन् आगे बढ़ते गए।

रामायण में भी ऐसा ही प्रसंग पढ़ने में आया है। वनवास के दौरान श्रीराम पहुँच गए शबरी की कुटिया में। शबरी की कुटिया से पहले मार्ग के दोनों तरफ कई ऋषि-मुनियों के आश्रम थे। श्रीराम का आगमन अपनी तरफ होने के समाचार सुनकर सभी

ऋषि-मुनि आस लगाने लगे कि श्रीराम हमारे आश्रम में आएँगे। हर ऋषि-मुनि ऐसी ही आस लगाए इंतजार करने लगे। लेकिन श्रीराम तो सभी आश्रमों को पीछे छोड़ते हुए पहुँच गए शबरी की कुटिया की तरफ। आगे बढ़ते गए, ऋषि-मुनि देखते रह गए और श्रीराम तो पहुँच गए शबरी की कुटिया पर। उसी प्रकार हम देवरियावासी भी देखते रह गए। आचार्य भगवन् मोहन जी सुथार के घर के पास पधार गए। जो रामायण में हुआ वही आज देवरिया में हो गया। पुरातन काल की घटना की पुनरावृत्ति। युग अलग, भक्त भी अलग और राम भी अलग। तब अयोध्या वाले राम थे तो अब देशनोक वाले राम हैं। तब शबरी भी अलग थी तो आज मोहन जी जैसे भक्त शबरी बने।

रामायण की शबरी को तो पहले से ही मालूम था कि श्रीराम उसकी कुटिया में आएँगे। अत: उसने कुटिया की साफ-सफाई कर रखी थी एवं अन्य कई तैयारियाँ भी कर रखी थीं। और तो और श्रीराम को खिलाने के लिए उसने बेर भी इकट्ठे कर रखे थे, लेकिन मानपुरा वाले मोहन जी को तो गुरु राम के मानपुरा, यहाँ तक कि उनके घर के पास पहुँचने के पहले तक भी पता नहीं था, फिर भी उन्होंने कई वर्षों पूर्व ही तैयारियाँ कर रखी थीं। तप-त्याग, व्रत-नियम, प्रत्याख्यान, स्वाध्याय आदि तैयारियाँ गुरु राम को रिझाने एवं अपने घर तक लाने के लिए पर्याप्त थीं और ये ही तैयारियाँ गुरु राम को मोहन जी के घर के पास स्वत: खींच लाई।

मोहन जी के घर के पास पहुँचकर गुरु राम वहीं रुक गए। उक्त स्थान से घर तक सजावट की हुई थी। तोरण द्वार, बंदनवार आदि सजा रखे थे। गुरु राम को शंका हुई कि कहीं ये सब सजावट संतों के निमित्त से तो नहीं की गई है? इस पर गुरुदेव ने मोहन जी से पूछ लिया। मोहन जी ने बड़ी विनम्रतापूर्वक निवेदन किया कि उनके यहाँ कोई आयोजन होने वाला है और उसी की तैयारियाँ की जा रही हैं। संतों के निमित्त से कुछ भी नहीं किया गया। आडंबर, प्रदर्शन आदि से कोसों दूर रहने वाले आचार्य श्री रामेश पूर्ण संतुष्ट होने पर ही आगे बढ़कर घर में पधारे।

गुणों का गुलदस्ता में परीक्षार्थियों ने एक और गुण लिखा था। वह है संयम में सजगता। यहाँ यह गुण भी प्रत्यक्ष झलक रहा था। संतों के निमित्त से कुछ कार्य होने की शंका मात्र से ही आचार्य भगवन् के आगे बढ़ते कदम रुक गए। मार्ग में ही रुककर शंका का पूर्ण समाधान किया एवं संतुष्टि होने पर ही आगे पधारे। वहाँ मात्र एक घंटे तक ही विराजना हुआ, लेकिन इतने कम समय के लिए भी अपने संयम के प्रति सजगता।

घर के बाहर चबूतरे पर संत-महापुरुषों ने प्रार्थना करवाई। पूज्य आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ फरमाया, तत्पश्चात् वहाँ से विहार करके देवरिया स्थानक भवन में पधारे एवं वहाँ प्रवचन हुआ।

आचार्य भगवन् का मानपुरा में अल्पकाल का प्रवास भी अविस्मरणीय बन गया। कृपादृष्टि एवं कृपावृष्टि जैसे अहम गुण, संयम में सजगता जैसा अहम गुण आचार्य भगवन् के जीवन उपवन में किस तरह महक रहा है, यह हमें इस छोटे से प्रसंग में देखने को मिला है।

प्रसंग में हम जैसे-जैसे आगे बढ़ते गए वैसे-वैसे हमें लगा कि हम गुणों के गुलदस्ते से आगे बढ़कर गुणों के उपवन तक पहुँच गए। कई गुणरूपी फूलों का संगम हैं आचार्य भगवन्। उपवन के सभी फूलों में जिस तरह महक रहती है उसी तरह आचार्य भगवन् का जीवन भी महक रहा है। यह गुण उपवन सदा इसी तरह महकता रहे। पूज्य आचार्य भगवन् का वरदहस्त हम पर चिरकाल तक बना रहे। आपश्री शतायु, सहस्रायु, दीर्घायु एवं चिरायु हों, यही मंगलकामना है।

(प्रस्तुत लेख में आए प्रसंग के शब्दों में अंतर हो सकता है, पर भाव एवं अर्थ यथार्थ रूप में ही हैं। भूल-चूक के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।)

1 आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर भीलवाड़ा का जैन स्थानक। स्थानक में उपाध्याय प्रवर चौबारे में विराजमान हैं और श्रावक-श्राविकाएँ उनके दर्शन और वंदन हेतु उपस्थित हैं। स्थानक के एक ओर कुछ युवा संत अध्ययनरत हैं। वे गहराई से तत्वचर्चा में मगन हैं, मानो बाहरी संसार से कोई सरोकार ही नहीं। श्रावक-श्राविकाएँ गुरु राम के दर्शन के लिए लालायित हैं। उनकी आँखें उत्कंठा से गुरु राम को खोज रही हैं। कुछ भक्त आपस में कानाफूसी कर रहे हैं। गुरुदेव कहाँ हैं? गुरुदेव के दर्शन कब होंगे? कुछ भक्त आसन लगाकर वहीं प्रतीक्षा में बैठ गए हैं तो कुछ अपने नेत्रों से हर दिशा में गुरुदेव को खोज रहे हैं। तभी एक कक्ष का दरवाजा खुलता है और एक युवा संत बाहर आते हैं। एक वृद्ध श्राविका तुरंत पूछती हैं कि गुरुदेव कहाँ हैं? उनकी बातचीत से सभी उपस्थित लोगों को ज्ञात होता है कि गुरुदेव उसी कक्ष में विराजमान हैं, परंतु इस समय दर्शन संभव नहीं हैं।

श्रद्धालु निराश तो अवश्य हैं, परंतु कोई शिकायत नहीं। सभी दरवाजे के बाहर से ही तीन बार वंदन-नमस्कार कर अपने गंतव्य की ओर बढ़ जाते हैं। यह दृश्य दिखाता है कि सच्चे भक्तों को केवल गुरुदेव के प्रत्यक्ष दर्शन ही नहीं, बल्कि उनकी आभा, उनकी उपस्थिति मात्र से भी अपार आनंद की अनुभूति होती है।

2 गुरु राम अपने आसन पर विराजमान हैं और हाथ में कपड़ा पकड़े हुए हैं। संभवत: किसी फटे वस्त्र की सिलाई कर रहे हैं। यह दृश्य किसी को भी चकित कर सकता है कि एक महान संत, जो लाखों श्रद्धालुओं के पूज्य हैं, अपने हाथों से वस्त्र सील रहे हैं। परंतु यही तो संतत्व की पहचान है। सादगी, आत्मनिर्भरता और श्रम का महत्त्व प्रत्यक्ष था।

गुरुदेव का संपूर्ण ध्यान सूई, धागे व वस्त्र पर केंद्रित है। एक के बाद एक दर्शनार्थी आते हैं, कुछ दूरी से वंदना करते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। कुछ भक्त वहीं ठहरकर गुरुदेव को निहारते रहते हैं। उनके मन में यह आशा है कि शायद गुरुदेव उनकी ओर देखें। तभी कोई व्यक्ति अपने शहर का नाम लेता है। यह सुनते ही गुरुदेव की दृष्टि एक क्षण के लिए ऊपर उठती है और वे निर्लिप्त भाव से केवल दो शब्द कहते हैं— **'दया पालो'**। इन दो शब्दों का उच्चारण मात्र ही वहाँ उपस्थित श्रद्धालुओं के लिए दिव्य अनुभव बन जाता है। वे स्वयं को धन्य महसूस करने लगते हैं। कुछ भक्त अपने नाम और स्थान का उल्लेख इस आशा में करते हैं कि गुरुदेव उनसे कुछ और संवाद करें। परंतु गुरुदेव के मुख से फिर वही दो शब्द निकलते हैं— **'दया पालो'**।

रामकृपा के रंग : गुरुदर्शन से भक्ति संगीत तक

- डॉ. नवल सिंह जैन, बिजयनगर

गुरुचरणों में उपस्थित प्रत्येक भक्त गुरु राम के एक दृष्टिपात को भी अनमोल वरदान मानता है। उनके मुख से निकले दो शब्द ही समस्त जीवन को आलोकित करने के लिए पर्याप्त हैं। यही सच्ची भक्ति और श्रद्धा की पराकाष्ठा है।

सच्चा संत वही होता है जो सरलता, करुणा और आत्मिक बल से परिपूर्ण हो। गुरुदेव का **'दया पालो'** कहना केवल शब्द नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन है। भक्ति में कोई औपचारिकता नहीं होती। वह तो केवल हृदय की गहराइयों से निकली भावनाओं का प्रवाह होती है। श्रद्धालु चाहे दूर से आए हों, चाहे गुरुदेव उनसे विस्तृत वार्ता नहीं करें, न मिलें, फिर भी उनकी आस्था अडिग रहती है।

गुरु राम की सन्निधि में आने वाले श्रद्धालु केवल दर्शन ही नहीं, बल्कि एक अद्‌भुत ऊर्जा लेकर लौटते हैं। यह ऊर्जा केवल उनके मन-मस्तिष्क को नहीं, बल्कि उनके संपूर्ण अस्तित्व को परिवर्तित कर देती है।

3 उपाध्याय प्रवर संघ के वरिष्ठ श्रावकों के साथ संभवतः संघ व्यवस्थाओं पर चर्चा कर रहे हैं। मैं उनके कृतित्व और व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित होकर पिछले कुछ दिनों से लिखे गए **'राजेश वैभवम् खंड'** काव्य को भेंट करने के लिए उत्सुक हूँ। मन में उत्साह है, परंतु साथ ही यह सोचकर प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि वार्तालाप के बीच विघ्न न डालूँ। जैसे ही उपाध्याय प्रवर की दृष्टि मुझ पर पड़ती है, मैं श्रद्धा से खंड काव्य के पन्ने उनके चरणों में समर्पित कर देता हूँ। वे धीरे-धीरे पन्ने पलटते हैं और सहजता से पूछते हैं यह क्या है? मैं विनम्रता से उत्तर देता हूँ यह आपके जीवन पर लिखा गया खंड काव्य है। यह सुनते ही उनके हाथों की गति बदल जाती है। वे बिना किसी झिझक के विद्युत गति से कागजों को जमीन पर रख देते हैं और गंभीर स्वर में कहते हैं— **''मुझे यह सब पसंद नहीं।''**

उनके शब्दों में न कोई अहंकार था, न किसी प्रकार का उपेक्षा भाव। यह केवल उनकी विनम्रता और त्याग का प्रतीक है। उन्होंने अपना जीवन आत्मसंयम और धर्म की साधना में लगा दिया है। व्यक्तिगत महिमामंडन उन्हें स्वीकार नहीं है। यह प्रसंग एक महान सीख है। सच्ची महानता प्रशंसा में नहीं, बल्कि नि:स्वार्थ सेवा और आत्मसमर्पण में है।

4 7 फरवरी 2025 की संध्या को नोखा की भट्टड़ स्कूल के विशाल प्रांगण में रात्रि 8 बजे आयोजित **'थव-थुई-मंगलं'** भक्ति कार्यक्रम में हजारों लोग एकत्रित थे। सभी भक्ति संगीत का आनंद लेने के लिए उत्सुक नजर आ रहे थे। मंच पर मधुर भक्ति गीत गूँज रहा था। मैं मंच की ओर देख रहा था और मेरी नजरें वाद्य यंत्रों की तलाश कर रही थी। वहाँ कोई वाद्य यंत्र दिखाई नहीं दिया। मैं आश्चर्यमिश्रित चिंतन में डूब गया कि क्या बिना वाद्य यंत्रों के भक्ति संगीत का आयोजन हो सकता है? ऐसा सोच ही रहा था कि अचानक माइक भी बंद हो गया। मुझे लगा कोई तकनीकी समस्या आ गई होगी।

इसी बीच मधुर गायिका अल्का जी डागा के साथ उनकी कोरस टीम हाथों में **'थव-थुई-मंगलं'** पुस्तक लिए मंच पर उपस्थित हुए। ऐसी ही पुस्तकें सभी दर्शकों के हाथ में भी थीं। जैसे ही भक्ति प्रारंभ हुई संपूर्ण पंडाल एक लय, एक सुर व एक ताल में गूँज उठा। मुझे अब समझ में आया कि मेरे आँकलन में भूल थी। यह गायन सभा एक अनूठी आध्यात्मिक यात्रा थी। बिना वाद्य यंत्रों के भी वह गायन आत्मा को छू लेने वाला था। यह केवल सुर और शब्दों का संगम नहीं, बल्कि भक्ति और श्रद्धा का प्रवाह बन गया।

यह आयोजन स्थानकवासी परंपरा की अनुपम विशेषताओं को दर्शाता है। इस परंपरा में भक्ति संगीत भी शुद्ध और आत्मिक होता है, जिसमें कोई बाहरी साधन नहीं, केवल शब्द और स्वर होते हैं। यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। स्थानकवासी परंपरा में न केवल बाहरी आडंबर से बचा जाता है, बल्कि यह भी सिखाया जाता है कि आध्यात्मिक आनंद के लिए किसी बाहरी साधन की आवश्यकता नहीं होती। केवल श्रद्धा और समर्पण ही पर्याप्त हैं।

गुरुदेव की करुणा, श्रावकों की निष्ठा और स्थानकवासी परंपरा की पवित्रता इस संस्मरण को अद्वितीय बनाते हैं। भक्ति का सार केवल बाहरी आडंबर में नहीं, बल्कि हृदय की शुद्धता में है।

संस्कार सौरभ

गुरु दर्शन का अलौकिक क्षण

- ईशिता बंब, जयपुर

8 फरवरी 2025 को 3:30 बजे जब गुरुदेव जैन जवाहर भवन की पहली मंजिल की खिड़की पर पधारे तो मेरी दृष्टि उनके दिव्य मुखमंडल पर ठहर गई। बचपन से उनके दर्शन होते आ रहे थे, पर इस बार अनुभूति कुछ और ही थी। एक अलौकिक शांति, एक गहन समता भाव, मानो शरीर और आत्मा दोनों पर विजय प्राप्त कर ली हो। मांगलिक फरमाने के पश्चात् गुरुदेव भीतर चले गए।

मन अधीर हो उठा - काश, एक बार और दर्शन हो जाएँ! परंतु उनके कठोर अनुशासन का पालन केवल शिष्यों तक सीमित नहीं, स्वयं उन पर भी उतनी ही दृढ़ता से लागू होता है। नियम के अनुसार, संध्या 4 बजे बाद कोई भी महिला गुरुदेव के दर्शन नहीं कर सकती थी। मैं भी वहाँ से निकल पड़ी, पर हृदय अभी भी उसी दिव्य क्षण में रमा हुआ था।

सुवर्ण दीक्षा दिवस का अद्‌भुत अनुभव

9 फरवरी 2025 को गुरुदेव के सुवर्ण दीक्षा दिवस पर भट्टड़ स्कूल के विशाल प्रांगण में अपार श्रद्धालु एकत्र थे। हम भी प्रारंभिक पंक्तियों में बैठे थे। योजना थी कि समता शाखा में भाग लेकर फिर अपने कार्यों को पूर्ण कर प्रवचन के लिए लौट आएँगे। परंतु नियति ने कुछ और ही ठाना था। गुरुदेव प्रातः 8:45 पर ही प्रांगण में पधार गए। हम सब वहीं ठहर गए और फिर एक सामायिक, दूसरी सामायिक, तीसरी... पाँचवी! परंतु न थकान, न भूख-प्यास का बोध! संपूर्ण प्रांगण एक स्वर में गूँज उठा– **'ऐसा अवसर मिला है, मिलेगा कहाँ!'** सच में, ऐसा अवसर कहाँ मिलेगा?

गुरु के सान्निध्य में आत्मानुभूति

मैं स्वयं विभिन्न ऊर्जा विज्ञान से जुड़े कोर्स करती रहती हूँ। इन्हीं में से एक प्राणिक हीलिंग कोर्स के दौरान मैंने सीखा था कि जब हम किसी उच्च साधना में लीन आत्मा के आभामंडल में प्रवेश करते हैं तो उनकी ऊर्जा इतनी दिव्य और विशाल होती है कि वहाँ उपस्थित हजारों नहीं, बल्कि लाखों लोग उसकी अनुभूति कर सकते हैं। उनकी ऊर्जा हर व्यक्ति को छूती है और यही कारण होता है कि उनके आभामंडल में प्रवेश करते ही किसी को खाँसी आ जाती है, किसी की आँखों से अश्रु बहने लगते हैं, तो किसी के भीतर अन्य भाव उमड़ पड़ते

हैं। उनका तेज इतना प्रबल होता है कि व्यक्ति के भीतर दबी हुई नकारात्मकता, पीड़ा और दु:ख स्वत: ही बाहर निकलने लगते हैं। शायद यही कारण था कि जब मैं अपने गुरु के दिव्य आभामंडल में पहुँची, तो मेरे अश्रु रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। आत्मा मानो वर्षों से इसी क्षण की प्रतीक्षा कर रही थी। एक ऐसी अनुभूति, जो शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती। उस क्षण मेरे हृदय में बस यही भाव उमड़ रहा था -

अहो अहो! मेरे भगवन्! सुहाने दर्शन हो।
ऐसा लगता है जैसे रोम-रोम में भर रहे संयम।।

गुरुदेव के सानिध्य में, उनके तेजस्वी मुखमंडल को टकटकी लगाए निहारती रही। फिर एक के बाद एक समस्त चारित्रात्माओं ने गुरु गुणानुवाद आरंभ किया। मुझे लगा, मानो मेरे भाग्य जाग गए हों। पंचम काल में चतुर्थ काल का दिव्य वातावरण प्रत्यक्ष देख लिया। इतना शांत... इतना समभावमय... मानो अंतरात्मा तक यह माधुर्य व्याप्त हो गया। सबसे अद्भुत बात कि 10,000 से अधिक लोगों की उपस्थिति में भी पूर्ण शांति बनी रही! यह जैन समाज का महान गुण है और मेरे गुरुवर का दिव्य अतिशय! गुरुदेव के बचपन से लेकर अब तक के जीवन की भाव-विभोर कर देने वाली झाँकियों ने तो सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। मैं उन सभी का हृदय से धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने इस अद्भुत आयोजन को संभव बनाया और इसे इतने सुंदर रूप में प्रस्तुत किया। कितना अद्भुत दृश्य था वहाँ का। एक ऐसा अवसर, जो शब्दों से परे था। इस पूरे अनुभव के बाद मेरा हृदय कृतज्ञता से भर उठा।

मैं धन्य हूँ कि मुझे इस अनुपम अवसर का साक्षात्कार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

धन्य-धन्य हैं मेरे गुरुवर,
धन्य-धन्य हैं गवरा माँ।
धन्य-धन्य यह भारतभूमि,
जहाँ रचा समवसरण-सा समां।।
हर आत्मा में है परमात्मा,
यह जानती हूँ बचपन से सदा।
पर आज गुरु के मुख को देखकर लगा,
जैसे धरा पर उतरा स्वयं चंद्रमा।।

सच्ची धर्मश्रद्धा जिसे प्राप्त होती है वह निस्पृह और निर्भीक बन जाता है। ऐसा व्यक्ति अपनी आलोचनाओं और विरोध की चिन्ता नहीं करता, बल्कि विरोध उसे अतिरिक्त शक्ति देकर उसकी श्रद्धा को दृढ़तर कर देता है। ज्योतिर्धर जवाहराचार्य के साथ ऐसा ही हुआ था। थली प्रदेश में जब वे धर्म के नाम पर फैले भ्रम का विरोध करने के लिए धर्म की सटीक व्याख्या कर रहे थे तब कुछ लोगों का तीव्र विरोध भी उन्हें सहना पड़ा था। ऐसे लोग भी थे, जो कहने लगे थे– "क्या बातें करते हो? यदि मुँहपत्ती उतार लेंगे तो क्या करोगे?" पू. आचार्यदेव किंचित् भी आवेश में नहीं आए। उन्होंने शांत रहते हुए संयत उत्तर दिया– चार अंगुल कपड़े से यदि मोहब्बत है तो ले लीजिए, हम दूसरी लगा लेंगे। परन्तु यदि कुछ छीनना ही है तो मेरे भीतर रहे हुए ज्ञान को लेने का प्रयत्न कीजिए, दर्शन को लेने का प्रयत्न कीजिए, उससे आपका जीवन बनेगा। इस कपड़े से क्या बनने वाला है?

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

Empowering Women

Identify Your Inner Freedom

- Aarti Navlakha

It's time to be true, society has painted a picture that the women should be delicate, agreeable and soft to be accepted. But being soft in the phase of challenges will not help you to achieve your dreams, command respect or live the life you deserve. It's time to rise, reclaim your power and stop bending when life push you down. Being strong doesn't means being harsh or loosing your kindness. It means standing on your grounds speaking up and knowing your worth. It's about being resilient when life test you. Being assertive when people underestimate you and being unapologetic about your ambitions. Too often we prioritize pleasing others over prioritising ourselves. We let fear, doubt and comfort zone hold us back. Lets end this today. You are not born to play small. You were born to lead. To break barries and line boldly. Knowing your worth is the foundation of confidence, strength and self-respect. It means recognising that you are valuable and capable of everything you desire, whether its respect, love, success or happiness. Many times women compromise their standards, settle for less or accept treatment that Hinder their self esteem. Why? Because they have been made to believe that asking for more is selfish or that standing up for the useless is too much. But let me tell you knowing you worth is not arrogant. It's self awareness. When you know your worth you stop chasing people who don't value you. You try to go away from relationships, jobs and friendships that undermine your potential. Knowing yourself is setting boundaries without guilt. It's okay to say ‘No’. Don't allow people to take advantage of your kindness. You are not defined by your past mistakes. It's about you deserve the best

that life has to offer. Women stay silent just because of fear, misjudged, misunderstood or labeled. Staying silent doesn't protect you, it diminishes you. Being silent means your noise doesn't matter. But giving opinions is about standing firm in your beliefs. Think about how many opportunities have been missed because someone was too afraid to share an idea and injustice happen because of people who stay quiet during conversations thinking I should have said something. It is not about public speaking, it's about everyday life, telling a friend when they crossed their boundaries. It's about disrespect if you don't advocate for your self who will. People will mistreat you, "as you tolerate". The right people will appreciate you for who you are. You should keep yourself first, stand up for yourself and speak truth. Challenges are part of life. The problems you ignore today will put you down tomorrow. Strength comes from moving from fear. No one can fight your battles. Every time you choose discomfort over your compliancy. You are making a powerful statement. You cannot become someone you have never been by doing what you have always done. Change requires efforts and efforts require discomfort mentality. Tough people don't waste energy on others. They focus on their job. There will be days you will be angry, discouraged and overwhelmed. But don't let them control your actions. Reforms your goals. People will test you, judge you. How you handle them will define you. You don't know what strength you have. Flexibility is not weakness, its survival. Plans always don't work as you want. Things change. You are a woman of excellence. Prove yourself. Feminism is itself a beauty. It's not weakness or being delicate. It is a strength to which the world stands.

अनेक व्यक्ति, जो प्रारंभ में अच्छे पढ़ने-लिखने वाले होते हैं, पर अति की स्थिति बनती है तो उनका मस्तिष्क व्यवस्थित नहीं रह पाता है। उस स्थिति में उनकी प्रखर मेधा भी लाभ नहीं पहुँचा पाती, बल्कि उनके लिए हानिकारक बन जाती है, क्योंकि वे उसे अपेक्षित दिशा में नियोजित नहीं कर पाते हैं। वे उचित निर्णय भी नहीं ले पाते। सोचते रहते हैं, पर निर्णायक कदम नहीं उठा पाते। जब तक निर्णय करने की क्षमता नहीं आती, तब तक व्यक्ति जीवन में उन्नति नहीं कर पाता। इसलिए निर्णायक बुद्धि या मति प्रखर होनी चाहिए। यदि किसी की निर्णायक क्षमता या मति अच्छी है तो वर्तमान में चाहे उसका विकास नहीं हो पा रहा हो, पर एक दिन वह निर्णायक शक्ति के आधार पर निर्णायक मोड़ पर खड़ा हो सकता है। नहीं तो क्या करूं, कैसे करूं, असमंजस की स्थिति में रह जाएगा।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

व्यसनमुक्ति संकल्प हो साकार

- निष्ठा चौरड़िया (SPF)

मनुष्य जीवन अनमोल व बेशकीमती है। मान्यता है कि व्यक्ति को 84 लाख योनियों में भटकने के बाद मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। तो फिर इस मूल्यवान जीवन को व्यसनों में उलझकर बर्बाद क्यों करना?

किसी भी चीज की आदत होना व्यक्ति की कमजोरी को दर्शाता है और किसी नशे पर निर्भरता उस काले गर्त जैसा है, जिसकी गहराई मापी नहीं जहा सकती। अगर वहाँ गिर गए तो जीवन अंधकारमय गुफा जैसा बन जाता है, जहाँ सूर्यरूपी रोशनी का पहुँचना नामुमकिन है। आज के इस युग में यह निर्भरता किसी भी रूप में हो सकती है। जैसे– शराब, तंबाकू, जुआ, मोबाइल आदि।

ये सब चीजें न जानें कैसे और क्यों आजकल हर वर्ग की आयु में अलग-अलग तरीके से प्रचलित हैं! कहीं पर रोजमर्रा की परेशानियों से भागने के नाम से तो कहीं पर कूल बनने और अपने स्टेट्स के नाम पर।

यह कैसी विडंबना है? जहाँ आज का युवा देश की तरक्की में योगदान जैसे विचारों के बजाय व्यसनरूपी मायाजाल में कुछ इस तरह फँस चुका है, जिससे बाहर निकलने में वक्त, जवानी, पैसा और शांति सब नष्ट हो रहा है। कहीं-कहीं तो कुछ स्थितियाँ देखकर मन विचलित होकर रो पड़ता है। जब किसी घर में आदमी शराब, धूम्रपान का शिकार होकर घर में लक्ष्मी समान पत्नी के साथ हिंसा करता है, साथ ही अपनी पूँजी भी नष्ट कर बैठता है। कहीं तो कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी से जान गँवा बैठता है। क्या कोई फायदा है ऐसे आमोद का, जिसका परिणाम मौत हो! ऐसे कितने ही दिल दहला देने वाले मंजर देखने व सुनने को मिलते हैं।

नशे जैसी चीजों की लत बेचैनी, अवसाद और चिंता को बढ़ाकर बीमारियों को आमंत्रित करती है। नशा मनुष्य के शरीर को खोखला बना देता है। कहीं-कहीं तो आत्मघात जैसी स्थिति भी घटित हो जाती है। अनैतिक आचरण तो ऐसे लोगों के लिए बहुत ही सामान्य बात है। नशे में मनुष्य शारीरिक एवं मानसिक दोनों तरीकों से नष्टता की ओर बढ़ जाता है। वक्त रहते यदि नशे को समाज से दरकिनार नहीं किया गया तो आने वाले भविष्य में समाज की क्या स्थिति होगी, यह सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

जिस तरह मनुष्य की प्रवृत्ति है कि वह बुरे की तरफ आकर्षित होता है, उसी तरह अच्छे कार्यों की ओर बढ़ने के लिए समाज को प्रोत्साहित करना चाहिए। नशामुक्ति केंद्र, व्यसनमुक्ति अभियान के साथ-साथ व्यसनमुक्त लोगों एवं परिवारों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

आज आवश्यकता है जीवन को धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ाने की। जब मनुष्य आध्यात्मिकता की ओर चल पड़ता है तो जीवन में वास्तविक सुखों की बहार आ जाती है। तब समझ में आता है कि वास्तविक सुख तो भीतर ही भरे पड़े हैं और बाहरी सुख केवल सुखाभास है। इसलिए खुशहाल, चिंतामुक्त, तनावमुक्त, स्वस्थ जीवनशैली के लिए व्यसनमुक्त समाज की संकल्पना को साकार करें।

गुरुचरण विहार समाचार

राग-द्वेष, मोक्ष में बाधक
- आचार्य भगवन्

दुनिया को नहीं, अपनी आत्मा को देखना है
- उपाध्याय प्रवर

संयम के सरताज की,
जय बोलो गुरु राम की।
जिनवर के अवतार की,
जय बोलो गुरु राम की।।

धन्य होई धोरां री धरती

युगनिर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु कृतिका जी देशवाल की जैन भागवती दीक्षा एवं नवदीक्षितों की बड़ी दीक्षा संपन्न

नोखा में चातुर्मास जैसा ठाट, भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव उदयरामसर के लिए घोषित

श्री जैन जवाहर भवन, जैन चौक, गोलछा भवन, समता कॉलोनी, ओम जी संचेती का निवास राठी खेड़ी, नथमल जी संखलेचा का निवास गांधी चौक, पारख भवन मस्जिद चौक, बिड़दीचंद कांकरिया भवन, कांकरिया चौक, नोखा (जिला बीकानेर)।

राम शब्द में जीवन का सार है, जिनको पूजता सारा संसार है।
नवम पाट पर विराजे, संयम पथ के दातार हैं।।

आदर्श सिद्धांत एवं उच्च अनुशासन के हिमायती युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, मानवता के मसीहा, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रांति प्रदाता, जन-जन के भाग्यविधाता, नानेश पट्टधर, आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा अनोखी नगरी नोखा में धर्मज्ञान की पावन गंगा निरंतर प्रवाहित कर रहे हैं। विराट दीक्षा महोत्सव, महत्तम शिखर महोत्सव, पुन: दीक्षा महोत्सव, बड़ी दीक्षा आदि प्रसंगों से नोखा में एक नया इतिहास स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया है। पहली बार होली से पूर्व ही चातुर्मासिक घोषणाओं ने सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

उभय गुरु-भगवंतों की निर्मल संयम साधना से प्रभावित होकर अनेक दिव्यात्माएँ श्रीचरणों में निरंतर समर्पित हो रही हैं। संयम शतम की 50वीं दीक्षा **मुमुक्षु कृतिका जी देशवाल (देशनोक/बंगईगाँव)** की संपन्न हुई। देश-विदेश से श्रद्धालु भाई-बहन आचार्य भगवन् के पावन दर्शन, प्रवचन, ज्ञानचर्चा का अनुपम लाभ लेकर, अध्यात्म के रहस्य को जीवन में उतारकर धन्य बन रहे हैं। चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविकाओं में तपस्या की होड़ लगी हुई है। नोखा में चातुर्मास जैसा ठाट लगा हुआ है। स्थानीय एवं प्रवासी जैन-जैनेतर सभी जन महापुरुषों का पावन सान्निध्य पाकर पुलकित व हर्षित हो रहे हैं।

'संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे'

संयम शतम की 50वीं दीक्षा के रूप में मुमुक्षु कृतिका जी देशवाल की जैन भागवती दीक्षा एवं नवदीक्षितों की बड़ी दीक्षा उल्लासपूर्वक संपन्न

यही मंजिल है तेरी, यही है रास्ता।
राम शासन का गौरव, बढ़ाना सदा।।

16 फरवरी 2025, जैन जवाहर भवन, जैन चौक, नोखा। लाखों के पैकेज की सर्विस छोड़कर, मोह के बंधन व राग के रिश्ते तोड़कर वीतराग मार्ग पर कदम बढ़ाने वाली बंगईगाँव प्रवासी, देशनोक निवासी वीर पिता नंदकिशोर जी-ममता देवी देशवाल की लाडली 26 वर्षीय वीर बाला इंजीनियर **मुमुक्षु कृतिका जी देशवाल** अध्यात्म को अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर सबके लिए आदर्श बन गई। महत्तम महापुरुष आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में जैन भागवती दीक्षा का प्रसंग नवकार महामंत्र के जाप से प्रारंभ हुआ।

इस पावन अवसर पर आयोजित विशाल धर्मसभा में संयम का महत्त्व विवेचित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''हमारा लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। लक्ष्य यदि धुंधला होता है तो सही गति नहीं कर पाता। मन कितना पवित्र है, उसका महत्त्व स्वीकार किया गया है। आज देशवाल परिवार से प्रथम दीक्षा संपन्न होने जा रही है। देशवाल परिवार धर्मनिष्ठ परिवार है। दीक्षा की अनुमोदना में हम त्याग-प्रत्याख्यान, नियमों को धारण करें।''**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''संयम जीवन सबसे कठिन जीवन है। प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति बनना सरल है, पर संयम जीवन धारण करके उसका दृढ़ता से पालन करना बहुत ही कठिन है। हमारे मन से विपरीत प्रवृत्ति के व्यक्ति के प्रति बुरा वचन नहीं निकलना चाहिए। हमारे मन में किसी के प्रति बुरी सोच है तो हमारा बुरा निश्चित है। जीवन में यतना का समावेश हो जाना चाहिए। हाथों-पैरों का ऐसा**

संयम रखना कि किसी की हिंसा नहीं हो। त्रस और स्थावर जीवों के प्रति अहिंसा का भाव लबालब भरा हो। हर कार्य में यतना रखना, सावधानी रखना जरूरी है। असत्य भीतर में भय पैदा करता है। मुक्ति का मार्ग सत्य है। तीसरे अचौर्य में ध्यान रखना होगा कि कभी लुकाव-छिपाव नहीं करना। जो कपट करता है वह विराधक होता है। जो सरल होता है वह आराधक होता है। जो ब्रह्मचर्य का भीतर से पालन करता है वह इतना ताकतवर होता है कि उसका आत्मतेज समाप्त नहीं होता। जन्म लेना छोड़ना है तो जन्म देना छोड़ना होगा। मैं किसी का नहीं हूँ, कोई मेरा नहीं है। मुनि जीवन में किसी से लगाव नहीं रखना। सबके प्रति प्रेम की दृष्टि हो। सदैव सतर्क रहना और किसी के साथ संबंध नहीं जोड़ना अपने-पराए का भेद नहीं हो। आत्मा पर सदैव दृष्टि रहे। पंच महाव्रतों का शुद्ध पालन करना ही साधु जीवन की महानता है।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने दोपहर 1:16 बजे दीक्षा विधि प्रारंभ की। **मुमुक्षु सुश्री कृतिका जी देशवाल** को दीक्षा की तैयारी के संबंध में पूछा तो मुमुक्षु बहन ने शीघ्र ही दीक्षा प्रदान करने की विनती की। वीर परिजनों, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ तथा श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखा व सहयोगी शाखाओं के पदाधिकारियों व सदस्यों सहित देशभर से पधारे हजारों गुरुभक्तों ने अपने दोनों हाथ उठाकर दीक्षा अनुमोदना कर कर्मनिर्जरा का लाभ लिया। आचार्य भगवन् ने दोपहर 1:25 बजे तीन बार करेमि भंते के पाठ से मुमुक्षु बहन को संपूर्ण पापकारी क्रियाओं का त्याग करवाकर नवकार मंत्र के पंचम पद **'नमो लोए सव्वसाहूणं'** पर आरूढ़ किया। नवीन नामकरण **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकृति श्री जी म.सा.** की घोषणा के साथ ही संपूर्ण सभा जय-जयकारों, जयवंता-जयवंता व बधाई गीत से गूँज उठी। केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. के करकमलों से संपन्न हुआ। साध्वीवर्याओं ने बधाई गीत प्रस्तुत किया।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकृति श्री जी म.सा. की बड़ी दीक्षा 23 फरवरी 2025 को कांकरिया चौक के लिए साधुमर्यादा में रखने जाने वाले आगारों सहित स्वीकृति फरमाई। इस अवसर पर • **नवदीक्षित संत श्री रामलोचन मुनि जी म.सा.**, • **नवदीक्षित संत श्री रामरवि मुनि जी म.सा.**, • **नवदीक्षित संत श्री रामविनीत मुनि जी म.सा.**, • **नवदीक्षित संत श्री रामचरण मुनि जी म.सा.**, • **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामजीवन श्री जी म.सा.**, • **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामरक्षा श्री जी म.सा.**, • **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामयुक्ता श्री जी म.सा.**, • **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकृपा श्री जी म.सा.** एवं • **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामश्रद्धा श्री जी म.सा.** की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) महापुरुषों के श्रीमुख से संपन्न हुई। उपाध्याय प्रवर ने दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन का पठन करते हुए नवदीक्षितों को संपूर्ण रूप से तीन करण तीन योग से हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह का त्याग करवाकर अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह महाव्रतों में आरूढ़ किया। नवदीक्षितों ने अपने संकल्प-पत्र का वाचन करते हुए फरमाया कि हे भगवन्! आपने संयम रत्न प्रदान कर हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है। हम आपकी आज्ञा आराधना में सदैव समर्पित रहेंगे। पाँच समिति तीन गुप्ति का पालन करने में पूर्ण यतना रखेंगे। जहाँ भी आप जिसके साथ भी रखेंगे हम उसके लिए तैयार रहेंगे। सेवा के लिए हम सदैव तत्पर रहेंगे। आपश्री जी की कृपा से हम कषायों एवं इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बनने का लक्ष्य रखेंगे।

नवदीक्षिता साध्वियों ने *'पुण्यवानी जगी है शरण में आकर, ओ गुरुवर प्यारे'* भक्तिगीत का संगान किया। श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य की तीसरी आँख विवेक है। साधु हो या साध्वी, श्रावक हो या

श्राविका, विनय और विवेक के बिना जीवन का कल्याण नहीं होगा। सेवा ही सबसे बड़ा तप है।

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि **'जिधर होगा गुरु का इशारा, उधर बढ़ेगा कदम हमारा'** मात्र नारा नहीं लगावें, अपितु गुरु-महाराज के आयामों को जीवन में आत्मसात करें। **9 अप्रैल 2025** को **'विश्व नवकार दिवस'** पर कम से कम 9 माला नवकार मंत्र की अवश्य फेरें।

श्री मधुर मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि विराट दीक्षा महत्तम कार्यक्रम ने नोखा संघ में इतिहास रच दिया है। संत-सतियाँ जी के साथ समान व्यवहार करें। भेदभाव न रखें। जिनशासन संपत्ति के दान से नहीं, संतान के दान से चलता है। हम गुरु से सच्चा प्यार करें, क्योंकि गुरु कभी धोखा देने वाले नहीं है।

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने *'वामा देवी के प्यारे, अश्वसेन के दुलारे'* गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य का अपने पूरे परिवार सहित लाभ उठाएँ।

साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर सिद्धांतों के प्रति अटल हैं। आप अपेक्षा से रहित एवं वात्सल्य भावों से भरपूर हैं।

साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा. ने *'दीक्षा का यह मेला है, आज संयम का मेला है, अठे रा रंग अलबेला है'* गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जिनवाणी की वर्षा हो रही है। संयम की शुभ वेला आई है। साध्वीमंडल ने *'धन्य है जिनवाणी गुरुवर'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री ने त्याग-प्रत्याख्यान का विवरण प्रस्तुत किया। महेश नाहटा ने त्यागी महापुरुषों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। झझू, पाँचू संघ ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती की। परम गुरुभक्त रामलाल जी संचेती (गंगाशहर-भीनासर) के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। 15 मिनट स्वाध्याय करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। वीर नाना श्री दुलीचंद जी चोरड़िया ने मकान/भवन दान देने की घोषणा की। अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दीक्षा में अंतराय नहीं देने का संकल्प कई जनों ने लिया।

आयोजन को सफल बनाने में नोखा के श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बालिका मंडल सहित सकल जैन समाज का सराहनीय सहयोग रहा।

नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकृपा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि मैं खूब संयम पालूँ और आज्ञा आराधना में चलती रहूँ। साध्वी श्री समर्पिता श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जैसे चट्टान अपनी जगह से हिल नहीं सकती, वैसे ही उपाध्याय प्रवर संयम में मजबूती से अटल रहते हैं। साधना की मशाल बहुत ऊँची है।

बुरे व्यक्ति के लिए अच्छा सोचना

17 फरवरी 2025, जैन जवाहर भवन, जैन चौक, नोखा। प्रात: मंगल प्रार्थना के पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आत्मा का लक्ष्य है कि अपने आप में तृप्त रहें। यह हम सभी का सिद्ध स्वरूप है। हम जो धार्मिक क्रिया कर रहे हैं वह अपने सिद्ध स्वरूप को प्रकट करने के लिए कर रहे हैं। अशुभ कर्मों के कारण जो आवरण मेरी आत्मा पर चढ़ गया है, उसे कम करना है। आत्मतत्व के प्रति अज्ञान दशा है। धार्मिक व्यक्ति को जीवन से पूरा विश्वास है तो वह दूसरों को दु:खी नहीं करता। जो खुद अशांत होते हैं वे दूसरों को दु:खी करते हैं। प्रयास ऐसा करना चाहिए कि मैं कैसे शांत बनूँ। शांत बनने के लिए सबसे पहले हमारे चित्त में सभी जीवों के प्रति मैत्री भावना रहे। **'सर्वे भवंतु सुखिन:'**। दूसरों की बढ़ोतरी को देखकर उतनी ही प्रसन्नता

होनी चाहिए जितनी हमें अपने लिए होती है। सामायिक, संवर, पौषध ये प्रथम हैं। अच्छे के लिए अच्छा सोचना बड़ी बात नहीं है, बुरे व्यक्ति के लिए अच्छा सोचना बहुत बड़ी बात है। मन में भाव होना चाहिए कि संसार की सारी चिंताएँ बेकार हैं। भगवान से प्रार्थना करो कि मुझे ढेर सारी प्रतिकूलताएँ देवें। जब तक अंतर् में बोध प्राप्त नहीं हो जाए, तब तक सुख सामने से आए तो उसे लात मारकर बाहर भगा देना चाहिए। ऐसा कृत्य औषध का काम करेगा।

श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि थकी हुई आत्मा को विश्राम दिलाना है। संपूर्ण सभा ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। दर्शन जी सुराणा (गंगाशहर) के संथारापूर्वक महाप्रयाण पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

क्रोध, मान, माया, लोभ मोक्ष मार्ग में बाधक

18 फरवरी 2025, जैन जवाहर भवन, जैन चौक, नोखा। *'जय बोलो महावीर स्वामी की'* भक्ति गीत के साथ प्रात:कालीन प्रार्थना से अद्भुत आनंदानुभूति हुई। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को संबोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''एक धुरी होती है, जिसके बाहर चक्कर लगता रहता है। वैसे ही मिथ्यात्व, ममत्व, आसक्ति हमारी धुरी है, जो संसार में हमेशा घुमाती रहती है। मोक्ष मार्ग पर चलते हुए संसार की कामना करना मिथ्यात्व है। मांगलिक सुनते समय हमारी क्या भावना रहती है? मुझे यह फल प्राप्त हो या वह फल प्राप्त हो? हम लाभ से वंचित हुए या लाभ हुआ? आपका पुण्य होगा तो साधन सुलभ हो पाएँगे। पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. जब नोखा विराज रहे थे, तब तोलाराम जी लूणावत ने विनती रखी कि भगवन्! मेरी दादीजी को कुछ दिखाई नहीं देता। कृपा कर घर पर पधारकर उनको दर्शन लाभ प्रदान करें। भक्तवत्सल श्री नानालाल जी म.सा. ने फरमाया कि इतने समय तक क्यों नहीं बोला? फिर आपश्री जी उनके घर पर पधारे व दादीजी को प्रत्याख्यान कराया कि जब भी बहू कुछ दे तो ले लेना, नहीं तो त्याग। गुरुदेव ने मांगलिक फरमाई। कुछ समय पश्चात् खबर फैल गई कि दादीजी को दिखने लग गया। यदि हम प्रयत्नशील होते तो क्या नहीं होता? क्रोध को दूर करने के लिए क्या प्रयत्न किया? मेरे भीतर ईंधन पड़ा है, उसको निकालना है। सतर्क हो जाएँ। गुस्सा आते ही चौविहार उपवास करना पड़ेगा। हमारा पावरफुल विचार होगा तो अपने क्रोध पर नियंत्रण कर पाएँगे। क्रोध मन को पश्चात्ताप देता है। क्रोध, मान, माया, लोभ, ये सब हम पर हावी होते हैं तो हम अपने आपको सँभाल नहीं पाते। भगवान महावीर का मार्ग सुख व धर्म का मार्ग है। जैसे संसार में आते हैं वैसे मूल मार्ग से भटक जाते हैं। क्रोध, मान आदि के हानि-लाभ को जानना जरूरी नहीं, बल्कि इनको छोड़ने हेतु संकल्पित होना है।''**

साध्वी श्री मणामगंधा श्री जी म.सा. ने *'जब भी हो गुरुदेव के दर्शन समझो तीरथ हो गया'* गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि 2017 के चातुर्मास में हमारे जीवन में बीजारोपण हुआ। उससे हमारे जीवन में बदलाव आया। गुरु भगवन् ने हमारे जीवन को संस्कारित किया। आप स्वयं तो तिरते ही हैं, साथ ही दूसरों को भी तिराते हैं।

श्री नि:श्रेयस मुनि जी म.सा. ने *'रोम-रोम से निकले गुरुवर नाम तुम्हारा'* गीत प्रस्तुत करते हुए धर्माराधना करने की प्रेरणा दी। शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

प्रात: **'युवा जागृति'** शिविर में श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने प्रेरक मार्गदर्शन किया। दोपहर में **'नारी चेतना'** शिविर में साध्वी श्री जागृति श्री जी म.सा. ने फरमाया कि दैनिक चिंतन से हम अपने मोह को कमजोर कर सकते हैं

और योग- मन, वचन और कायिक प्रवृत्ति से आत्मविकास में आगे बढ़ सकते हैं।

'राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश' अभियान के तहत गुरुकुल हायर सेकंडरी स्कूल में नैतिक शिक्षा, व्यनमुक्ति, संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए। छात्र-छात्राओं ने व्यसनमुक्ति का संकल्प लेकर जीवन विकास के मार्ग पर अग्रसर किया।

जो प्राप्त है, वह पर्याप्त है

19 फरवरी 2025, जैन जवाहर भवन, नोखा। प्रात: की मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। प्रवचन सभा में सैकड़ों गुरुभक्तों को भगवान महावीर की पावन अमृतदेशना से परिचित कराते हुए महत्तम महापुरुष परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''जब प्राप्ति होती है तो जीव सुखी हो जाता है, नहीं तो उसका भटकाव चालू रहता है। संतुष्टि प्राप्त करने के लिए मन भटकता रहता है, पर वह नहीं मिलती। इच्छाएँ आकाश के समान अनंत हैं। इच्छाओं का अंत नहीं है। एक पूरी होगी तो दूसरी उभर आती है। ये हमें भटकाती रहेंगी। संतुष्टि हमारे जीवन में ठहराव, शांति-समाधि लाने वाली है। जो हमारे वश में नहीं है, वैसी इच्छा भी हमारे मन में पैदा हो जाती है। यही उलझन में डालती है। कुछ और प्राप्त करने की भावना को ही इच्छा कहते हैं। 'जो प्राप्त है, वही पर्याप्त है' को भगवान महावीर ने सुखी जीवन का स्रोत बताया है।

भावना दिन-रात मेरी, सब सुखी संसार हो।
सत्य, संयम, शील का प्रचार, हर घर-द्वार हो।।

शुभ भावना भाने से उत्कृष्ट रसायन आ जाए तो तीर्थंकर गोत्र का बंध हो सकता है। हमारे चाहने से कोई सुखी हो या नहीं, लेकिन हम सुखी हो जाएँगे। बेंगलुरु के सेठ छगनमल जी मूथा मारवाड़ से कोई बेंगलुरु आता तो उससे पूछते कि क्यों आए हो। वे उसकी सहायता करने का लक्ष्य रखते थे। जो सबकी सहायता करता है उसका पुण्य उसकी सहायता करता है।''

श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जिनवाणी को जीवन में उतार लें तो कल्याण होते देर नहीं लगेगी। साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा. ने फरमाया कि हमारी अनंत पुण्यवानी का उदय हुआ है जो हमें मनुष्य जन्म, जिनधर्म और महान सद्गुरु राम गुरु का सान्निध्य प्राप्त हुआ है। धर्म व तप आराधना से और गुरु की आज्ञा पालन करने से ही जीवन का कल्याण होगा। साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

'युवा जागृति' शिविर में श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए परिवार, समाज एवं अध्यात्म जीवन में समय का सदुपयोग करने की प्रेरणा दी। 'नारी चेतना' शिविर में साध्वी श्री मणामगंधा श्री जी म.सा. ने पुण्य खूटे नहीं, धर्म छूटे नहीं। तेज वही चलता है जो अकेला रहता है, पर दूर वही पहुँचता है जो साथ लेकर चलता है। **मुमुक्षु बहन अंशिका जी सुराणा, मुमुक्षु बहन स्नेहा जी सुराणा** द्वय सुपुत्रियाँ नरेंद्र जी सुराणा (दिल्ली) तथा जैन स्कूल के शिक्षक-शिक्षिकाओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

अधर्म से कमाया हुआ धन अशांति पैदा करेगा

20 फरवरी 2025, हुक्म नानेश भवन, नोखा। भोर की पावन वेला में *'उठ भोर भई टुक जाग सही, श्री राम गुरु गुण गाना है'* की मधुर स्वर लहरी से प्रार्थना की गई। आचार्य भगवन् ने असीम अनुकंपा करके मंगलपाठ

प्रदान किया। प्रार्थना पश्चात् आपश्रीजी आदि ठाणा का जय-जयकारों के साथ यहाँ से विहार कर समता कॉलोनी, गोलछा निवास में मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए भक्तवत्सल आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''बिना त्याग के स्थायी सुख, सच्चा सुख मिलने वाला नहीं है। साधु-श्रावक की क्या पहचान है? साधु यानी अनगार, जो घर से मुक्त, परिवार से मुक्त हो, वह साधु कहलाते हैं। घर में है, पर जो जंजाल में नहीं है, वह श्रावक है। श्रावक समझदारी में तो गृहस्थ उलझनों में जीता है। साधु का जीवन भिक्षाचर्या करना होता है। साधु कुछ भी खाना नहीं बनाता, श्रावक घर में बनाता है। अतिथि का मतलब है जो तिथि नहीं, कभी भी आ सकता है। घर में खाना प्रचुर मात्रा में बना हो, उसमें से अतिथि को संविभाग देना चाहिए। घर में बना हुआ भोजन अतिथि को प्रदान कर उसका सत्कार करना एवं स्वयं ऊनोदरी तप करके संतुष्टि धारण करनी चाहिए। उसमें बहुत बड़ा लाभ है। दुनिया में व्यवहार देखा जाता है। हमारे साथ व्यवहार बुरा करे तो यह चिंतन करना चाहिए कि शरीर पर नमक लगे तो कुछ असर नहीं होता है, लेकिन घाव पर नमक लगे तो जलन होने लगती है। यह विचार आना चाहिए कि मेरे भीतर घाव तो नहीं है। कोई बुरा कहे तो अपने को बुरा समझना नहीं चाहिए। मनुष्य नकारात्मक बात को जल्दी पकड़ता है। किसी का अहित नहीं करना चाहिए। धन के साथ धर्म की आवश्यकता होती है, लेकिन धर्म को प्राथमिकता देनी है। वर्तमान में धन कमाना आवश्यक है, पर अनैतिकता से नहीं कमाना। धर्म से धन कमाया जाएगा तो शांति प्रदान करेगा और अधर्म से कमाया हुआ धन अशांति प्रदान करेगा।''**

श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मोह, ममत्व, आसक्ति से जनम-मरण का चक्र चलता रहता है। प्रवचन श्रवण करने के बाद उसे जीवन में उतारना चाहिए। मोह के क्षय से ही मोक्ष की प्राप्ति होगी।

शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. आदि ठाणा ने गुरुभक्ति गीत फरमाया। लालाराम जी जाट (सूरपुरा वालों) ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। कई भाई-बहनों ने वर्ष में 12 उपवास, 12 आयंबिल, 12 एकासन करने का नियम लिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रथमा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का बीकानेर से नोखा गुरुचरणों में पधारना हुआ।

समभाव से मोक्ष निश्चित है

21 फरवरी 2025, गोलछा भवन, समता कॉलोनी, नोखा। मंगल प्रार्थना में *'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'* गीत के साथ गुणगान किया गया। प्रार्थना पश्चात् आचार्य भगवन् आदि ठाणा का जय-जयकारों के साथ समता कॉलोनी में ओमप्रकाश जी संचेती (राठी खेड़ी) के निवास पर भव्य मंगल पदार्पण हुआ। यहाँ पर आयोजित धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को आगमसम्मत भाषा में धर्म का मर्म बताते हुए परमागम रहस्यज्ञाता, आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''परमात्मा का स्मरण करने से हमारा शौर्य जागृत होता है। हमारे भीतर संयम, उल्लास जागृत हो जाता है। एक प्रेरणा मिलती है कि तुम्हारे भीतर वह शक्ति है। उस शक्ति को तुमने जगा लिया तो तुम भी परमात्मा बन सकते हो। ऐसा नहीं है कि जो ईश्वर है वही रहेगा, दूसरा नहीं बन सकता। जैन सिद्धांत कहता है कि आत्मा ही परमात्मा है। केवल कर्म का ही भेद है। कर्मों के हट जाने से वही रूप निखर आएगा। राग-द्वेष निकट आने से हम इनको छोड़ नहीं पाते। हटाने का क्या प्रयास किया? इसके लिए एक सूत्र है - 'इदं न मम' अर्थात् यह**

मेरा नहीं है। कुछ भी मेरा नहीं है। मैं जिसको भी मेरा कह रहा हूँ वह कुछ भी मेरा नहीं है। इस संसार में न कोई मेरा था, न ही मेरा है और न ही मेरा होगा। केवल रिश्ते के आधार पर कह सकते हैं कि यह तेरा है, यह मेरा है। निर्वेद भावनाओं को आगे बढ़ाएँ। समभाव बढ़ेगा तो धर्म बढ़ेगा। राग-द्वेष घटेगा तो धर्म बढ़ेगा। समभाव से मोक्ष निश्चित है।''

श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ने पाँच इंद्रियों के विषय भोग से दूर रहने का आह्वान करते हुए फरमाया कि नवकार गिनते-गिनते झपकी आ जाती है, लेकिन नोट गिनते-गिनते झपकी नहीं आती। हम बाह्य आकर्षण से दूर हटें।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति एवं राठी खेड़ी के जैन परिवार की बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री ने पुण्यार्जन का अधिकाधिक लाभ उठाने की अपील की। ग्रीनलैंड सेकंडरी स्कूल ने व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए। वीर पिता श्री पुखराज जी चौपड़ा (बालोतरा) एवं संथारा साधिका श्रीमती बाधू देवी केसरीचंद जी बरड़िया (गंगाशहर) के देवलोकगमन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। जैन-जैनेतर समाज के लोग महापुरुषों के दर्शन, प्रवचन का भरपूर लाभ ले रहे हैं।

यतना और विवेक का ध्यान रखें

22 फरवरी 2025, नथमल जी संखलेचा भवन, नोखा। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का ओम जी संचेती के निवास राठी खेड़ी से विहार कर मधुर जयनादों के साथ नथमल जी संखलेचा भवन में जय-जयकारों के साथ मंगलमय पदार्पण हुआ। श्री किशोर मुनि जी म.सा. ने मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति में सबको लीन कर दिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा बरसाते हुए मंगलपाठ प्रदान किया।

संखलेचा भवन में उपस्थित श्रद्धालुजनों को सान्निध्य प्रदान करने के पश्चात् महापुरुषों का यहाँ से विहार कर मार्गवर्ती क्षेत्र को पावन करते हुए पारख भवन, मस्जिद चौक में जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ पर आयोजित धर्मसभा में गुरुभक्तों की विशाल उपस्थिति नयनाभिराम लग रही थी। इस विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, आचार्य भगवन् ने आगमों का रहस्य बताते हुए अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''श्रावक ऐसा हो जो क्रियावान हो, यतना और विवेक का ध्यान रखे। सामायिक करने वाला होना चाहिए। हमें यतना और छहकाय जीवों की रक्षा करनी है। सुपात्रदान की तीनों लोकों में महिमा होती है। साधु के लिए जल्दी व ज्यादा आहार नहीं बनाना। ऐसा करना विवेक नहीं है। साधु गवेषणा करके गोचरी ग्रहण करे। दान में भावना का भी महत्त्व है। शुद्ध दान देने से लाभ होगा। अशुद्ध दान देने से लाभ नहीं होता। जैसा खाए अन्न, वैसा होए मन। साधु हो या श्रावक, दोनों ही शुद्ध मन से धर्म की आराधना करेंगे तो मोक्ष प्राप्त करेंगे। मन में छल, कपट और गलत विचार हैं तो सिद्धि नहीं मिलेगी। सरलता से ही शुद्धि व सिद्धि होती है। तीर्थंकर देवों का शासन मिला है। यतना और विवेक के बिना हम जागृत नहीं हो पाएँगे। इसलिए इन्हें जानो और इनको आचरण में लाओ। हमारा एक ही लक्ष्य रहे कि हमें आत्मकल्याण करना है। यह आत्मचिंतन हमें सदैव करना चाहिए।''**

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने *'नोखा मंडी पारख भवन में, आ गए गुरु राम हमारे'* गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आचार्य भगवन् निरंतर धर्मनगरी नोखा मंडी पर असीम कृपा बरसा रहे हैं। संयम शतम में हम भी अपना

और अपनी संतानों का नाम अंकित करवाकर गुरु समर्पणा का परिचय दें।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। पारख परिवार की बहनों ने *'धन्य भाग्य हमारे, गुरु राम पधारे'* स्वागत गीत प्रस्तुत किया। पारख परिवार के सुश्रावक जी ने *'पुण्य प्रबल उदय आया है, घर-घर आनंद छाया है'* गीत के साथ कहा कि पारख परिवार आपका सदैव ऋणी रहेगा। पारख भवन में चातुर्मास प्रदान करने की कृपा करें।

संखलेचा भवन में चारित्रात्माओं के स्थिरवास की विनती संखलेचा परिवार के प्रमुखों ने गुरुचरणों में अर्पित की। सभा में देशनोक निवासी पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगणों ने उपस्थित होकर गुरुदर्शन-सेवा का लाभ प्राप्त किया। भानुप्रतापपुर संघ ने चातुर्मास की पुरजोर विनती प्रस्तुत की।

पारख भवन से विहार कर आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का कांकरिया चौक स्थित सेठ बिड़दीचंद कांकरिया चैरिटेबल ट्रस्ट, नोखा के भवन में **'गुरुवर हो तो कैसे हो, राम गुरुवर जैसे हो'**, **'जय-जयकार जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार'** आदि अनेकानेक जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। दोपहर में श्री संजय मुनि जी म.सा. ने तत्वज्ञान का बोध प्रदान किया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। लूणकरणसर संघ ने चातुर्मास की विनती आचार्य भगवन् के श्रीचरणों में प्रस्तुत की। संवर दिवस पर श्रद्धालुओं ने उत्साह के साथ संवर में भाग लिया। परम गुरुभक्त राधाकृष्ण जी कातेला (मनेंद्रगढ़) के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकृति श्री जी म.सा. की बड़ी दीक्षा संपन्न

वीतरागता की ओर बढ़ते ये चरण,
धन्य-धन्य कह रहा है हर मन।

23 फरवरी 2025, कांकरिया भवन, नोखा। प्रभु एवं गुरुभक्ति से ओत-प्रोत मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् प्रशांतमना परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त अतिविशिष्ट आयाम **'समता शाखा'** का आयोजन कांकरिया भवन में हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाई-बहनों ने भाग लिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ श्रवण कराया। नोखा समता संस्कार पाठशाला के विद्यार्थियों को श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ने नवकार मंत्र की महिमा एवं धार्मिक पाठशाला का महत्त्व विस्तार से समझाया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने युवाओं को मार्गदर्शन देते हुए फरमाया कि "**अगर बेस्ट को हाँ करना चाहते हो तो गुड को ना करना पड़ेगा। प्रतिदिन सोचो कि हम कल से बेहतर और क्या कर सकते हैं। जब तक भाग्य के भरोसे बैठेंगे तब तक उच्च विकास नहीं होगा। जो कुछ भी दुनिया में करेंगे हम खुद करेंगे। समस्याएँ हमारी हैं, भाग्य की नहीं। अपने पुरुषार्थ पर भरोसा करें, भाग्य पर नहीं। अनिर्णय हमारे समय को खाने वाला होता है। हम अपने समय का सर्वोत्तम उपयोग कैसे कर सकते हैं? दोस्त हमारे समय के चोर होते हैं। मैंने जो घंटे बिताए हैं उनका और अधिक बेहतर उपयोग कैसे हो सकता था, इसका आत्मचिंतन करें।**"

भगवन् तेरी आराधना, मेरी जिंदगी की शान हो।
मुझे एक यही वरदान दो, मेरी आत्मा बलवान हो।।

दीक्षा आत्मा की आवाज है। इसी आत्मा की आवाज को स्वयं में अनुरंजित कर सिरीवाल प्रतिबोधक परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में संयम पथ पर गमन करने

वाली **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकृति श्री जी म.सा.** की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) का कार्यक्रम दोपहर 1:30 बजे आयोजित हुआ। प्रारंभ में नवकार मंत्र का जाप श्री संजय मुनि जी म.सा. ने करवाया।

संयम सुमेरु आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''आत्मा ही परमात्मा है। अपनी आत्मा को उज्ज्वल बना लो। परमात्मा का रूप प्रकट हो जाएगा। बड़ी दीक्षा का प्रसंग प्रथम और अंतिम तीर्थंकर से चल रहा है। प्रथम और अंतिम तीर्थंकर के समय साधकों को अनिवार्य रूप से प्रतिक्रमण करना होता है। यदि एक समय प्रतिक्रमण नहीं हुआ तो दूसरे दिन चौविहार उपवास करना होता है। साधु बड़ा सावधान रहता है। वह ध्यान रखता है कि प्रतिक्रमण चूके नहीं। भोग संसार में रुलाता रहता है। सुख योग में है, भोग में कभी सुख नहीं हुआ और कभी होगा भी नहीं। वैराग्य भाव बहुत ही कठिनाइयों से जगता है। उसमें कभी अंतराय नहीं देना। संयम की आराधना करने वालों ने मोक्ष प्राप्त कर लिया। पाँच इंद्रियों व मन पर नियंत्रण हो जाए तो मोक्ष जाने में देर नहीं लगेगी। पाँच इंद्रियों के विषय से अपनी आत्मा को बचाना है। कान को अच्छा सुनना पसंद है। अच्छे दृश्य देखने के लिए आँखें लालायित रहती हैं। संसार में अब तक क्या नहीं देखा? केवल अपने आपको नहीं देखा। 'सत्यमेव जयते' सारे जीवन का निचोड़ है। सुगंधित या दुर्गंधयुक्त पदार्थ हो और मन में विचलन नहीं हो। ये सब पुद्‌गलों का परिणाम है। हमें स्वादिष्ट भोजन पसंद है और सुबह तक सब बराबर। विष्टा हो जाता है। अपने आपको शांत कर लो। धन्य हैं दीक्षार्थी, वीर परिवार, जिन्होंने संयम में अंतराय नहीं दिया।''**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने बड़ी दीक्षा विधि प्रारंभ करते हुए दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन का पठन कर नवदीक्षिता साध्वी जी को संपूर्ण सावद्यकारी क्रियाओं का त्याग करवाकर पूर्ण अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि महाव्रतों में आरूढ़ किया।

नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकृति श्री जी म.सा. ने अपने संकल्प को दोहराते हुए फरमाया कि हे भगवन्! मैं कृतज्ञ हूँ कि आपने मुझे अपने चरणों में स्थान दिया। मैं शुद्ध संयम पालन, पाँच समिति तीन गुप्ति का विवेक रखते हुए आज्ञा-आराधना में समर्पित रहूँगी। जहाँ कहेंगे, जिनके साथ कहेंगे उनके साथ रहूँगी। मुझे सेवा का महान अवसर मिला है। कषाय और इंद्रियों को जीतकर चरम लक्ष्यों को प्राप्त करूँ, ऐसी मंगलकामना है।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुसौम्य श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रथमा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने बधाई गीत एवं *'राम गुरु से नाता जोड़ लिया'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी श्री मणामगंधा श्री जी म.सा. ने चार गतियों में मनुष्य गति को श्रेष्ठ बताते हुए फरमाया कि इस भव से ही हम आत्मकल्याण कर सकते हैं। संघ मंत्री व महेश नाहटा ने महापुरुषों के प्रति अहोभाव एवं वीर परिवार को साधुवाद व्यक्त किया। कई भाई-बहनों ने दीक्षा में अंतराय नहीं देने का संकल्प लिया।

2 मार्च 2025 को **'श्रुतभक्ति दिवस'** के लिए आचार्य भगवन् ने जैसे ही **जोरावरपुरा संघ** को स्वीकृति प्रदान की, संपूर्ण सभा जयनादों से गुंजित हो उठी। झझू संघ ने विविध प्रसंगों हेतु गुरुचरणों में विनती प्रस्तुत की। परम गुरुभक्त धर्मचंद जी बोथरा (गंगाशहर) के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति

व संदेश प्राप्त किया।

श्री मधुर मुनि जी म.सा. ने **9 अप्रैल** को **'जीतो'** संस्था द्वारा आयोजित होने वाले **'विश्व नवकार दिवस'** पर कम से कम 9 माला नवकार मंत्र की फेरने का संकल्प संपूर्ण सभा को कराया। संघ पदाधिकारियों सहित विभिन्न स्थानों से उपस्थित सैकड़ों गुरुभक्तों ने बड़ी दीक्षा के अवसर पर अनुमोदना का लाभ लिया। शासन दीपक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा., श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. का बीकानेर से विहार कर नोखा में गुरुचरणों में पदार्पण हुआ।

भगवान के उपदेश को आचरण में ढालें

24 फरवरी 2025, कांकरिया भवन, नोखा। प्रातः मंगलमय प्रार्थना *'इण कलयुग रा भाग्यविधाता, राम सब रा कष्ट मिटाता'* मधुर गीत के साथ हुई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने *'मेरे जीवन का जब अंत हो, मेरे सामने एक संत हो'* संथारा गीत के साथ फरमाया कि भगवान ने सबके लिए समान रूप से उपदेश दिया है। हमने कितना समझा और कितना ग्रहण किया है? आत्मचिंतन करें। जिनवाणी के प्रति हमारा अहोभाव होना चाहिए। बोलने के विवेक का हम सदा ध्यान रखें। सोच-समझकर विवेकपूर्वक बोलें। भगवान की वाणी पर गहरी श्रद्धा होनी चाहिए।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि प्रतिदिन 15 मिनट धार्मिक साहित्य का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। इससे आचार-विचार शुद्ध होंगे। इधर-उधर की व्यर्थ चर्चा में समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।

साध्वी श्री पल्लव श्री जी म.सा. ने प्रेरक भजन फरमाया। सामूहिक 200 गाथा का स्वाध्याय एवं एक घंटा मौन का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। आचार्य भगवन् ने कृपावर्षण करते हुए मंगलपाठ फरमाया।

हमारा भय ही नुकसान कराता है

25 फरवरी 2025, कांकरिया भवन, नोखा। दिवस का प्रारंभ प्रातःकालीन धार्मिक प्रार्थना से करने के पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में गुरुभक्तों की अपार जनमेदिनी को धर्म के मर्म का अमृतपान कराते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **"भय लगने से मन सिकुड़ जाता है। हमारी आंतरिक शक्ति प्रकट नहीं होती। भयमुक्त बनने का उपाय है कि आत्मा का ज्ञान करें। आत्मा पर विश्वास करना है कि मैं आत्मा हूँ। इस बात के महत्त्व को मजबूत बनाना है। हम अपने बारे में जैसा सोचते हैं, धीरे-धीरे वैसे बन जाते हैं। हमारा भय हमारा ही नुकसान करता है। हमारे मन में दुनिया की अनेक परिस्थितियों का भय रहता है। घटनाएँ हमारा नुकसान नहीं कर सकतीं, बल्कि हमारा भय हमारा नुकसान करता है। जो व्यक्ति अपने आपको भय से ऊपर उठा लेता है, वह अपने आपको संसार के डर से दूर कर लेता है। भय पर विजय प्राप्त करना प्रतिदिन की साधना से ही संभव है। जिसने भय पर विजय प्राप्त कर ली, उसने सारी दुनिया पर विजय प्राप्त कर ली। अगर हम आत्मा के अनुभव का पुरुषार्थ करें तो सुख को प्राप्त करेंगे। आत्मा का नाश होने वाला नहीं है। दुनिया की बातों में अपने आपको उलझाए रखेंगे तो भयभीत और अशांत ही रहेंगे।"**

श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने आत्मकल्याण हेतु पुण्यवानी करने का मार्गदर्शन दिया। श्री मधुर मुनि जी म.सा. बच्चों को सोते-उठते नवकार मंत्र गिनने एवं साधु-साध्वी जी के दर्शन होने पर **'मत्थएण वंदामि'** के साथ वंदना करने की प्रेरणा दी। संघ मंत्री ने तप-त्याग से जुड़ने की अपील की। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

संथारा साधिका साध्वी श्री चंदनबाला जी म.सा. को भावांजलि

फूल के मुरझाने के बाद भी खुशबू शेष रह जाती है।
व्यक्ति के चले जाने के बाद भी स्मृतियाँ शेष रह जाती हैं।।

26 फरवरी 2025, कांकरिया भवन, नोखा। प्रात:काल मंगलमय प्रार्थना में *'साता कीजो जी'* एवं *'माँ गवरा का प्यारा, पिता नेमी का दुलारा'* गीतों के साथ प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। इंदौर में साध्वी श्री चंदनबाला जी म.सा. के संथारापूर्वक पंडितमरण पर स्मृतिसभा का आयोजन किया गया। इस सभा में दयानिधान, कृपानिधान, परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''साध्वी श्री चंदनबाला जी म.सा. की संसारपक्षीय माताजी की प्रेरणा प्रतीक रही, जिसके कारण आपके संपूर्ण परिवार में दीक्षा का भाव जगा। उनके परिवार से पाँच दीक्षाएँ हुईं। जन्म का महोत्सव पूरे परिवार वाले मनाते हैं, लेकिन मृत्यु का महोत्सव अपने भीतर प्रकट होता है। जो मृत्यु को साध लेता है उसका मरण महोत्सव हो जाता है। होश-हवास में संथारा लिया जाता है। मृत्यु अपने हाथ की बात है। सही जीवन जीएँगे तो अंतिम समय में अपनी मृत्यु को सजाना आसान हो जाएगा। कुछ विरल आत्माएँ ही बोध को प्राप्त करती हैं। महासती जी का प्रसंग हमारे लिए प्रेरणा का प्रसंग है। उनसे प्रेरणा लेकर अपने आपको धर्म आराधना में लगाना है। अंतिम समय में संथारा स्वीकार करके पंडितमरण को स्वीकार करना है। इस प्रकार की भावना व लक्ष्य हमारे जीवन को आगे बढ़ाने वाले बनेंगे।''**

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जो व्यक्ति आत्मा को जान लेता है, वह सबको जान लेता है। महासती श्री चंदनबाला जी म.सा. ने अपने तीनों मनोरथ पूर्ण कर जीवन सफल बना लिया। सभी जीवों के साथ हमारा मैत्रीभाव, क्षमाभाव एवं शुद्धभाव होना चाहिए।

साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. ने संथारा साधिका जी के दिव्यगुणों पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि विरल आत्मा ही पंडितमरण को प्राप्त कर सकती हैं। साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा. ने सुंदर भाव गीतिका प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि साध्वी श्री चंदनबाला जी ने स्व-पर कल्याण की साधना में अपने जीवन को निर्मल बना लिया। संघ मंत्री व महेश नाहटा ने संथारा साधिका जी का आत्मिक परिचय देते हुए इसे अपूरणीय क्षति बताया। अंत में चार-चार लोगस्स का ध्यान कर भावपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। इस अवसर पर अनेक स्थानों के भाई-बहन उपस्थित थे।

सामूहिक एकासना में 500 से अधिक एकासन हुए। पक्खी प्रतिक्रमण करने का कई भाई-बहनों ने प्रत्याख्यान लिया। बीकानेर महावीर जयंती समिति द्वारा श्रीचरणों में विनती प्रस्तुत की गई। संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री सहित सैकड़ों श्रद्धालुजनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

शासन दीपक श्री विनय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 का जैन जवाहर भवन से समता कॉलोनी की ओर विहार हुआ।

क्षण मात्र का भी प्रमाद न करें

27 फरवरी 2025, कांकरिया चौक, नोखा। आनंद एवं भक्ति से ओत-प्रोत प्रार्थना में *'चरणों में है वंदन हमारा, गुरु राम स्वीकारो'* भजन के मधुर संगान के साथ भक्ति आराधना की गई। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता, परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि

''अनंतकाल से जन्म-मरण की प्रक्रिया चल रही है। अब अपनी चेतना को जगाने का लक्ष्य बनाकर उसके लिए प्रबल पुरुषार्थ करने की जरूरत है। मनुष्य जीवन अपने आप में सुंदर अवसर है। इसमें जरा भी प्रमाद न करें। आत्मा के प्रमाद का विस्मरण कर अपने आपका समीक्षण करें कि हम कौनसी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। संसार का मार्ग प्रमाद का, राग-द्वेष का मार्ग है। मोक्ष का मार्ग वीतरागता का मार्ग है। राग-द्वेष से रहित होना ही वीतरागता है। अभी तक जितने भी जन्म बीते हैं, सारे प्रमाद में बीते हैं। अब हमें क्षण मात्र का भी प्रमाद नहीं करना है। शक्ति का सही उपयोग करें। प्राणभूत जीव, सत्त्व, सब जीवों की रक्षा करने का लक्ष्य रखें। मुझसे किसी भी जीव की विराधना न हो। पहले व्रत में जान-बूझकर किसी जीव को नहीं मारना, दया, करुणा, भावना को निरंतर आगे बढ़ाना है।''

श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि लाभ-अलाभ हो, सुख-दु:ख हो, निंदा-प्रशंसा हो, अपने आपको समभाव में रखें। घर-परिवार, समाज में अशांति फैलाने का कोई कार्य न करें। धर्मसंघ की सेवा निष्काम भाव से करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *'तेरी साधना को झुकती मेरी आत्मा'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। तपस्विनी **हेमलता जी बाँठिया** (नोखा मंडी) के **62 उपवास** का पारणा सानंद संपन्न हुआ।

श्री आदर्श जैन विद्या निकेतन, नोखा में श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने व्यसन, फैशन, टीवी, मोबाइल आदि से बचने की प्रेरणा दी। विद्यार्थियों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिए। संघ के राष्ट्रीय महामंत्री, शिखर सदस्य सहित अनेकानेक क्षेत्रों से पधारे गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। सामूहिक संवर दिवस में बढ़-चढ़कर लोगों ने भाग लिया।

गुरु आज्ञा की करें आराधना

28 फरवरी 2025, कांकरिया भवन, नोखा। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना पश्चात् आयोजित धर्मसभा में श्री संजय मुनि जी म.सा. ने *'अहो राम गुरु थे आओ नी, म्हारी सभा में रंग बरसाओ नी'* गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि गुरु-शिष्य का संबंध मोक्ष तक पहुँचाता है। जो गुरु की आज्ञा माने, वह विनीत शिष्य है। गुरुदेव हमें रोशनी दिखाते हैं। गुरु का प्रत्येक वाक्य शिष्य के लिए हितकारी है। आयंबिल की लड़ियाँ निरंतर चलाने का लक्ष्य रखें। गुरु की आशातना करने वाले को मोक्ष नहीं मिल सकता। ऐसा कोई भी कार्य न करें, जिससे गुरु के चित्त की प्रसन्नता में कोई आँच आए। गुरु आज्ञा की आराधना ही सर्वोपरि है।

श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने सभा को संबोधित करते हुए फरमाया कि धर्म का संबंध धन से नहीं है। पुण्यवानी से ही सुख मिलता है। मोहवृद्धि होती है तो दु:ख बढ़ता है। सम्यक् दृष्टिकोण से व्यक्ति को प्रतिकूलता में भी आनंद आता है।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवृंद सभा में उपस्थित थे। आचार्य भगवन् ने आत्मोत्थान हेतु मंगलपाठ प्रदान किया। कई भाई-बहनों ने माह में एक दिन मोबाइल का त्याग करने का प्रत्याख्यान लिया। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि ठाणा-4 का गुरुचरणों में पधारना हुआ।

नोखा नगरी में चातुर्मास जैसा ठाट लग गया। महापुरुषों का जोरावरपुरा के बाद **फाल्गुनी चातुर्मासिक पर्व** हेतु **नोखागाँव**, **महावीर जयंती प्रसंग** हेतु **उदयरामसर**, **जैन भागवती दीक्षा प्रसंग** हेतु **गंगाशहर-भीनासर** एवं **अभिमोक्षम् शिविर** हेतु **बीकानेर** पधारना संभावित है। मारवाड़ क्षेत्र का कण-कण धर्म एवं आचार्य श्री रामेश के रंग में रँगा हुआ प्रतीत हो रहा है। इन दिवसों में दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं जिज्ञासा-समाधान कार्यक्रमों का क्रम जारी रहा।

तपस्या सूची

साधु-साध्वी वर्ग

श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. – तेला तप

साध्वी श्री सुसौम्य श्री जी म.सा. – तेला तप

साध्वी श्री प्रणतप्रज्ञा श्री जी म.सा. – तेला तप

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	वीर पिता नंदकिशोर जी-ममता देवी देशवाल-बंगईगाँव, अशोक जी-निर्मला जी बैद-नोखा, कमल जी-लीला देवी चोरड़िया-नोखा, रूपचंद जी-शारदा देवी भंडारी-जोधपुर, संतोष जी सांड-नोखा, नीलमणि जी बोथरा-सुमेरपुर, वीर पिता दिलीप जी-कविता जी चोरड़िया-बालाघाट, कमलकिशोर जी-शकुंतला देवी बोथरा-दिल्ली, कोमल जी-कंचन जी आँचलिया-बेगूँ, प्रकाश जी-रचना जी आँचलिया-बेगूँ, अशोक जी-ममता जी आँचलिया-बेगूँ, मेघराज जी राँका-नोखा मंडी, तेजमल जी छाजेड़-रासीसर, कमला देवी दुगड़-गुड़ा, लालाराम जी जाट-सूरपुरा, करणीदान जी-शशिकला जी भंसाली, अशोक जी-उर्मिला जी सेठिया-तेजपुर, महेंद्र जी-संगीता जी संखलेचा-नोखा मंडी, सूरजमल जी डागा-गंगाशहर, अशोक जी भंसाली-गंगाशहर, गणेशमल जी डागा-नोखा
उपवास	62 - हेमलता जी बाँठिया-नोखा मंडी
	31 - सुंदर बाई संचेती
	20 - प्रेरणा जी संचेती (गतिमान)
	11 - निहारिका जी सामसुखा
गाथा का स्वाध्याय	**वर्ष में एक लाख** - लीला देवी भूरा-देशनोक, अंजना देवी पोखरना-बेगूँ
पक्की नवकारसी	**आजीवन** - पुष्पा जी सुराणा-इंदौर

-महेश नाहटा

पक्खी की टीप संबंधी भूल सुधार

श्रमणोपासक के **जनवरी 2025 समाचार अंक** के पृष्ठ संख्या 37 पक्खी की टीप में प्रकाशित अस्वाध्याय संबंधी दिवस के बिंदु संख्या 2 को इस प्रकार पढ़ने का कष्ट करें-

"कार्तिक सुदी 2, गुरुवार, दिनांक 23-10-25 को सूर्य के साथ स्वाति नक्षत्र का योग हो रहा है। उसके बाद मेघगर्जना एवं विद्युत् संबंधी अस्वाध्यायिक पुनः चालू हो जाएगी।" भूल के लिए खेद हैं।

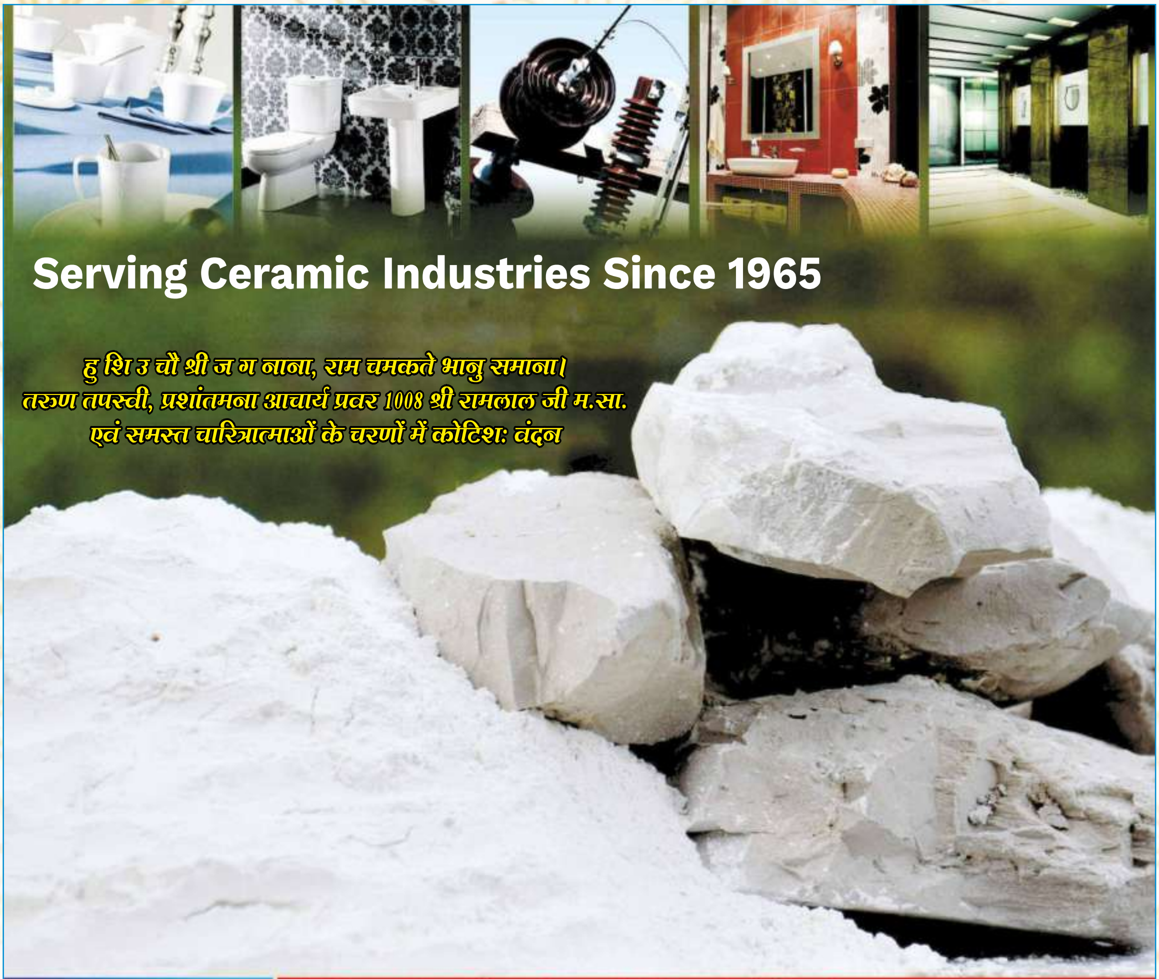

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

YOUR DREAM HOME, A NEW LIFE FOR MANY.

90% OF PROFIT GOES TO CHARITY.

PRESENTING
SIPANI CITY
A 70 ACRE TOWNSHIP - MADAPPANAHALLI VILLAGE, ANEKAL TALUK, BENGALURU.

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

70 ACRES OF EVERYTHING YOU NEED - HOMES, HEALTHCARE, EDUCATION & MORE!

1 CLUSTER - 1 HIGH RISE APARTMENT
Land area -10 acres 31 guntas

2 CLUSTER - 2 HIGH RISE APARTMENT
Land area 14 acres 30 guntas

3 CLUSTER - 3 HIGH RISE APARTMENT
Land area 5 acres 10 guntas

4 CLUSTER - 4 HIGH RISE APARTMENT
Land area 10 acres 12.2 guntas

5 CLUSTER - 5 HIGH RISE APARTMENT
Land area 16 acres 14.37 guntas

6 06 - EWS HOUSING
Land area 2 acres 4.77 guntas

7 COMMERCIAL / OFFICE
Land area 6 acres 17.63 guntas

8 SCHOOL - IN CA SITE OF CLUSTERS 4, 5 & 6
Land area 1 acres 21.20 guntas

9 PLAYSCHOOL - IN CA SITE OF CLUSTERS 1
Land area 0.54 acres 21.55 guntas

10 HOSPITAL - IN CA SITE OF LAND CLUSTERS 2 & 3
Land area 1 acres

Sipani City - A Township Promoted by Sipani Properties

"An Ode of Humanity..."

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/-	(15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/-	(10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में) 3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No.	:	31264126681
IFSC Code	:	SBIN0003401
Branch	:	G.S. ROAD, Bikaner
Mob.	:	7073311108
E-mail	:	accounts@sadhumargi.com

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	8955682153	news@sadhumargi.com
साहित्य	8209090748	sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	6375633109	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	7073238777	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	7231033008	anjali@sadhumargi.com
विहार	8505053113	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	9982990507	pathshala@sadhumargi.com
शिविर	7231833008	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	6265311663	globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ	9602026899	
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ	7231933008	
संघ हेल्पलाइन (WhatsApp only)	8535858853	

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।
कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना
जय महावीर
जय गुरु राम

YOUR TRUST
RAKSHA® PIPES
OUR GUARANTEE

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
SINCE 1977

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FIRST IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिश: वंदन!

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES
No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

RAKSHA FLO
P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond® Duroflex
Diamond® DUROLON
Now with new M.R.O. Technology Resists high Impact
LEAK PROOF
NSF/ANSI/CAN 61 IAPMO
IS 15778 : 2007 ISI CM/L NO : 2526149
ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE
cftri CERTIFIED
UV STABILIZED
LUCALOR FRANCE

www.shandgroup.com
रक्षा — जीवन भर की सुरक्षा
www.rakshapipes.com

@absjainsangh
www.facebook.com/HOSadhumargi

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24,650

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261